

धोत्रद युद्धशानस्त्रिजी प्रथमाला प्रेयाक ५७-५८ परमपेडित भी देखचद्रजीकृत

# आगुमसारोद्धार.

्रतथा

अध्यात्मगीता.

कुनरिनजयनी (अमीकुनर) कृत टवासह

शा छानकाल लक्ष्मीबद-यहुना
शा प्रेमबद दल्सलाइ-पादराना
एमनी द्रव्य स्हायथी
छपाबी प्रसिद्ध करनार
श्री अध्यात्महानपसारक महळ बक्तील होमबद-पादरा १९७८ सन १९२२ वकील मोहनलाल हीमचद सु पारत ( ग्रनतात )

पुस्तक मळवानुं देवार्ष् --

घडोदरा-निवाद्शमां सहाणामित्र रहेन प्रवनी विरत्नम द भागाराम टजरे प्रशासको माने ता २६-५-२६ ना रोम छारी प्रविद्य क्षे

## ं प्रस्तावना.

अभ्यात्मज्ञानरसीक द्रव्यात्ययोगना समर्थ ज्ञाता श्रीपद् टेक्चद्रजी महाराज्युं नाप भाग्येज कोइ जैनयी अजाण्यु हशे, आगम ज्ञाननी कुचीरण आगमसार नामनी ग्रय तेओशीए सक्त १७७६ ना फागण मासमा मोटाकीट— (मरोट—मां चोमास्र रहीने बनावेल है आ

ग्रथनी उत्तमता प्रथ पोतेन सिद्ध करे छै तैनी मसशा करवी ते सीनाने गील्ट करवा जेउ छै जे प्रथ वाचवाधी जणाह आरशे आ प्रथ अभ्यात्महानरसिक श्रीमद् युद्धिसानर सुरिजी महाराजना सदुषदेश्वयी बहु तालुकै पादराना

मा छगनलाल छक्ष्मीचद् ता पाद्राना द्या

छपाबी तेनी १०००) नकल भेट तरीके आणी इति तमाप नकल सभी जनाधी अने तेनी घर्णा मामणी चाजु रहेबाधी उक्त सूरिमी महाराजना सद्पदेशधी तेनी आ धीली आहती पोतानाम सर्वे छपाचना सहर बने ग्रहस्थीनी

प्रेमचद दलमुखभाइए सं १९६७ नी सालमां

बीजी आहुती बहार पादी छै ते मारे ते पने प्रहर्स्थाने धन्यवाद परे छै आ प्रथ पकरण स्ताकर पहेला धागमा छपायलो छै तेवां तथा पहेलो आहुतीमा पतिमापुना तथा गुणस्यानक विचार नामना

अगत्यना विषयो छपायला नहोता पण ते पछी थीमद देवचद्रजी महाराजना बनावेला

इन्जा थवाची महळे आ अर्ता उपयोगी ध्रयनी

द्धरतना श्री मोहनलालजी महाराजना भंडार-माथी वे पतो च ४०९-५६३ नी मळी तथा प० श्री लाभविजयजी पासेथी एक पत तेमज पादराना भडारमाथी एक पत सळी ते चारे

तमाम ग्रयो छपाववानी महती करता आगम्-सार ग्रथनी घणी मतो भेगी करी जेगा

चह पतो प्रतिमापुनानो तथा पृष्ठ २०४ थी भह यतो गुणस्थानक विचार ए बने विषयो दात्तल हता तेथी आ ग्रंथमां ते जे ते स्थळे दात्तल करी लेवामा आयेला छे पादराना

मतोमा आ प्रथमा प्रष्ट ५५ मी पहेली लीटीधी

भडारनी प्रत तथा प छाभविजवजी वाळी

मत तैओश्रीना पादराना सग्रहमां मोजुद छै हारुनी मोघनारीना लीघे आ ग्रंथनी विश्वेष लाभ लेवाय तैरला माटे महळना नियम ग्रुजन पहत्त्वर्थी ओछी मात्र र ०-६ ० कियत राज्यवामां आवी छे आत्मार्थी जनी तेनो सारी रीते लाम छेशे पनी आजा है आगवसारनी पहेली आहतीयां श्रीमद देवचद्रजी महाराजनी बनावेळ अध्यान्मगीता प्रथ दवा सह दालल क्यों हती पण हालमा सदर प्रथ खपर श्री इचरविजयजी अपर नाप अमीकवरजी माहाराजनी बनायेली दबी मर्जा आववायी ने ते विस्तारपुर्वक उत्तम रीते लखायली हीबाधी तेटबो आ प्रथमी दाखल करवा अमारा परीपकारी गुरु महाराज श्रीमङ सरिजी महाराजे मेरणा करवाथी

पहतर किंपत ०-१०-० आरेल छता तेनी

ते दाखल करेल है ने ते एक क्लत अवस्य वाची जवा आग्रहपुर्वक भलामण छे आ ग्रंथ छपानवामां उमेटाना शेड फुलभाइ मानभाइ जेओ आत्महाननी रुची

वाळा छे तेओए र १००) आपेला छे तेमनो

तेमज गाम उछदनी बाइ माणेक ते जा नेमचद मोतीचदनी दीकरीए रू ५०) अपेला है तेमनी आभार मानवामां आने है छैबटे आ उपयोगी ग्रथ बहार पाटवा

माटे मेरणा करनार परम पुज्य गुरु श्री युद्धिसागरसूरिजी पाहाराजनो उपकार मानी

आ प्रस्तावना पूर्ण करवामा आवे छे

पादरा-अक्षय ] वकील मोहनलाल

रुतिया १९७८ 🕽 🔊 सचद



33.50.00				
δā	र्खीटी अशुद्ध	शुद्ध		
16	१३ गुण अनता छे	गुण एक छे गुण अनता छे		
18	५ पर्याय छे	पर्याय छै ते अनेक-		
22	o ਤਾਰੇ	पणु छे		

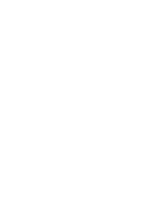
शद्धिपत्रक.

२३ ९ नधी नधी, एमन आ-काशास्तिकायने विषे आकाशनान म्ब द्र-स्यादिक चार छे

व्यादिक चार छे पण बीझाया पाच द्रव्यना नधी

खसेत्र

३० १४ द्रव्यक्षेत्र



रर		
९१	५ एग	एम
९७	१४ (छेडे उमेर्यु)	एम नयचकमारमा
		क्ह्य छे
९८	११ नैगर्म	शुद्ध नैगमे
०३	१० निर्गुणगो	निर्गुणनो
१०६	२ माटे	माटे
११०	२ परद्रव्यना	परद्रव्यना
185	११ युगगत	गुग9त्
११५	१२ रह्यों छे	ग्ह्यो छे तथा अव
		र्मास्तिकायनो एक
		प्रदेश रह्यो छ
११५	१४ कोइ द्रज्य	कोइ द्रव्य कोइ द्रव्य
११६	७ धर्मास्किय	धर्मास्तिकाय
१२४	९ सागरोपमना	सागरोपमनु छे तेना

रेश्च ११ शोपान रेश्च व उसमा रेश्च ८ तना रेश्च ७ मास्मिन रेश्च १९ व्हर्स २११ ८ एवस ११३ १३ तस्मो २११ १४ अच्या २९४ ७ मन्य २६१ ७ मृण	शेषांने उसमां अने ते तथा चादित्र ते मोसस ९ मणिविसय ९ वे एहनी तेहनो अध्यापक स्कथ
---	---

શ્રી અધ્યાત્મનાનપ્રસારક મહળ તરકથી મીમદ છૂહિસાગરમુરિજી મૃત્યમાળામા પ્રગઢ શયેલા મૃત્યા

કિ મત 31 4() 40 ૧ ક્દ લખન સગ્રહ ભાગ ૧લે৷ ૨૦૦ 0-6-0 × ૧ અધ્યાતમ વ્યાખ્યાનમાળા 208 0-8-0

× ૧૧ ભાજનસાગઢ ભાગ ૨ જો ૩૩ ૬ 0 (-0 × 8 લજનસગઢ લાગ a જી ૨૧૫ 0 6-0

× ૪ સમાધિ શતક્રમ 840 0--2--× પ અનુલાવ પશ્ચિશી. 0-60 286

૧ માત્મપ્રદીપ 9- ( 9 ¥83 × 🗷 લાજનસંગદ ભાગ ૪ થેં। ૩૦૮ 0 6-0 ( પરમાત્મદ્રશ્રીન 835

0 12 0 × ૯ પરમાત્મજયોતિ 400 0 12 0

× १० तत्त्रिश 230 0-X 3

× 11 શુષાનુરાગ (આદૃત્તિ બીછ) ૨૪ 0-1-0

× 1ર-13 લાજનમગ્રહ ભાગ પંત્રે

તથા જ્ઞાનદીષિત

₹ × ૧૪ લી ર્યવ અનુ વિમાન (આ બીજી) દે જે જે જે × १५ मध्यत्म व्यवसम्बद्धः १६० ० १०० × १६ अवनेत्र 232 0-1-× १७ तरच्यानहीसिंध १२४ ० - १०० ૧૯ મધુનીસ મહ હાર ૧ ૧૧૨ ૦૦૦૩ ૦ × १८--१० शावस्थर्यस्परः। भाग १--२ ( आरित त्रीक्) ४०-४०-१-० × ૨૧ ભાજન પદ સમેદ ભાગ દૃશે ૨૦૮ ૦ ૧૨ ૦ રક ચાંગદોષક 406 . 48. २४ केन जिलिशसिक रासभावा ४०८ १-०-० 396 . 38-0 × > ૫ મ્યાન-દધન પદસગ્રે કબાવાર સહિત × રક અખ્યામ શાન્તિ (આવૃત્તિ મીછ) કેટર o > o <06 5-cmo २७ क्षञ्चल अह साम ७ मे। १५६०८० × ૨૮ જેનધમની પ્રાચીન અને અનો ચીન સ્થિન W\$ 02 0

x રઢ કુમાગ્યાય ચરિત્ર (હિંગ) ૨૮૭ ૦ ૬૦ ટું. શ્રી ઢે૪ સુખસાગર ગુરૂગીલા ૩૦૦ ૯૪ ૦ वप पड्डल विवार 2 X . . X . × ३६ विलपुर वतात 60 0-Y 0 ૩૭ સાભરમતી કાવ્ય 164 0 10 ३८ प्रतिहा पानन 220 040 ૩૯-૪૦-૪૧ જૈનગ≃૭૫ત પ્રનધ सध्यमति कैनगीता 900 ४१ केन धातप्रतिमा क्षेत्र सम्ब 900 ¥8 โมสมิสโ 0 / 0 × ૪૪ શિલ્યાપનિષદ 0 2 0 े ४५ कैने।परिपह X/ 0-2 -0 ४६-४७ धार्मिक भद्यसञ्च तथा पत्र સદ્વારેશ ભાગ ૧ લે 6198 2-0 0 ४८ भग्न समें भा ८ ५०४ ३०० ૪૯ શ્રીમદ દેવચદ સા ૧ ૧૦૨૮ **૨૦**૦ ૫૦ કર્મચાગ 1012 3 0 0

```
भी काल्यात हुन न
    भर भारत सहसार शिक्षण
                             212 -- 200
    ५३ श्रीभद्देवसद्भार
                            116 0 100
   पुष्ट अवसी अध्यक्ष प्रम
                           1200 360
   spiking the Ak Ak
                           140 ...
   ४६ अभीत यह ती समह
                            <00 200
५७-५/ व्यागससार व्यने अध्यात्म
                           160 0 20
× મ્માનીસાની વાળા ગ્રાથા સીલકમા નથી
                           No o- 1-0
विपरना पुरुवके। अभवादा देकालु
            વકીય <sup>ધાહનયાલ</sup> હીમયદ
                     ( शक्रशत ) ४ हरा
```

٠

। श्रीसर्वज्ञाय नमः ॥

॥ अय ॥

# ॥ श्रीमत्पंडितश्रीदेवचंद्रजीकृत ॥

### आगमसार.

श्रीज अनिवृत्ति करण.

भन्पजीवने मितिगेत्रा निमित्ते मोक्ष-मार्गनी वचिनिका फडे छे तिहा प्रथम जीत अनादिकालने मिन्यात्वी हतो ते फाललिन्य पार्मोने त्रण करण करे छे तेना नाम-पहेल प्रधागद्वत्ति करण, बीजु अपूर्व करण, अने

### आगमसार तेमां पहेल ययापरित परण कहे हैं।

दाकोडी राखे, अने मोहनीय कर्मनी सिर् फोडाकोटी सागगेपमनी स्थिति छे. नेमा अनणोतेर खपावे, याशी एक कोडाको क्षेप राखे । धर्मा रीते एका आयुक्तमं वर्जा यामी साते कर्मनी एकपल्योपमना असर्य भागेन्यून वक कोडाकोडी सागरीपम

शानारमणीय, २ दर्शनावरणीय. ३ नेदर्नीय, s अतराय, प चार पर्मनी त्रीस फोडाकोडी

रानि, तथा ? नामकर्भ, ? गाजकर्म, ए कर्मनी रीस कीडाकोडी सागरीवमनी स्थि छे, नेमाथी ओगणीस रायाने अने एक क

फोडाकोटी खपारे अने एर कोडाकोडी बार

सागरोपमनी स्थिति छे, तेमाधी ओगणतीस

स्थिति राखे, एवो ने वराग्यरूप उटासी परिणाम तेने यथाप्रहत्तिकरण कहिये ए पहेलु करण, सर्वसङ्गी पर्चेद्वीजीव अनन्तीवार करे छे हवे बीज अपूर्वकरण कहे है ते एक कोडाकोडी सागरोपमनी स्थितिमां हैथी एक प्रहर्त्ते अने अनादि मिथ्यात्व ने अनतानुप-**घीआनी चोकडी ते रापाबवाने अहान हेप** ते डांडबु, अने ज्ञान उपादेय एटले आदर्बु, ए बाँडारूप अपूर्व कहेता पहेला त्रयारे न आन्यो पद्मो जे परिणाम ते अपूर्व करण कहीये, ए तील करण ते समकितयोग्य जीवने पाय हो त्रीज अनिष्टति करण कहे छे ते-सुर्त्तेरूप स्थिति खपानाने निर्मेछ श्रुड

भागममार

## किन पामे मिथ्यात्वनी चढव मटे त्यारे जीव

उपश्रम समिकित पाये, चनी ज परिणाम ते अनिष्टति करण कहिये ए करण की पार्थी गठीमेट ययो कहीचे उक्तंत्र आवश्यक्ति धुक्ती " जा गठी ता पदम । गठीसमय छेशी भवेत्रीओ ॥ अनिअहिफरण पुण । समसपुँ-रक्लडेजीवे ॥ १ ॥ फसर देसँ दहुँलिय च । विज्ञाह बणदेंको पष्प इय ॥ विच्छत्तस्सागुद्रस्। उवसर्गसम्म लहह जीवो ॥ २ ॥ एम मिध्या-खनी खदय मट्यापी जीव समक्ति पाने, ते

समिवितनी सदहणाना वे भेद छे, एक ध्य

बहार समकित सहहणा, बीजी निश्चय सम सद्हणा

देवशी-रिहत देवाधिदेव, अने गुर

मुसापु ने मुंबो अर्घ कहे ते; तथा प्रमें केत-र्रोनो परस्यों जे आगममां सातनय नथा एक मत्थस पीजु पगेश ए ये प्रमाण अने चार निसेष करी सदहे, प्रती नदहणा ते व्यवहार समित कहिये ए पुण्यनु कारण तथा अर्थ प्रगट करबानु कारण हो एवी गिच प्रानिना पणःचणा गीयोने उपजे.

तीञ्च निथयसमिकत ते आबी गीते जे निथय देन ते आपणोज आत्मा जीन निष्यन्त्र स्वर्धी सिद्ध ते समुद्रनयनीमचामनेपता, तथा निथयमुमतेपण आपणो जात्मान वस्त्रस्यणो, भने निथयमं ते आपणा जीनने स्वमावन ने पत्री सहरणा ते योशन जारण उन्हमके विस्तर्य और सर्वा सहरणा ते योशन जारण उन्हमके विस्तर्य और प्राप्त कारण उन्हमके विस्तर्य और प्राप्त विस्तर्य स्वर्ध कारण जा स्वर्य कारण जा स्वर्ध का

६ जायमसार एवी शुद्ध सददणा ने निश्चयसमिकत हो पाननु स्वरूप कहे छे ने झानना है भेड छे पक न्यवहारतान, बीजु निश्चयहारी,

तिमां अन्यमितना सर्वज्ञास्त्र आणवा अयवा जैतात्त्वस वे स्वा ने एकाणितातुरोग रे हेतमान, वीजो चरणकरणातुरोग ते किया विधि, त्रीनो घर्षकरातुरोग ए त्रण अतुर्यो गत जाणशाष्ट्र ते सर्व व्यवहारतान है

अथवा अन्तरचपमोगविना ने सूत्रना अ करवा ते पण व्यवहारहान कहियें इवे निवयहान वे छ इव्य सथा तैना गुण अने प्रपाद सर्तने जाणे तेमा गुण अनीव

हच निर्वयक्षान व छ इन्य तथा तना गुण अने पपाध सर्वन जाणे तेमा पाच अजीव छे ते हेय-कहेतां छाटवायोग्य जाणी अने एक जीवडन्य ते निर्व्यवेकरी



e, अचेतन, नाजी अिच, चौबो गतिसहायगुण र्धामा अवमंहितरायना पण चार गुण है एक अरुपी, यीजी अधेवन जीजी अक्रिय,

अने चोचो स्थितिसहायगुण जीजा आजा-

शास्तिकायद्रव्या। चार गुण छे एक अरपी, धीतो अवतन, जीतो अजिय, चोधो अवगा इना वानगण हा काल्ट्रयमा चार गुण

कह छे एक अरपी, पीत्रो अचेतन, भीत्रो अकिय, चोबो नगापुराणवर्षनालक्षण हवे

प्रदूष्णवास्थान भार गुण करे है पर स्पा बीही अंग्तन, तीशी सक्षिय चोथा मित्रण

वितरणरप प्रधानलन सुषा हव जीवहरयना

१२ गुण वह छे पर अननज्ञान, रीजी

. ज्यान प्रांती अनत्त्वचारित, चौथी

आगमसार ९ अनतत्रीर्घ, ए छ द्रव्यना ग्रुण कथा ते नित्य-पुत्र छे

हवे उ द्रव्यना पर्याय कहे है अमस्ति-कायमा बार पर्याय छे एक खब, तीनो देश,

त्रीजो प्रदेश, चोथो अगुरुक्त अवर्मास्ति-रूपमा चार प्याय एक स्त्य, बीजो देश, त्रीजो प्रदेश, चोथो अगुरुक्तुः शुद्रस्टटच्या चार पर्याय एक प्रण, पोजो गर, गीजो रस, चोयों स्पर्श अगुरुक्त्रभुमहितः तथा आकाशा-स्तिकायना चार पूर्वाय एक स्वर, पीजो

देश, जीजो प्रदेश, चोथो अग्रुरलपु; काल-न्यमा चार पर्याय एक जतीन काल. जीजो जनागन काल, त्रीजो वर्चमान काल, चोथो अग्रुर्रलपु; अने जीज हुच्यना चार पर्याय

# भागमसार

एक अन्यावाध, तीजो अनवगाह, त्रीजे अमृतिक, चोयो अगुरुलघ ए उ द्रव्यन पर्याय यथा

35

इवे छ इच्यना गुणवर्षावनु साप्तर्म्पप फारे छे अगुर ल्घुपर्याय सर्वद्रव्यमा सरीखी छै अने अस्पीयुण पाच उच्चमा छै एक

पुट्रखद्रव्यमा नथी, नथा अचेतनग्रुण पाँच द्रव्यमा छ एक जीवहव्यमा नथी. अने स-कियगुण जीव तथा गुड़ल ए वे द्रव्यमाँ छे

बाकी चार द्रायमां नथी. तथा चलणसहाय-गुण एक वर्मास्तिकायमा छे, मीजा पाच इच्पमां नथी, बन्धी स्थिरसहायगुण एक अधर्मास्तिकापमा छे बीजा पाच इव्यया नथी,

अवगाहनाग्रण वे एक आकागदब्यमां

आगंत्रसार देश है, बीजा पाच इन्यमा नशी; अने वर्तनाराण ते एक कालद्रन्यमान है, बीजा पाच द्रन्यमां नथी; तेमन मिलणविखरणगुण से पुरुलमां है, बीजा इन्यमा नथी तथा जान—चेतना गुण ते

एक जीव द्रव्यमा छे, पण बीजा इन्यमा नथी ए सृष्ट्युण कोइ इन्यना कोइ इन्यमा मिले नहीं एक घर्ष बीजो अपमें, त्रीजो आकाश, ए त्रण द्रव्यना त्रण गुण तथा चार पर्याय सरिखा छे अने त्रण गुण करी वो काळ द्रव्य

पण ए समान छे

इवे बली अग्यार वोले करी छ द्रव्यना गुण जाणपाने गाथा कहे छे परिणामी जीव शुचा, सपएसा एम वित्त किरिजाय। निश्च कारण कत्ता.मट्याय

## इपर अध्यवमे । १ ।

अर्थ-निययनयर्था जाप जापणा स्त्र भार 'उप दृष्य परिचार्या 'उ अने व्यवहारन यथी जीव दश पुरुष प व इच्य परिणामी छ त्या एक वर्ष, योगा नवषे, वीजो आसार

अने याथा काल प चार दृष्य अपरिणामी हैं सथा हर द्वयमा एक जीव द्वत ने जीन छै. बीता पान दृष्य अजीव के तथा स दृष्य

या एक प्रदल रापी के जाने पाच द्रवय अरुपी है हा हायमा पान हृदय समदेशा है, अने

एक फाल इ.च. नवदेशा छ तेमा एक उपा स्तिमात्र पानी अवसास्तिमाय ए प प्रवस् असंख्यात मटकी छे अने एक आसागद्रव्य

की छे जीन द्रव्य असरयात मदेशी

छे, पुरल्लपरमाणु \* अनतप्रदेशी छे, परमा-णुओ अनता हो एम पाच द्रव्य समदेशी छै अने छहो काल अमदेशी छे

छ द्रव्यमा एक धर्मास्तिकाय, बीजो अधर्मास्तिकाय, त्रीजो आकाशास्तिकाय ए प्रण ते एकेक इच्य छे, तथा एक जीव इच्य पीजो प्रहल द्रव्य श्रीजो कालद्रव्य ए त्रण अनेकअनेक छे, छ द्रव्यमा एक आकाशहब्य र्सन छे, अने बीजा पाच द्रव्य क्षेत्री छे: ं निश्रयनयथी छ द्रव्य पोतपोताना कार्ये सदा मन्तें छे माटे सिक्रय है; अने व्यवहारनयथी जीव अने प्रद्रल ए ने द्रव्य सक्तिय छे, तेमा पण पुद्रल सदा सिकय छे, अने जीव द्रव्य

पद्मलास्तिकायना स्कन्बो पर्यायो अनन्तप्रवेशी छे.

#### आगममार्

25

तो सतारी धड़ो सिक्रव छे, एण सिद्धअव-स्थार्व धड़ो सत्यारी व्रिया करवाने अकिय है, तथा बाडोना बार इन्य तो अकिय छे; निश्चपनपर्या छ इट्य नित्य छे छुब छे, अने

डरपाडच्यमें करी अनि यपणे पण छे तथा च्याहारमय नोष अने पुहल ए वे हृत्य अ-नित्स छे, पाक्षेता चार हत्य नित्स छे, ययि चरपाडच्यपुष्ठवपणे सर्व पदाथ परिणमे छे मोपण एर वर्षे, योजो अवस्, जीजो आकाम, चोषो पाल स्वार हरूप सहस अनुस्थित छे

छ उत्त्वमा वक जान इत्य नकारण छै अने पाच इत्य कारण छे केमक पाचे इत्य भोगमा जाने छे मांडे कारण बहिये.

ते माटे नित्य रहा



₹\$ कद्मी तथा घणी मतोमा तो सक्षपे पटर्छ छै

पाच दृश्य अकारण छे च पण बात घणीं रीते मलती छे माटे ने बहुद्धान कहे ते खर मारी बारणा ममाणे जीवद्रव्य कारण अने पाच द्रव्य अकारण एव समवे हे" निश्रं यनवर्धी छए इच्य कर्चा छे अने व्यवहारनर्थे एक जीवद्रव्य कर्जा छे शकी पाच द्रव्य अक्ता छे. स द्रव्यमां एक आराशद्रव्य सर्वेट्यापी छे, अने पाचद्रव्य लीव व्यापी के छण द्रव्य एक स्ट्रेशमा एक्टा रह्या छे पण एक बीजा साथे मन्त्री जाय नहीं ष छ द्रव्यनी विचार क्यो

ने छ द्रव्यमां एक जीव द्रव्य सारण छै.

ं पुक्रेका दृष्यमा एक नित्य, बीजो

अनित्य त्रीजी एक चोयो अनेक, पीचमी

सत्, उही असत्, सातमी वक्तव्य, आठमी अवक्तव्यं, ए आठ आठ पत कहे छे, धर्मास्तिकायना चार गुंण नित्य छे तथा पर्यायमा बर्मास्तिकायनो एक खब नित्य छे बाँकीना देश मदेश तथा अगुरुलघ पर्यापें अनित्वें छे अवर्मास्तिकायना चार गुण तथा एक लोकप्रमाण खध नित्य छे अने एक देश, वीनो भदेश, त्रीनो अगुर-लघ ए जण पर्याय अनित्य छे तथा आका-शास्त्रिकायना चार गुण तथा लोकालोकप-माणखध नित्य छे अने एक देश, बीजो मदेश, त्रीजो अगुरुलघु ए पर्याय अनित्य छे तथा । फालद्रव्यना चार ग्रणः 🗅

#### 25 आध्यम(र अने चार पर्याय अनित्य छै, पुद्रल द्रव्यना '

चार गुण नित्व अने चार पर्याय अनित्य छे जीवद्रव्यना चार गुण तथा प्रण वर्याय नित्य छे अने एक अगुरलघु पदाय अनित्य छे

प रीते नित्यानिन्यपक्ष कछो हवे एक अनेकपक्ष कहे छे एक धर्मा-स्तिमाय बीजो अवसोस्तिकाय ए वे इच्पनी

लोकालोकप्रयाणस्य एक हे अने गुण अ-नता छ प्याप अनता छे प्रदेशअनता छे

अनेक छे, काल इच्यनो वर्तनास्य गुण है, पर्याप अनता है, केमके समग्र

न्वत्र को ना का कमा गण व के अने गुण अ-नक छे परायजनता छे प्रनेश असन्त्याता छे. तेण करं। अनेक छे, आसाशहत्वानी अनता है अनीत कार्ड अनंतासमय गया

अने अनागतकाळे अनना समय आउग्ने तथा वर्त्तपानकाछे समय एक उँ माटे अनेक पप्त छे प्रहलद्रव्यना परमाणु अनवा छै ते एकेक परमाणुमा अनवागुण पर्याय है अने सर्व परमाणुमा छुटळपणु ने एकन छै माटे एक छे जीवद्वत्य अनना है परेका जीवमा भदेश असरयाना उत्तया गुण अनना है पर्याय अनता है ने अनेरपणु है पण जीदि-तन्यपणु सर्वजीवज् वक्समर्गर्गु उमाटे वक्पणु रेहहा शिष्य पुरे रेजे सर्व जीव **ए**क सरीखा है ना मायनाजीव सिट परमा<sup>नद</sup> मपी देखाय छै जन संसार्गजीय

पक्या दासी दसाय ३ अने ते सर्वे छुदा जुदा देखाय है ने केंस<sup>7</sup> नेहने गुरु उत्तर पहे है के निश्चपनये तो सर्व जीव, सिद्ध समान उ माटेज सर्व जीव वर्ष खपावीने सिद्ध थाय है तेपी सर्वे जीवनी सत्ता एक है फरिशिष्य प्रेंगे छे क जा सर्व जीव सिद्ध समान कही छा तो अभन्य जीव पण सिद्ध समान छे एम वेरप्र (वर्ष्ट्र) अने ते ती मोशे जता नथी, तहने ए उत्तर ने अभव्यमा परावर्त्ते वर्षे नथी तवी मिद्र थवा नथा माटे

तेनो एहबोज स्वधाव 3 ने मोहं जरूज नर्ध अने मन्यजीवमा परावर्च वर्ष छ महेर कारण सामग्री मिले पलटण पामे, गुणश्रीण चर्ड मोहा फर्री सिस्ट थाय पण जीवना सुरूर

**आगमसार** 

20

आठ फ्लक मदेश जे छे ते निश्चयनयथी भट्य तथा अभन्य सर्वना सिद्ध समान छे माटे सर्व जीउनी सत्ता एक सरीखी छे केमके ए आठ मदेशने विख्कुल कर्म लागता नथी ते " श्री भावाराम सबनी श्री सिलामाचार्य छत दी-काः छोकविजयाध्यने मथमोदेशके साख छे विशायी सविस्तरपणे जोड़ "

हमे सत् तथा असन् पक्ष कहे छे. ए छ इच्य ते स्वद्रव्य, स्मिन, स्वकाल, अने स्वभावपणे सत् एटले छता छे अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल तथा परभायपणे असत् एटले अछता छे तेनी रीत बताववाने अथे छए उच्यना द्रव्य क्षेत्र काल भाव कहिये छेंथे पर्मास्तिकायनो मृल्खुण चल्लुण सहाय-

## ٩ŧ

पणो ते स्वइब्य, अधर्मास्तिकायनी मूलगुण स्थिति सहायपणो ते स्वद्रव्य, आकाशास्ति फायनो मूल गुण अवगाइपणो ते स्वह्रव्य, बद्रव्यनी मूळ गुण वर्षनाळक्षणपणी ते

आगमसार

इच्य, तथा पुरुक्तो मुलगुण पुरणगलन-ते ते स्वद्रव्य अने जीनद्रव्यनी मूलगुण नारिक चेनना असणपणी ते स्वद्रव्य ए इच्यमी स्वद्रव्यपणी कवी

इवे स्वक्षत्र ते इव्यनो मदेशपणी छे ते

रानाडे छे तिहा एकधर्मास्तिकाय, बीजो नयमंस्तिराण ए वे द्रव्यनो स्वक्षेत्र असल्य

भदेश छ भने आसाशहष्यनो स्वक्षेत्र अनत

पदेश छे कालहब्पनी स्वसेत्र समय छे प्रह-

लद्रव्यनो सानेत्र एक परमाणु छे ते परमाणु

अनेता छ जीवद्रव्यनी स्वसंत्र एक जीवना असैरयाता प्रदेश छे इवे स्वकाल ते छण द्रव्यमा अग्रुवळघुः

हवे स्वकाल ते छण इन्यमा अग्रवलप्तु-नोज छे अने ए छ इन्यमा पोतपोताना गुण पर्याप ते सर्व इन्यनो स्वभाव जाणवो एटले

पर्मोहितकायमां पोतानाज द्रव्य क्षेत्र काल भाव छे पण घीजा पाच द्रव्यना नयी। तथा अप्रमाहितकाय द्रव्य मध्ये पण स्वद्रव्यादिक चार छे पण बीजा पांच द्रव्यना नथी काल

द्रव्यमा कालना द्रव्यादिक चार छे जीजापाच इव्यना नयी अने पुद्रलना द्रव्यादिक चार ते पुद्रलमान छे पण बीजा पाच इव्यना नयी १ या जीं महत्त्वमा स्वत्रव्यातिक चार ते जीजमा छे पण बीजा पाच तुव्यना नर्या

### ने इच्छ ते गुण पर्धापनन, इच्छ्यी अभिन्न पूर्याय होय के इच्छ कहियें नया स्टॉर्फनी

आरारवन्यणों ने क्षेत्र कहिये जन उत्पाद् व्ययनीयक्तेना ते काळ कहिये नया जिरोण ग्रुण परिणति स्त्रभार परिणति ययाय प्रश्नुण ते स्त्रभार कहिये व रीते छ ए द्रव्य म्त्रगुणे सत् छे जने पर शुणे असन् छे

ઝઇ

हतें वक्तस्य क्या अवक्तस्य पक्ष कहे हैं ए छ द्रव्यक्षी अनता सुणवर्षाय के बक्तस्य एटके पचने फहेंबा योग्य छे अमें अनता सुणयसाय के अबक्तस्य एरके वचने क्या

जाय नहीं एवा छे तिहा क्यारी भगवते समस्त भाव दीठा वेने अननमे भागे ने वक्तस्य एउटे कहेवा योग्य हता वे कहा। वर्डा तेनो अनतमो भाग श्रीगण पर स्वामा गुंध्यो तेना असर यातमे भागे हमणा आगम रह्या छे ए आउपस कवा

इहा १ भेद स्त्रभाव, र अभेदस्त्रभाव ३ भन्यस्यभाव ४ अभन्यस्वभाव ५ परम-स्वभाव ए पाच स्त्रभाव कहेवा तेमा द्रव्यना सर्व धर्मने पोतपोताना स्वस्वकार्यने करवे करी मेद स्वभाव छे अने अपस्थानपणे अभेद स्वमात्र छे अणपछटण स्वभावे अभव्य स्वभाव छे तथा प्रलटण स्वभावे भव्य स्वभाव के अने द्रव्यना सर्व धर्म ने निशेष धर्मने अ-हुयायीज परिणमे ते माटे हो परम स्वभाव फ़हियें ए सामान्य स्त्रभात जाणवा हने नित्य तथा अनित्य पश्ची चौभंगी

₹६

जापादी

जपनी ते कहे छे एक जेनी आदि नथी अने

**कामधमा**व

अत पण नवी ते अनादि अनत पहेली भागी

अने जेनी आदि नथी पण अत ठे ने अनादि सांत बीजो भागो तथा जेनी आदि पण उ अत परले हैरेडो पण है ते साहि सात त्रीजो भागो वली जेहने आदि है पण अन नथी ते साहि अनत नामे घोषो भागी

इवे ए चार भागा छ द्रव्यमा फलाबी देखाडे है जीव द्रव्यमा ज्ञानादिक गुण ते अनादि अनत है नित्य है, अने भव्य कीवने वर्म साथे सत्रत्र नथा संसारीपणानी आदि नधी पण सिद्ध याप तेवार अत जाव्यो तथी प अनादि सात मागो है, अने देवता तथा

भांगो है अने जे जीव कर्म खपानी मोक्ष गया तेनी सिद्धपणे आदि छै अने पाछो ससारमा कोइ काळे आवव नयी माटे अत नथी तेथी ए सादि अनत भांगो छे ए जीत द्रव्यमा चौभगी कही जीव द्रव्यना चार गुण अनादि अनत छै जीवने कर्म साथे सयोग ते अनादि सांत है फेमके केबारे पण कर्म छूटे है -े इवे धर्मास्तिकायमा चार गुण तथा ख-थपणो ते अनादि अनत है अने अनादि सात भागो नथी तथा १ देश २ प्रदेश ३ अगुरुलघु ए सादि सांत मागो छै तथा सिद्धना जीवमां वर्मास्तिकायना जे पटेश रहा।

छै ते मदेश आवयीने सादि अन्त भागो छै

### STREET, एवीन रित अपमहिनकायमा पण चौभैगी

36

जाणरी अने आकाश दृष्यमा गुण तथा म्बंध अनादि अनंत हे बीजी भौगी नधीं अने रै देश २ मदेश तथा ३ अगुरलंखु सादि स्रोत छे तथा सिंद्रना जीवनी साथ सर्वर्व ते साहि अर्नत है

पद्रल द्रव्यमां गुण अनादि अनत है जीव पुरुगलनी मंबन्य अभव्यन अनाहि अनत छै \* भेट्य जीवने जनादि सान है प्र-

ते स्थिति प्रमाणे रही खरे है बली नजा पत्राप छै माटे सादि अनेत भागो प्रदेखमा नधी \* एसतिवणे जाणगी-मा शब्दो जुनी प्रत्यो छे

हरूँना खा सर्व सादि सांत छे जे खप बा याँ

कालद्रव्यमा गुण चार अनादि अनत है, पर्यापमा अतीतकाल अनादि सात है अने वर्तमानकाल सादि सात है, अनापतकाल सादि अनत है प कालतु स्वस्प ते सई उपचारधी है ए रीते कालद्रव्यमा चौभगी कही

हंने इन्य क्षेत्र काल तथा भावमा चौ-भंगी के है जी दिइन्यमा स्वद्रन्यथी ज्ञाना दिक गुण ते अनादि अनतं ठेम्यसेन नीवनीं प्रदेश अर्सल्याता ठेते सादि मातं ठेतसोटकं एद्देर्वनाएणे फरे ठेते माटे अथवा अवमाहना माटे सादि सात ठे एण उत्तीपणे तो अनादि अनत ठे स्वकाल अगुरू लखने गुणे अनादि अनंत है अने अगुरू लखने गुणे उपनारे

आगमसार ₹৹ तथा विणक्षवो ते सादि सांत छ तथा स्वभाव

छे अने भेदा तरे अग्रुस्लघु तेसादि सांत छे.

ग्रण ते अनादि अनत छे अने खरोत्र अस-र्यात परेश छोक प्रमाण छे ते अवगाहनाएणै सादि सांत छे स्वकाल ते अग्रहलय गुणे

( सर्व भाव ) गुण पर्याय ते अनादि अनत

धर्मास्तिकायमां स्वद्रव्य ने चलण सहाय

करी अनादि अनत छे अने बल्पाद व्यय ते सादि सांत है स्त्रभाव वे चार गुण अगुरुलख अनादि अनत है १ स्वयं २ दश ३ मदेश से

अवगाहनाने ममाणे सादि सात है एम अध-मीस्तिकायना पण द्रव्यादि खार भागा जाणवा सथा आकाशास्त्रिकायमा स्वद्रव्य अवगाहना-दान गुण ते अनादि अनत है अने द्रव्यक्षेत्र लोकालोक प्रमाण अनत प्रदेश ते अनादि अनत **ै स्वकाल ते अग्रहलघुग्रण सर्वथापणे अना**दि अनत है अने चपजरे तथा विणसवे साहि सात ठे राभावते चार गुण तथा खय अने अग्रवलच ते अनावि अनत 🤼 तथा देश प्रदेश ते सादि सात है ते आफाश द्रव्यना बे भेद ठै एक चोटराज लोकनो खर लो-कामाश ते सादि सान है बीजो अलोमाश-मो सब ते सादि अनत है ^

<sup>\*</sup> चउदराज लोकनो स्वय छोकाकात सादि सांत छे ते आधी रीत ने लोकना मध्यपापे आठ रचक प्रदेशपी माडीने सादि छे जिहा चउदराज छोकनो अत आने तिहा सात तया चउदराज छो कनो छेछो प्रदेश मूकीने पठे अलोकनी सादि

35

कार इच्चमा स्वहच्य ने नता पुराणवन

र्षना गुण वे अनादि अनन है स्वक्षेत्र समय (कार) ने सादि सात् छ केमरे वर्तमान समय एक है वे मादे तथा स्वकात ने अनाहि अनव है स्त्रभाव ते गुण चार अने अग्रुहरूपु

आसमार

थनादि अनत उँ अतीत काल अनादि सीन 🕏 अन वर्नमानकाछ सादि सात 🕉 अनागत फाल सादि अनत उ शुक्रल ब्रध्यमा स्वद्रव्य ते ब्रह्मपूर्ण जिल

पुरणगलन धर्म त अनादि अनन्त है अने स्वक्षेत्र परमाणु ते साडि सान छै स्वकाल स्पिति अगुरलपु गुण ते अनादि अनत उ

छनी पण अजोरनो अन नषी मारे सादि अनन नध है

िअगुरुलघुनो उपमयो विणसयो ते साटि सात रिंटे स्वभावते ग्रुण चार अनाटि अनत टे

आगमसार

23

पर्णाद पर्याय चार एटले वर्ण गव रस स्पर्ध त सादि सात डे ए इन्यादि चारमा चोभगी कहां हुने ड इन्यना सरन्थ आश्री चोभगी

कहे है, तिहा प्रथम आकाश द्रव्य ठे तेमा अलोकाकामामा कोड द्रव्य नयी अने लोकाकामामा छ द्रव्य छे, तिहा लोका काश द्रव्य तथा बीजु उमास्तिकाम द्रव्य अने जीजु अभास्तिकाम द्रव्य ते अनादि अनत सम्प्री ठेने . लोकाकाशना एकेक मदेशमा धर्म द्रव्य तथा अधर्म द्रव्यनो एकेक मदेश

रयो है ते पण कितारे निटेडसे नहीं नोडे

सर्व अने जीव इच्यना अनादि जनत सव्य डे, अने ससारी जीव कर्म सहित तथ

लोरना प्रदेशनो साहि सात सवन्य<sup>ा</sup>

आगमसार

छोकान सिद्ध क्षेत्रना सिद्ध जीबीनी आकार महेश माथे मादि जनन सपन्य है, स्रीका

फाग अने पुड़ार डायनो अनुदि अनत स बस्य है, आकार पहेंचनी साथे प्रहल प्र

माणुनो साहि सात सर-व डे एव आरा

इन्पनीपर वर्गास्तिकाय तथा अधर्मारि कायनो पण सर्व सपन्य जाणवो जीव अ

ष्ट्रहरूना समन्त्रमा अभव्य जीवने प्रहरू

अनादि अनन सम्बद्धे, नमके नमन्य जीव कर्म कियारे स्तपसे नहीं माटे, अने भ जीवने फर्मनुं लाग र अनादि कालनुं है पण ो कियारेक इटशे माटे भव्य जीवने पुरूष सप्य अनाडि सात उ तथा निश्रयनयेकरी र्छ द्रव्य स्वभाग परिणाम परिणम्या छै ते परिणामीपणो सदा शाखतो है से माटे अन नारि अनत है अने जीव तथा प्रद्रल बेष्ट इध्य मिल वर्ग भाव वासे छे ते पर परिणा-मीपणो हे ते परपरिणामिपणो अभव्य जी-पने अनादि अनत है अने भव्य जीवने भनादि सात उ अने पहलनो परिणामी र्षणो ते सत्ताये जनादि अनत है अने पुह-किना मिल्बो बिजडबो ने सादि सात है (५३ नीत इब्य पुरुष साथे मिल्यो सकिय हि अने पुरुल कर्मधी रहित याय तेवार जीव

58

क्रिय है

इस्प अकिय ३ अने पुरुष इस्य सदा स

मेरे ते द्रव्यानिक नय रहिये तैना दन भेर है, सर्वे डाप नित्य है, इच्याधिक २ अगुरू लयु अने खेत्रना अपेक्षान कर मूल गुणने पिटवणे बहे ते एक इन्याधिक ३ ज्ञानादिय गणे सर्व जीर एक सरीरता है मारे सर्वने

इव एक, अनेक-पमधी निश्चय ज्ञान पदेवाने नय नहे है, सर्व इब्यमा अनेक

राभार है, ने एक बानधी कवा जाय नहीं

मारे माहीमाह नये करी सक्षेत्रपण कहे हैं।

निर्दा मूल नयना वे भेद है. वक्त इन्वार्थित

नीजो प्यायाधिक, तमा उत्पाद व्यय प्याम गीणपणे अने मधानपणे उच्यती गुण सत्तारी शागममार. ३७ एक जोन कहे, स्वद्रव्यादिकने ग्रहे ते सत् द्रव्याधिक. जेम सत्व्यसग द्रव्यास् / द्रव्यमा कोना योग्य गुण जगाकार कर ते नक्तव्य द्रव्याधिक ६ आत्मान अज्ञानी कहेनो ते जशुद्ध द्रव्याधिक ६ सर्व द्रव्य गुण पर्याय

सहित है एम कहेंचु ते अन्तय इच्यार्थिक ७ सर्व जीत द्रव्यनी मुळ सत्ता एक छे ते पर-महत्वाधिक नय ८ सर्वे जीवना आठ मदेश निर्मत्र हेते शुद्ध हत्यार्थिक नय ? सर्वे नीरना असत्यात पटेश एक सरीला छै ते सत्ता द्रटगर्विक नय, १० गुणगुणो ट्रब्य ते परमभावग्राहर स्टार्थिस जैम आत्मा ज्ञान-रप ठे इत्यादिक ए ह्व्यार्थिक नयना द्रम भेद कह्या

१८ आगममार

हत प्रशासिक नयता छ मेद कहे छै जे प्रायन शहे हे प्रमायधिक नय पहिंदे, नेता छ भेट के र इन्द्र प्रयास के जीवने भव्यपण वहेर, व इत्य स्वमान प्रयास के इत्यमु मेद्रमान, व गुण प्रयास के एक गुणशी अनेक्का थाय जेम प्रमायमीदिइव्य पाताना चल्ला सहकारादि गुणशी अनेक्क जीय का पुटलने सहाय बरे, ४ गुण व्यन

जीत ता पुहल्ते सहाय वरे, ८ ग्रुण व्य-जन पर्याप ने एक ग्रुणना घणा भेड हैं ६ स्वभाव प्याय त अग्रुहल पु पर्याचयी जाणने! प पात्र प्याय सर्वे इत्यमा है अने छड़ी विभाव पर्याय ने तीन् पुहल्ल ए थे इत्यमा

3 तिहां जीव के बार शितना नवा नवा भव ते व नीयमां विभाग पर्याय क्षणा पुहलमां

### खंबपण ते विभाग पर्याय जाणगी

हरे पर्यायना जीजा छ भेड कहे है ? अनादि नित्य पर्याय ते जेम प्रदृष्ठ द्रव्यनो मेरु प्रमुख, २ साहि नित्य पर्याय ते जीय इब्पन्न सिद्धपण, ३ अनित्य पर्याय ते समय समयमा द्रव्य उपने निणशे है, ४ अशुद्ध अनित्य पर्याय ते जन्म मरण थाय है तेशे करी कहेत. ५ उपाति वर्षाय ते कर्म सनन ६ शुद्ध पर्याय जे मूल पर्याय सर्वे इच्यना प्त सरीसा ठै ए पर्यापार्विकतु स्वरूप कतु ः इवे सात नय कहे हे १ नगम, २ माह, ३ व्यवहार, ४ ऋजु स्वत, ५ सब्द, समिभरड, ७ एव भृत-ए सात नयना ाम जाणना, तैवा पहेलों नैगम नय कहे 🕏

नवा एक ममा ते नगम कहिये गुणनी एक अश उपन्यो होय ता नगमनय कहिये हरान जेम कोइक मनुष्यने पाली रावपानी <sup>मन</sup> थयो, ते पारं जगलमा लाकद लेपा चारपो रस्तामा क्रोडक मनुष्य मत्या नर्णे पृच्छ है क्या जाय है, तबार तेले रहा जे पार्टी लेब जाब छुत पाली तो हकी पटा नर्थाप<sup>9</sup> मनमा चितको ते थड एम गुज्यु तेश नैग नव, सर्व जीवने सिद्ध समान कहे, वैम सर्व जीवना आउ रचक बदेश निर्मेल सिंग

रूप ठे तथा एक अज्ञे सिद्ध ठे त साटे सिर समान सर्व जीव कहा ते नैगम नयना अ भेट छे ? अनीत नैगम २ अनागत नैग ३ नेनान नैगम, ए नैगम नय करो.

जागमसार

ьġ

हवे संग्रह नय कहे के सचाग्रहे ते सग्रह चे एक नाग की तथ सर्व देव देवार दक्ति सहित आद है लगर रह रायदा है द्धान्त-तम कार्रह वच य प्रवान द्वान फरवाने अवें पोताना घरना वारणे वेशीने पाकर प्रस्के कहा जे दातण लड़ आयो, ते वारं ते चाकर मनुष्य पाणीनो लोटो तथा रमाल अने दातण एम सर्व चाज लइ आव्यो हो शेंढ तो एक दातण नाम लड़ने मगाव्यं इत पण सर्पनो संग्रह करी चाकर लड़ आव्यो तैयन द्रव्य एवु नाम ऋबु तो द्रव्यना गुण पर्याय सर्व आच्या ए संग्रह नयना वे भेड है एक ने द्रव्यपणी सामान्यपणे बोलता मीत्र तथा अभीन द्रव्यनो भेड पड्यो नहीं ते पेडेलो सामान्य मग्रह, तथा पीको विशेषताने अगीरार करे ठे, ने जीव द्रव्य एम क्यु ती अनीर मर्व रुल्या ने विशेष सग्रह

हवे व्यवहार नय रहे हे जो नाशहबरण देगोंने भरना बहुवण करे अने जे बाहर देखना गुणनम माने पण अतरण सचा न माने पटले प नयमा आचार दिया हुएय है अतरण परिणासनी उपयोग नयी केंद्र नीम तथा समझ नय है जान क्या श्यानना परिणाम विना अञ्च तथा सचा आही है, तेय इहा करणी हुएय हो ते व्यवहारनामें ( पणे)

जीननी व्यवस्था अनेष प्रसारे ठ तिहाँ नैगम तथा सग्रह नये करां सर्व जीन सत्तार्थे एक रूप रे पण व्यवहार नयथी जीवना वे

55

भेट है एक सिद्ध, बीजा ससारी, ते पली संसारी जीवना वे भेट है एक अयोगी चीटमा गुणटाणात्राला तथा त्रीता सयोगी ,ते सयोगीना वे भेद एक केवली वीजो छग्न-स्य, छग्रस्थना वे भेट एक क्षीण मोही बारमा गुणठाणे वर्चता मोहनीय कर्म खपान्यु ते. बीजो उपशान्तमोहते उपशान्त मोहना बली वे भेद, एक अक्रवायी उन्वास्मा गुण-गणाना जीव, बीजा सक्तपार्याना वे भेद है, , एक सुध्य कपायी दशमा गुणटाणाना जीव बीना बाहर कपायी ते बाहर कपायीना · बर्ली ने भेड़ ठै एक श्रेणि शतिपन्न, बीजा श्रेणि रहित ते श्रेणी रहितना वे भेट एक अप्रपादी पीजो प्रमादी ते प्रमादीना वे सेद एक निरति परिणामि बीजी देन निरति, देश

र्यामा अविरति परिणामि, अविरतीना वे भेद एक अधिरति समकाति बीजा अधिरति मि-श्यास्त्री ते मिथ्या पाना वे भेट, एक भव्य पीना अभव्य ते भव्यनाच भेट एक ग्रथिभेटी यीजाग्रर्था अभेदी (अभेट ग्रन्थि) एवी रीत में जीव नेत्रों देखाय तेने तेवा माने प

निरतिना वे भेट. एक विरति परिणामि अमे

व्यवहार नय है, एमन पुहलना भेद करवावे पह है पुहुत हब्यना ने भद है एक प्रमाणु षाजी स्वय, खाना व भट एक जीवने लाग्या ते जाव सहित, नाजा जीव रहित त घडो

मञ्जा अजीवनी स्वथ, ६४ जीव सहित खघना

ए भेट है एक स्हम खंत्र बीजो बादर स्वा

क्षामसार. ४५ इहा प्रमेणाना विचार उसीये छेंये, तिहा पुट्टनी वर्गणा आठ डे १ औटारिक वर्गणा २ वैक्रिय वर्गणा ३ आहारक वर्गणा ४ तेजस वर्गणा ५ मापा वर्गणा ६ श्वासी-रश्चास वर्गणा ७ मनो वर्गणा ८ कार्मण

वर्गणा-ए आठ वर्गणाना नाम कथा वे परमाणु भेला थाय त्यारे द्वयणुकत्वथ कहेवाय त्रण परमाणु भेला थाय तेवारे च्यणुकत्वथ थाय एम सरपाता परमाणु मिले सरपाता-णुक्तव्य थाय, तेमज असरपाते असरपाता-णुक्तत्वथ थाय, तथा अनता परमाणु मिले अनताणुकत्वथ थाय ए य्या ते स्त्री जीवने

अग्रहण योग्य है, अने जेवारे अभव्वथी अनतगुण अभिक परमाणु भेला थाय तेवारे

षमन भीनारिक्यी अनतगुणा अधिक नगणामां इल भेला थाय तबारे नैतिय वर्गणा थाप, बला बेडिय धर्ना अनन्तुणा परमाशु

٤Ł

मिले तेरार आहारक वर्गणा थाय एम सर्व वगणाना छररची जननगुणा अधिक पन्माणु मिले नेवार स वर्गणा थाम पटन पटरीयी वाजी बर्गणा, बीजीबी बीजी एम सानमा मनावर्गणाथा आडमो कार्मण वर्ग

णामा अनतगुण परमाशु अधिक छे इहा ? आंडारिक, २ विक्रिय, ३ आहारका. ४ तेजस, ए चार माणा बाहर है तथा पाचवर्ण-वे गन्य-पाच रस, भाउ स्पर्धं ए बीस गुण है, तमा ? मापा २ श्वासो छु।स २ मन ४

छे, अने एक परमाणुमा एक वर्ण-एक मध-पक रस-वे स्पर्भ ए पाच गुण है. एम पुहल लधना अनेक भेद डे ए व्याहार नयना छ भेट है ? शुद्ध व्यवहार ते आगला ग्रुणटाणानु छोडवु अने चपरना गुणठाणानु ग्रहण करन् अवता ज्ञान-दर्शन-चारित्र गुण ते निश्वयनय एकरप उ पण ते शिष्यने समजात्रताने जुढा जुढा भेढ फहेना ते शुद्ध व्यवहार छे २ जीवमा अज्ञान राग द्वेप लाम्पा 🕏 ते अशुद्धपणु 🕏 मारे अशुद्ध व्याहार ३ जे पुण्यनी किया करवी ते थुभ व्यवहार, ४ नेथकी जीव पापरप

### 26

घर-इद्रव मन्यम सर्वे आपणार्था जुडा जुडा है पण जाने जनानपण आपणा वरी जाण्या छ ते अपचरित व्यवहार ६ गुरीसहिक पर-प्रस्त यप्रति जीवधी जही ने तीवण परिणा-विक्रभाव लोलीवने एकडा विली स्वा है तैने

अशुभ वर्ष वृद्दे त ५ अ शुभ व्यवसार धन-

जीव आपणा करी जाणे हे ने अनुपर्यस्त च्यवहार जाणात्री च ब्यवहार नच फर्ची हरे ऋतु सूत्र नगनी दिचार कहे हैं।

ने अतीत कार अने अनागत कारूनी अपेक्षा न करे पण प्रतिमान कारे ने पस्त नेपा गुण

परिणामे वर्चे ते वस्तने तेरज परिणामे माने भार ए नव परिणामग्राही है जेव पीइक

Şģ.

जीन गृहस्थ है पण अतरम साबुसमान परि-

जीव साधने वेषे छैपण मनना परिणाम विषयाभिलाप सहित छै तो ते जीव अवतीज ें एम ऋतु स्त्रतु मानवु छे ते ऋजु सूतना ने भेड के एक सूक्ष्म ऋजु सूत्र ते एम कहे ने सदाकाल सर्व वस्तुमा एक वर्त्त मान समय उत्ते है एटले ने जीव गया काले अगानी हतो, अने अनागत काले अज्ञानी

भावे अज्ञानी धरो एम वेह कालनी अपेक्षा न करे पण एक वर्तमान नमये जे जेवो तेने तेंबो कहे ते सुक्ष्म ऋजुसून कहियें अने महोटा चादपरिणाम ग्रहे ते स्वूल ऋजु सूत्र नय जाणवी जटले बजु सूत्र नय क्यों

# हरे शब्दनय कहे 🤊 जे बस्त ग्रुणवर्त

आध्यमार

रथवा निर्मुण ते उस्तुने नाम नहीं बोला-वेय ने भाषा पर्गणायी झाद पर्णे वचन गोचर थाय ते शब्दनय जे कारणे अरूपी इच्य वचनधी पहेवा ते शन्दनय फहिये इ**हाँ** ने शब्दनो अर्थ होष त पणो जे वस्तुमा यम्तपणे पासियेत बारेते उस्त शन्दनप पहिमें जेम घटनी चेप्ताने बनती होय ते घट ए शब्दनयमा व्याकरणधी नीपना अने

षीजा पण सर्वे शब्द की गा ने शब्दनयना भार भेट है ? नाम २ स्थापना ३ द्रव्य

४ अने भाग चार निशेषाना पण एहिज

? पहेलो नाम निक्षेपो ते आकार तथा

आगमसार 48 गुणरहित वस्तुने नाम करी पोलाववी जे एक लाकडीनी कटकी लेइने कोइके तेइने जीव एवु नाम कहा ते नाम जीव जाणा ु जेम

काली दोरीने सापनी उद्धियें करी वार्ने हणे तेहने सापनी हिंसा लागे ए नाम सर्प थय ण्रीज रीत नाम तप अथवा नाम सिन्ह जेम वड प्रमुखने सिद्धाट एम कही बोलारे है ते नाम निक्षेपो कहिये ए सूत्र सारत छै. ' ? स्थापना निश्तेषी कहे है जे कोइक वस्तुमां कोइक वस्तुनो आकार देग्यीने तेहने ने पस्तु कहे जेम चित्रामण अथवा काष्ट्र पा-षाणनी मूर्चि तेने घोडा-हार्यानो आकार ठे तो ते घोडा-हाथी कहेगाय ते स्थापना जा-णती. ए स्थापना निक्षेपो नाम निशेषे सहित

५२ आगमसार होष जेम स्थापना सिंख जिनमतिमा प्रमुख है सहार म्थापना पण हाथ अने असहाय स्था पना पण हाए अने असहाय ह्या पना पण हाए अन्निम जिन मतिमा वे में ही धरहीय प्रमुखन रिपे और जेह इहानी जिन मतिमा ते कुनिम ते सर्व स्थापना जाणवी

जम थियामनी हो जिहा साही होय तिहां सापु रह नहीं कारणक स्थापना हो। उे ते ही तुल्य जाणवी तेयन जिन जितम जित समान जाणवी इरा कोडक जज्ञानी जीव कहे छे जे, स्थापनामा झानाडि गुण नधीतेयी

स्थापनाने मानवी पूजवी नहीं तेते खबर करें उ के स्थापना रूप श्लीमा श्लीपणाना गुण नधीं वो पण त निकारत कारण थाय टे तेमन जिनमतिमा पण प्यानत कारण दे अने

जे एम पुठे क हिंसा थाय छे अने भगवते तो इयाने धर्म कहा है तेहने एम कहेतु ने पर-देशी राजा केसी गुरुने बादवाने अथे वीजे र्दावर्से मोहोटा आढरथी आब्यो त वटनामा हिंसा थइ पण छाम कारण गणता जोटो न यगो बीजो मिह्ननाथजीय छ मित्र मतिषोध-वाने प्रतलीनो द्वान्त कयो, ते हिंसा वो घणी था पण ते छाभना फारणमा गणी छै एम भाव श्रद्ध होय तिहां हिंसा लागती नथी, अथरा कोइक एम कहे है जे अमे आपणे स्थानके वेटा नग्रथ्युण कहिसु अमने लाभ थासे ते रारो पण भगवती सुत्रमा भगवानने षदनाने अधिकारे तो तिहा जड बदना कर-बानु फल मोह क्यु है तथा निश्लेपाने अधि-

आगेमसार कार कम् जे भाग निक्षेपो एकलो धायः नर्व पण स्थापना तथा द्रव्य ए त्रण मिल्या भार

नितेषो थाय गाट स्थापना अवश्य मानवी हा ने स्थापना न माने तेने कहिंचे ने चित्रा मनी मूर्चि त हिंसाना परिणामधी फाटे तेही हिमा लागे है तेमन जिनवरना ध्याने जिन मतिमा पूजता लाभ थाय है एम प्रक्ति करती तथा आगमनी पाखे पण जिन मतिमाने जिन

समात गाने ने आराधक अने जे जिन वि माने न माने तेगे स्थापना निक्षेपी उधार्य

अमे स्थापना जयापी तो द्रव्य तथा भावः वि सेपो स्थापना निना थाय नहीं माटे द्रवय त भाव पण जयाच्या एम त्रण निशेषा जयाप

ते मारे सिद्धान्य स्थाप्यात बादे ते जिन

'तिमाने नहीं माने ते विराधक जाणवो तथा कोइ पूठे जे मतिमानो पूजा तो पहेला आसव मध्ये लखी ठे तेने कहींये जे तुम्हे मृपाबाट बीलो 'ठो, इहा मश्र व्याकरण सुनमा पाठ 'इम ठे नहीं तिहा पाठ ठे ते लिखींये रै।।

अविजाणओ परिजाणओ विसयहेड इमेहिं

कारणेहिं कि ते करीसण पोरकरणी वा विव-पणीमृवसरतलाग चितिवेति खाति आराम विहार, धूभ पागार, टार गोपूर अट्टालगच-रीय सेतुसकमपासायनिकष्पभवणघरसरणिले-णआवणचेइयदेवकुलचित्तसभाग्वाआयतणव-सई भूमिपरमडवाणकएईसिति=इहा पाच था-वरना पाच आलावा छे तेहने छेडे कोहा. माणा, माया, लोभा, हिंसा, रती इत्यादि

पाट है ते जे जीव इहीना समान्ते माहे मेईअ पहेना जिलाजिक करे ते आश्रा खाने प पाट ठे पण पूजाना पाट नधी ते स्पाप्ये (शा माटे) वालो छा, तथा मश्र व्याकरण-सूते पाने सपरदारे ने जालायों है ने लिखींप छे रावगयाचि आपरीय उवज्ञाय सेर माहपीए नवसि सिस बुद्द हुन्छ गण सन चेईपेंट निज्यास्टी बचावध अनस्सीओदसर्वि इन्द्रविद्यतरेई एआलावे आचारम ममुखर्चेईप महेता जिनवतिमानी वैयावश करे निहर्मराना

अर्थी अणस्मीओ कहेगी जस कीरिनी बाछा रहितपको वैवावच दश मकार तथा अनेक मनारनो करे, इहां चेईय कहेता मनिमा छे ती खोडी कन्यमा स्वामाने करो छो ? तथा बीने ,पश्चे पूछचो जै अहिंसाना ६० नाम कहा ठै, थभश्रोसबस्सविञनाषाजोञ्जरकाय वित्तीपुरा विपलप्या निम्मलकरीति एव गाउणीनिय-

गुणनिम्पियाइ पज्जयनामाणिष्ट्रतिअहिसाए॥ तिहां प्रतिमा तथा पूजानी नाम नथी तेहनी

'उत्तर तिहा अहिंसानी नाम जाणी तेहनी अर्थ देवपुत्रा है पुत्रा एहवी हयानी नाम है ती अजाण्योद्रमस्ये मरपणा करो छो ? तीज प-

जातो श्रीअहिंहत प्रतिमानी ते तो विनय तथा गैयायच ते अस्भितर तपना भेद ठै ते तप

मोलनो मार्ग छ अ। उत्तरा ययन सूत्रे २८ मे अध्ययने तपने मोलना न्यार कारण उद्या ते

लनी खनर न हुने वे विचारी बोलीये, तथा

मध्ये गण्यो छै तथा तो पस्ये प्रजन्मे ने नो-

श्राप्त कोणे टेहरां कराव्यां ? तथा मति। पूर्जी ? तेहनी उत्तर श्रीममवायागसृत्रे तथ नरीस्त्रे सर्व आगमनी नृष है तैमन्ये ए पा ठै तिहा उपासकदशानो नोध छै ते आलाव

ठ त रुखीए 🕏 सेरिते उत्रासगटसाओ बना सगन्साम्य समयोगासमाण नगराईचण्डाणाः चरुआइ वणसटाइ समीसरणाइ रायाणीअ म्मापियरा थम्मायरिया धम्मकहाओ इहलीई ना पारलाईया इहिनिसेसा भौगापरीआड

छ अवरिमाहीआ वजीवहाणाइसील्वयगुणवेर-मणपद्यार्गाणपोसहोत्रनासपदिवज्झणापहिमा भो उत्रसमासलिहणाओं भत्तपचरकाणइयाउ

वगमण देवलोगगमण सुकुलपचायापुणत्रोहि-लाभो अनिकरायाआधरिज्यति ए पाउ छै।

जाणत्यो. इहा चेह्य पहनो अर्थ तीजो धाये नहीं, जे बननो अर्थ करे तेतो उद्यानगनस-हनो पाट जटो ठे कोइ साधुनो अर्थ करे ते पम्मायगिया ए पाट जटो ठे ज्ञाननो अर्थ करे ते मुख्ए पाट जटो ठे तेवाटे चेह्य धाटे निनमतिमानो अर्थ ठे तथा सुरुहे पुत्रो जे द्वारका रानग्रहमें देहरा तथा प्रतिमानो पाट

बबार तथा अतगहना नो उनो पाठ जोड़यो. तथा तुम्हे क्रहेम्यो इतला बोल उपासक्टबा-प्रमुखे दीसता नथीं तेहनो उत्तर जे नहीं तथा समबायागमे जे पाठ तेहनो कोण उत्थापी शुके ते जोड़यों, तथा युज्यु जे किणे श्रावके

किहा है <sup>7</sup> तेहनो उत्तर नदीसने अणुत्तरो

लेवा निवन्धा तेवारे न्हाया क्रयवित्वस्मा प पाड छ, इत्यादिक जारर आय देशनी रूना न क्रे गात्रज न पूज, अरिहत देवनेत्र पृते, तथा कार कहेरचे क्यवस्थिकमा पाड क्टीपास ममुख और धानर छै तेवां स्पाना उ<sup>7</sup> पा जेटी वस्तुद्धे साने त तेहने पुने तथा देनदत्त बार्र कीम युत्रा करी हते तेनी यान्यने मातीन पुना करायी ची को न परे ? भाव पण बाउक पुना करता नीसे है तो क्यार्टीनम्मा ए पार्टनो बीमो अथ द्याने परो छो ? तथा दीक्षा महोन्छ । चणा दीसे उपण निद्या बहरा भतियानी पात्र नथी

आभाषात.

माधुने बहाराववा रहा नयी तो देहरा करा या तो घरे स्थाने रहे " अने पहला देहरा प्रतिमा है तेतो नहीसूने आगमनोयनो पाठ जोर्शे तो सर्वे समो पटशे तथा तुम्हः पुजय जे तीर्थस्यब्रहस्यपणे छता साघ साची श्रात्रक्त श्राविकाए वाचा नथी तैनो उत्तर घणार बांचा है. ते पाट ज्ञातासूत्रमा है तथा हमें छएयों के मतिमा पर्केन्द्रिवल है तेहबो ' बचन ससारनो जेहने भय न हो ते बोले ? ने कारणे श्रीभगवतीजी तो जिणपहिया कही षोलात्री ठै. देहराने सिखायतन कही वोलाब्यो तो तुमे फटोर बचन स्वाने जोलो हो ? तथा हुमें दिसी बदना करी छो तै द्रीसी तो अजीव 5 र तो फीम बादा छो ? तिहा सुम्हे फरेस्यो <sup>है</sup> भाम्हारा मनमें वा सिद्ध है ता जिनपहिम

आगमसार

फेटलोन जीव्या है त त्या सर्व आपक **एक** म षरणी परे ए व्या नियम हे ? तथा परहेशीय तथा भागड श्रावत काइक साजने पटिलाभ्य नयी ते माने हाम साधनी बीहराज्यामे दो

बादता पिग अवारा मनगा सिद्ध है तथ.

**म्**नय ये गुरनी पारनी आगातना टालवी बही है, ते पाट अजीव है वेपीण सर्वे गुरती

मान ३ तथा गुप्रयांगवावादि जिननी दाडा

ठ ते पत्नाक पूजनीक छ तेना अजीव स्त्र<sup>ध</sup>

मान करी <sup>?</sup>त परदक्षा आपर थया पर्छी

है तथा तुमे ल्याया ज परदेशा राजाप प्रतिमा

बहुमान ७, मतिमान बहुमाने सिद्धनी वह

मानस्यो <sup>१</sup> ए विचारी ज्यो ज्यो तथा छख्य है जे स्रीआभे जे मतिमा पूजी ते राजधा भीना मगलीक माट पूजा करी तेतो खोड बोलो जो, ए पाठ मुत्रमें नथी सुत्रमें ती पहनो पाठ डे "शीपाष सहाप खेमाष निस्ते-साए आणुगानीयचाण पविस्सड निश्रेयस कहता मोक्षमणी व अर्थ है, तया पण्डा शब्दे में इहलोकनो अर्थ है इम कहे है ते सह है, दर्दर देवताने अधिकारे पन्छा शब्दे आवता भवनो अर्थ छै तथा आचारागसूत्रे जस्तपू-वियिनो तस्सपणायिनो इहा पूर्व शब्दे पुरलो पर पड़ा शब्दे आपतो भर लोबो डै तथा र मने समकितनो छाभ ते घणो है तथा धिंकर वात्राना कलनो पाट उनपाइमध्ये ŝ٤ भागमसार तथा पचषडाञ्रत पाल्यानी पाठ आचाराग

चे देवाणे लाग माना हो तो जिनमतिमा डामे ना स्थान वही छा ? अने दिहा निन मतिमा पुतानी पाप क्वी नधी अने हीय ती देखाडा नुम लिएयु के भगवी हिसानी नी पदा ठे तेती अमे दिश प्रमुख से हिंसा क रवी, पण भगवने किसे सूत्रे मतिमा पूजानी

म'पे तिहा पण हियार इत्यादिया पाउ है त

ना कही नथा पतिमानी १७ पकारनी पुत्र म्रेन नहीं उ तथा तुमे परितानी पूजा हिसाँ गणो छो ने इम नधी प्रतिमानी पूजा त विनय तथा लेपावस धर्ममा उत्तथा पृत्र

हिसामे गणी वो बाणामे नदीमें पढती सा भ्वीने साधु काहे तेमा हिंसा गणी नहीं, Rt

भागमसार ĘĠ :नाचारांगम्**त्रे पीजा साबु अजाणे पण** शर्फ-रानी भूछे छण बीहरीने पठे जाणे जे छ्ग बीहराच्यो ते जाणी ते पोने साय ते पोते पीये

तथा नीजा साधु सभीगीने आपे ते लाये पीए तथा विषमवाटे ोलने रखने छताने यूजाने अवलवी उत्तरे जे पाठ जाचाराग-स्रे डे तथा भगवती स्रमे साधुना हरस काडे तेहने कियाकर्म लागे नहीं. तथा पहिनायजी पूतलीमें कवल मंख्या तैमाटे र्थम गाँउ हिंसा करी तथा सुबुद्धि मनिए षाणी पलटाच्यो ते उर्म माटे करी पिण मद बुद्धी न कया है भगवतीसुत्रे २५ में दातक साधु शासन माटे तेजीलेक्या मुक्त तेहने जा-रापक कथो, तथा जंत्रद्वीपपन्नचीए निर्वाण

## अभिक्षमा

महोरउउ स्वीं हे प्रस्यतिजिणभतिष धरमे त्तिए पाउ है उम<sup>े</sup>नेटला पाउ छीखीए ! भनेक पाठ है॥ तथा नदी सुते के आगर्म कयो ते जत्थापाने ३२ मानो छो ते बेनी आज्ञा हे <sup>१</sup> तथा आवश्यक स्**प्रप**टिकमणी विना साधुपणी आवक्पणी हुवन नहीं वै हुम्हे आवरयक सूत्रपटिकपणी पानमा नर्या तो श्राप्तकपणो ने साधुपणो रम रगनी छा<sup>र</sup> श्रीभगवतीसूत्रे साथ सान्त्री श्रातक श्राविका पचमशाराता डेहडा पर्यंत क्या छे ते तुमारी श्रदामें हिवणा साधु मा वी कोण छे ? तथी स्रे आपारज स्पात्याय कलगणनीनिश्राय

विचरेत आराधक ते तमे कोनी निश्राये ते छो <sup>१</sup> ते ल्खिन्यो, तथा शीभमनती

स्ते गाया है ॥ पहमोगीयत्यविहारी वीयो-गीयत्थनिसीओभणिओ । इत्तोतइयविहारी नाणुझाओजिणवरेहिं ॥ १॥ पहनी अर्थ गीतार्थ होय ते पोते विहार करे अथवा गीता-र्थनी निश्राये विहार करवो एथी तिजा विहा-रनी अरिक्ष्ते आज्ञा टी री नवां ते माटे तुमे किस्या गीतार्थनी निश्राये विहार करो छो ? तथा योग उपाचानप्रदाने सिद्धात भणे तैपण श्रावक आचारागादिक सुत्र भणे नहीं ते निजीयमा कहा। है। जे भित्रसुअन्नस्थीयं वा गारत्थियमा वायण मायज्ञत्त साहज्जति तस्तर-चौमासीयपरिहारटाण ने ग्रहस्यने सूत्र बचार्ष अवत्रा वाचताने अनुमोटे तेहने चारमासनी पारवो चारित*ा*ना तथा प्रश्न व्यासरणसूत

७० लागमसार अहरेरिसीयपुणसबन्तुभासियव जत्धदयेहिं गुणेहिएननहिं सम्महिं बहुनिहेहिं आगमेहि

सर विभक्ति उच्च जुन भासिबंद तथा अनुपीर गद्दारे ७ नव ४ निक्षेपाकारू तिन, लिंग तीन, जाण्या तिना उपदेश देवा ते मार्ग मधी इत्यादिक अनेत्र योल ने ते गीतार्थनी

नामरकाय निवाय उवसम्म तदिअ समास सिषयद जोग जणादि कीरीयावीडीणसरघाड

मितपानी पुत्रा म ये फूल पूजानी शका करें तेहने कहींचे जे श्रीरायपसेणासूते ३७ भेर पुजाना पाठ छ पुष्कारहण १ सालारहण :

सवनार्था पामोष इतिभद्र ॥ जे कड श्रीजिन

नहबन्नयारहण ३ तथा पुष्प्रपतिह ४ पुष्प्रप

५ एवळी प्रजा फलनी है तैवारे प्रज

फ़लनी ते ममाण जे तथा श्रीभगवतीसूते पण मुरीआभनी पेरे पजानी भलामणना पाठ अनेक है तथा ज्ञातासने द्रीपर्वाने अनिकारे १७ प्रकारी पुजाना पाठ छै। समबायागस्त्रे चोत्रीस अतिशयने अविकारे " जलय थलय भामरदसद्भवद्मेणजागुरसहष्पमाणमिचेण प्रप्फ-पुनोवयारकरेड इत्यादि पाठ छे " इहा सम-षायांग सत्रम देवता मनुष्यमी नाम कवी मथी तथा श्रीउवपाईसूप कोणिकने अभिकारे श्रीवीर समोसर्वा तेवारे अनेकजन चपाथी निफल्या ने " अप्पेगडयावदणविचयाए अ-ष्वेगइयापुषणवत्तियाए अष्वेगइयासुयस्या-मो अप्पेगइयानिचलाइ अहाओहेओआई अ-तिणाइगहिस्सामी " इत्यादि पाठ ठे. तिहा ७२ जानमसार पूराणवर्तीयाए व पाउनो अर्थ दीकाम ये पूज न पुरापमाजाटिना उम क्यो जे इहां श्रीतीर्थ

षरने पूप्पनी पूजा होसे छे ए पाठ शीमां वर्तासूत्र पण है तथा नहीसूत्र अतहानने पाठे केतम अरिहर्गाह भगवशीह खप्पस्तागदसण पोगीह तिस्टकनिस्त्रलीय पर्दाअपूर्यप्रह पाठनो अपि डीएाफार गिण महीय शब्दे पश्चादि, सुर्वाह पुष्पमालाधित करीने ए पाठ अहु-यागहारम ये वण छे इस पुष्पस्तुनामा अनेक

पाठ ठै, ते माठे शका न बक्की क्ली केड ह इस महे छ के फूल टचाता लंदे ते चढानका पण पोते चुटो चढानका नहीं तेपण अनाण्यु केद ठे जे " श्रीजीचाभिगयस्ते " ततेण से विज्ञणको भोत्यवर्यण्याण्युद्ध पो, २ ति. पोत्थयस्यणग्रयति पो २ त्ता पोत्थयस्यण-विहाडेति पो २ चा पोत्ययस्यणवाइए पो. २ ला अभ्ययवयसायपिगेण्डेति ध २ ला पो-स्थयरयणपडिजिएसमति पो २ चा सीहास-णतोशम्भद्रेति सी. २ ता वनमायसमातोष-रियमिल्लेणडारेणपहिनिग्खमड प्र २ सा जेणेव णदाप्रमसर्गा तेण व उवागन्छति च ? त्रा णटापुरखरिण अणुष्ययाणिकरमाणे प्रस्थिमिह्नेण तोरणेण अणुपविसति अ. २ त्ता प्रस्थिमिञ्जेण तिसापाणेपडिक्वण पद्यो-रहति प० २ चा इत्यपाद पराखालेति इ. २ सा एगमहसेनरजतामय विमलसलिलपुण्णमत्त-गयमहामुहानिइ समाणभिनार पनिण्हति प २ त्ता नाइतत्थउपलाइपउमाइजावसत्तपत्ताइसह- ७४ समसार स्वनाड नाड ग्रेग्डिन २ चा जदानो पुरस् रिणिया पञ्चत्रह प २ चा जेग्यनिद्धाय-त्रणे तज्वपाडास्त्रममणाइ त्रणजनिज्ञपदेव पचारि सामाणियमाहस्त्रीओं आर्चेगनिया उपल्ह्हस्य

गता जात्र मतसहस्मप्तह्यगया विजयत्व पिद्वनीभणुगरण्डला । इहा फ्रच चुनी जीशों दे ए आजाप निमयद्दे पात सारहामें उनगति कुर पूर्टी त्रीषा तथा सामानिक दुवना तथा पीजे देरताये पिण फूड पोताना हायथी सीची छै इहा कोइ पूछस्ये जे तिहां कोइ माला नधी तेमाट पोन लिओं तैहनो उत्तर ने माली नवी पिण देवता चाऊर छोक घणा छै,

तेहनेज पासे का न मगारे ? जो पुष्प आप्यानो विशि होने तोषण पोताना हायथी
स्राधानो तिथि है तेयांट पोते सक्की सभ्ये
वतरी स्रीया है तथा श्रीरायपसेणीम्रते सुरीआभाषिकार

" ततेण सं सुरियाभेटेचे पोत्यरयणगि-ष्हर, पो र मि चा पोत्यस्यण प्रयह, पोत्य रयणविहाहेड. सा २ पोत्थरयणनाएति. सा २ पन्मियवप्रसामगिष्हर, २ चा पोरबर्यण- , पडिणिऋसमीत २ चा सिहासणाओअब्स्रहेड ? चा वासायसभाओ पुरस्थिविन्हेण टारेण परिणिकसमह र चा जेणेन णदापोरकरिणि तैणेत खवागच्छड २ सा णहापीकखरिणी प्ररियमञ्जेण तोरणेणतिसोयाणपहिरूपेण व

घोरहनि २ सा हत्यवायपवरपालह २ मा आपने पापल परमगडभूक कम्सेयपहर्यया मय निमन्यिक्तपूर्ण मराययमुहातिनिसमा पामनार परिष्टिनि पर्योग्हर २ सा जाइन-स्परपन्गरुत्राप्रसयमहस्मपनार्द्रागण्डति णदा-था पुरावरिणोओ पशोरहड २ चा अणैर सिद्धायतणे तेणेत्र पहारेगयणाय तप्ण त स्रिवामदव चत्तारिसामाणियमाह्रसीओ जार सोल्सभायस्वलद्यसाहस्सीओ अण्णेयपहर् स्रियाभियाण नाम नेवा वनीओअप्यगद्या वत्पलद् बगवा जात्रमस्तरहस्तपसद्दश्यगया स्रियाभ देवपिङ्योसम्युगच्छति त्वेग सृरि॰ माभदेववरोआभिकामिय देवाय देवीओ य अप्नेगर्याकलसहस्थायाओं जानअप्रेगर्या धनसङ्ब्रहस्थाया हृहतृहानात्रजासूरियाभ देपपिद्वजोसयणुगच्छति तेतैण णे सरियाभेदेव चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जानअण्णेहियन-र्श्हिस्रियाभविमाणवासीहि देवेहि देवीहिय-सर्दि सपरिपटे सन्बर्धाए जात्र णाडयरवेण जेणव सिद्धाययण तेणेत्र उवा गन्छः सिद्धाय-णपुरि विदिलेण दारेण अणुपिसति २ चा नेणव निण पहिमात्र तेणेय त्रयागच्छर, निण-पहिमाणआलोए पणामकरेति २ चा लोमह-स्यगगिण्डड २ चा जिणपटिवाण लामहत्थपण पमज्झा २ चा जिलपडिया त्रीमुर्भिणार्ग शे-रुएणण्हाणेति ष्टाणिचा सरसेण गासीसचढ-णेणनायाण अणुलिष्यह २ चा जिणपडिमाण-अहिपांदेनदूसाइ जियलाइ जियसेइ २ सा

20 आवसमार रेशना के नधा रोधर रहेसे जे एनी पूत्रा नधी सहने पहचा लावा है तहने कहींपे हैं, ज रक्तारमध सहने पटचा बाउटीमध्ये द्वेत्र नहीं, तथा निगाही अधिकारे निगाइ राजाए

नानाना मानरीया पाने पूरी शीर्पी तेसी रन्क यथ चुना सीधी ते पाठ उत्पादीमधी जोजी अन्याणुजुत्तनिस्य बोपसङ इसुमानुष राष्ट्रणायमामजरामहोबाए तर्क्या तरेण व्यवेग

मजरीयन पराल्खयाः कहाविसेमी फर्म

पदिनियत्तओषुच्छइ कहे सोरक्स्वोधमद्यमा हसाओं फहफ संयावेत्याभणा तस्हेहि एगा

मनरीगहीयाप्रज्ञसन्त्रणगहेतम् छत्रञ्जो

उहाँ गरीय शब्दे चुउरानी अर्थ है, तथा की े जे पत्ती देवनाये सर्यों छे ते आवा क्रयानी किहा पाट नथी, तेहने कडीये जे जो देवतानी करणी ताहरे न फरपी तो

शकस्तान किम करे छे? तथा स्नान कॅम

मानो हो ? स्नाज नो कलस दोलो छो ते टेबतानी करणीज है, तथा सुरीयाभनी पूजानी

भलामण द्वीपदीने पांठे है देवतानी पुजाकरणी तथा मनुष्यनो पाट एकन है तैमारे देवतानी

मरणी श्रापक करे ए अद्वापमाण है तथा जे फल खटवानी ना कहे ते वीटना जीपनि

वीलामना माटे तैवारे फुलनी प्रजा किम करी भक्त <sup>1</sup> अने फलनी प्रजानो तो सुत्रे पाठ छै

तथा जे पूजाने हिंसामें गणे तेहने कहीये जे

थी प्रश्नच्याकरण सूत्रे प्रथम सबरहारे अहि-

साना ६० नाम कवा ठे विहा पूजा वे दया

अगममार रही छ न पाठ लिसीड छै अभवसदहस विजनायाओ "हरमणवरचीपूपाविमण्टरमा

63

निस्मानकाची प्रवाशिक्षाम्यमुणानिस्मयार् प्रजायनामाणिहृति अहिसाण भगदश् स्रयादि पाउँ पूना ते अहिसाण भगदश् स्रयादि पाउँ पूना ते अहिसाण मणी छै, तो स्रवे हिसामे रिम गणी छ। तिथा भगतती

स्ते " गुमयोगपद्ग्यभणारमा " ए पाउ शुमयोग महन्ति आरमणी ना कही छै विनय तु मा मयाग्य त तपना मेंट छै तप ते मोक्षमार्गम ये श्रीजनगरच्यने २८ में मध्य यो ह्यो, त तुम डिनामें स्म यही छा । तथा निरहारमुझे सिद्धांयास्त्रेण महानिज्ञ-

रामहापज्यामाणमनति " तवाटे सिद्धवै पात्रम छ, तथा कोइ चूछे जे श्रापके मतिमा किहां प्रजी छै १ तेहने फेह्यों जे श्रीभगवर्तास्त्रे तुर्गाया नगरीने श्रापक प्रजा करी है। श्राय प्रफरीये प्रजा करी उँ तथा समनायांगस्त्रे

63

आगमसार

द्वादशागीनी हृद्दीने अधिकारे उपासकद्यानी हरीम प दश आवकता चला पहनी पाठ है ए पाउमे चेट्य तो साधु थाय नहीं, ज्ञान थाय नहीं ने सर्वना पाट खुदा है, तथा नहीं सुत्रे

पिंग पाड ठे तथा नहींम य जे आगम कथा वे सर्व माने तेज समित्रती जाणती श्रीअनुयो गद्वारस्ते निर्शक्तिनी हा करी ठेने निर्शक्ति-म ये पुताना अनेक अधिकार है, तथा

तद्दल्यपाळीपयस्नानी टीकाम ये समबसरणना पुल सचित्त ते उपर साधु सार्जा चाले. भवचनसारोद्धार टीकाय पण ए मत छै, तथा

आवयवार योड पहेरवे जे फुल्ने बोड ( पगववा ) नर्ति

तेशन पदाये ने होग्यक्षमध्ये पाउ रे वर्ष बद्यगरोरपंडेंचेनिः -होक पारपार्यं श्राद

68

विनक्ष्मे मान्यु ब्हासम्बिपर्सने स्था आध्यपतेन जिनमझमगृहि कृत वृत्तार् प्रतिर्ध

श्रीत प्रापाथराणि स्थित तथा द्वामहस्थि कृत पूजा पचासक जहाँहईनशीरह ", ए

गायाना आसपर्धा विण मीया फुलर्ना र जणाय छे तथा उमास्यातियाचक ज्ञत पूर्व

पटलवाषिण चयन जणाय है । स्थापन इतर भी याउनक्रियर ए वे भेटें है

३ डब्प निलेगो रहे छ अनी नाम पण

श्रीय सभा आसार जावना गुण पण होय अं लक्षण होच पण आत्मीपयीम न मिले हैंग निक्षेपी जाणवी एटले अज्ञानी जीप तै नीव स्वरूपना उपयोग निना द्रव्य जीव रे "अणुवओगो दब " इति अनुयोगद्वार वच नान् वली कर्षे ठे जे सिद्धान्त बाचता पूछता पद अक्षर माता शुद्ध अर्थ करे उँ अने ग्रह प्रेंस सहहे है ते पण शुद्ध निश्रये सत्ता ओ-<sup>छर</sup>या निना सर्व द्रव्य निक्षेपामा 🗗 जे भाव विना द्रव्यपणो ठेते पुण्य वधनुकारण छै पण मोक्षत फारण नथी एटले जे करणी रूप फर्ट तपस्या करे छै अने जीव अजीव सत्ता

श्रीगर्मसार

न्य परिचा कर है जिन जीव जनाव स्ता श्रील्ली नथी तैने भगजती स्वता अप्रती तथा अवगल्लाणी कवा है, तथा जे एकली बाब करणी कर है अने पोते साधु कहेतरात्रे हैं ते स्वनादी हैं स्म उत्तराध्यमन स्वप्ना

आगमसार यमु उ "न मुणी रत्नासेण" ए वचते 'त्र णण य मुणी हाइ " ए पचनयी जे ज्ञानस त मुनि है अने ने अज्ञानी ते मिध्याची !

cĘ

तथा काइक गणिता उयोगना नरक देवता योल अथवा यनि श्रावस्त्रो आचार जाणी फटे जे अम ज्ञानी छैंवें ते पण ज्ञानी नधा पण जे इन्य गुण पयाय जाने तेने झानी ह हिय श्रा उत्तरा यया मोश मार्गे कवी है गाथा, एव पत्र विह्नाण दब्साणय गुणागण पलागणय संवेति, नाण नाणी हिं दसिय 🎉 माटे वस्तु सत्ता जाण्या जिना ज्ञानी नहीं अन मातस्य ओलस्य ते समझीति अने एह्या श्रान दर्शन विना ने कहे के अमे चारितिआ छैं त पण मृपाबादी छे, कारण क श्री उत्तराध्यमन

नुत्र मचे 'कबु ठे जे "नादसणस्मनाण नाणेण दिणान हुति चग्ण ग्रुणा 'ग्यूचन टेते गाटे आज केटलाक ज्ञानदीन कियानो

आदवर देखांडे ठेते वग ठेतेहनो सग करवो नहीं ए बाद्य करणी अभव्य जीउने पण आवे माटे ए बाद्य करणी उपर राचउ नहीं जने आत्मानुस्वरूप ओल्स्ट्या विचा सामा-

૮૭

आगममार

यक पिडकपण पश्चरमाण करना ते सर्व इट्यिनिक्षेपामा पुण्याश्रव है पण सवर नधी श्रीममवता पूत्र माचे कपू है क "आपा रास्तु मामाइय " प्र आखात्राची जाणको तथा जीव रास्प जाण्या जिला तथ स्वयम पुण्य प्रकृति ते देवताना भवतु कारण है " पुच्च तथेण पुच्य स्वयमेण देवस्त्रीए ज्ववन्त्वति नो चेवण

11

आय भाववत्तव्यवाए " ए भारावी मगर तीयां क्यों है तथा ने नियालीपी आवा द्दीन अने ज्ञानहीन छ मात्र गच्छनी पां सिद्धान्त भण है याचे है जन प्रमाणवाण 🕏 छे ते पण इच्य निक्षेषा आणवा एम

भनुयोगदारमा क्य हे

ने इमे समण गुणमुक्तांगी छक निरणुक्या ॥ ह्याइव उद्दामा ॥ गयाइव नि हुसा ॥ घट्टामहातुष्पांडा ॥ पदुरयाउरणा वि णाण आणाप सच्छद विद्वितिका उमा पालं आवस्सागस्स **उ**बहति ॥ ॥ सोगुप वर्ष-जेने 🎟 कायनी द्वया नयी, दानी पर उन्मच है, हाथीनी पेंडे निर

चंता रोच्छाचारी बीतरामनी आज्ञा भानता ने तप क्रिया करे है ते पण द्रव्य निक्षेपामा छै. अथवा ज्योतिष वैद्यक करे है अने पी-ताने आचार्य उपाध्याय कहेवरात्रीने लोक पामे महिमा करे (करावे छै) छै ते पत्रीयथ लोटा रूपैया जेवा डे घणा भत्र भमसे अव-दनीक छे ए लास उत्तरा ययनम ये अनाथी प्रिनेना अध्ययनयकी जाणपी अने सूप्रना , अर्थ गुरुमुखे शिख्या निना तथा नय प्रमाण माण्या विना निश्चय आत्मानु स्वरूप ओल-रुपा निना निर्वेक्ति विना उपदेश आपे ते पाने तो ससारमां गुड्या छै पण जे तेमती

## पास नेसे है तेवने पण ससारमा सुरावे ! एव मक्ष व्यासर्ग सूत्र नथा अनुयोगरा

स्त्रमा क्यु हे " अवजुन्य चेत्र सील सम् इत्यादि भी भगवती सूत्रमी एण क्षु ने "सुनत्थो राख पड्यो, बीओ निज्ञत्ति मिसन मणिओ, इतो तर्भणुओगी, नाणुझाओ मिणपरेहिं " अने केटलाक एम पहें छै जै अमे सूत उपर \* अधंकिर्य छंये तो निर्युति

\* श्री भगवती सूत्रमा "सूत्रायोत्तल परमी

सारती पूरी जुरी त्रण प्रतीमा रुख्यु हुनु मार पण तपन सर्यु छ। पण बीन्स उराणे ए भग

विनोनी साख दीवी छे तिहा तो " मतम्बी सह

बीजानिक्युत्ति मिमओं भगियो ॥ इसी तह्म जोगो, नाणुनाआनिणकोहि भ ववी शीने आगम ाया टीका प्रमुखनु शुक्राम छे ते पण मृपा-गद्द ठे केमके श्रीमश्रन्याकरणमा "वयणतिय केमतिय " इत्यादिक जाण्या विना अने नय नेमेप जाण्या विना जे उपदेश आपे ते मृपा-गदी छे एग अनेक सुनमा कसु ठे माटे बहु-

ति पासे उपटेश साभलवो श्री उत्तराध्ययन 'ये बहुश्रुतने मेरुनी तथा समुद्रनी अने

न्पहसाहि सोल उपमा दी गी छे ए इत्य तसेपो.कयो ४ भाव निसेपो कहे छे जे नाम स्था ना अने इन्य ए त्रण निसेपा ते एक भाव स्मो, बीओनिज्जुचि मिसओ मणिओ॥ तह्जीय हिसेसो, एस बिहि हो हुँ अणुओगो ए एवे पाठ ते सरो नणाय छे पडे! बहुधत कहे ते व्यक्त.

## निक्षेपा विना अधुद्ध है जे नाम तथा आसी रक्षण गुण सहित वस्त ते भाव निक्षेपी क

णरों ' जनओंगों भार '' इति वचनात् एरें पूजा, जान, जील, तथ, क्रिया, क्षान ण सर्वे भाविनिषेषे सहित काभनु काण छै शी पोइ कहेते के भनना परिणाम हह करीने ने करियें तने भाव कहिये एम कहे. छैं हैं

जुरा है एतो सुखनी बारायें कि॰पाली पण पणा फरे छे त गणतु नहीं इहा सूत्रनी साले बीतरागनी आहाए हैय खपानेयनी परीता करी अभीतत्त्व सथा आस्वयतस्व अने बन्ध

रूरी अजीवतस्य सथा आख्यतस्य अने बन्ध तस्य उपर हेव फहेतां त्याग भाव अने जीवना स्वगुण जे सवर निर्मेश तथा मांश तस्य ऊपरें "पदिय परिणाम ते भाव फहिये एउले स्पी तिक सर्व इच्य निक्षेपामा है अने ज्ञान दर्शन

'चारित्र वीर्य ज्यान ममुख सर्वे ग्रुण भाव निक्षेपामा है, ए भार निक्षेपो ते नामस्थापना तथा इच्य सहित होय छटडे चार निक्षेपा

अध्योजनार

भावतिक्षेप है एटले यन बचन काया लेक्या-

🗜 हो चार निक्षेपा पटार्थ ऊपर छगाडी र्दखाडे है नाम जीव ते चेतना अथवा माचाना पक बाणने जीव कही बोलावे है ते नाम निक्षेपे जीय. मर्ति प्रमुख यापिये ने स्थापना नीव एकेदियथी पचेटिय पर्यंत सर्व जीव है पण उपयोग मिल नहि ते इन्य जीव अने मृर्तिमा, जीत 'स्वरूप ओळखी समकितना सन्धित सर्वे इच्च ज्ञान ने नवतरातु आण्ये ते भागकान तथा कोउस्च तव प्रस्तु नाम् ते ना

तप तथा पुस्तक्षया तपनी त्रिनित् लेखन यापना तप अने पुण्यक्त्य बामरामणारि कररो ते द्राय तथ ज पत्रमञ्ज उत्पर स्यागन् परिणाम राभाव तम एक भेतरादिक सर्व

44

चार चार निजेषा जाणवा तथा श्री अञ्चय गद्धार मच्चे उत्तु ठे-यन " जत्थयत्र जारि जा, निरुदेर निरिज्ये निरुदेससा। जन्यय

जाणित्ना, चडत्यनितिस्ता तस्य ॥ १ । भार निक्षेता यना यस्त्रे जञ्जनय कर्यो । इन छही समीभन्द नय कर्ये हे बह्दता क्रमांक सूख प्रस्टा है ३

आगममार भेड़लाक गुण पगट्या नथी पण अवडय गग-

टी एहवी वस्तुने वस्तु कह ते वस्तुना नापातर एक करी जाणे जेम जीव चतन वथा आत्मा ण्हनोक एक अर्थ कहे ते सग-मिरद नय रहियें, ए नय एक अश ओडी वस्तुने पूरेपूरी वस्त् कहे, जेम तेरमा गुण-

राण केरळी होय तेहने सिद्ध कहे ए नयना भद विलक्कल नथी ए सम्भिन्द नय कहाँ। ही एवभूतनय कहे है जे वस्त पोताने

गुणे रापूर्ण ठे अने पोतानी किया करे ठे तैने ते वस्त् कही बीलारे जेम मोक्षस्थानके ने जीव पहोती तेन सिद्ध कहे जैम पाणीशी \* एकार्ययाची नामोना नामभेदे भिन्न मित अर्थ कर छ तेने समिम्बद नय कहे है.

आगममार

किया करती गी घटा फंडे ए एवधू<sup>8</sup>

द्वारा सूत्रधी लितिये छिय जेम **प**ोहन पुरुषे र्यामा मोदक पुरुष पुछनु के समे कि

यसी की नगरे ते प्रस्य क्यू हु लोक रमु द्र प अधूद्र नैत्व. वसी प्रस्त

स्रोपना प्रण भेट है, १ अयोलोफ, र प्रिष्ठी लोक अर्थिनोक तैया स किहा रहें

निश्रद्ध नेतमे कषु जे जन्नहीपमा रहुए।

हवे सान नयना इष्टान्न श्री अनुवीग

पुरुषु ने निछालोक्सां असरपाना ई ससुद छै तेमा सु कवा द्वीपमा रहे छै तेन

तेरार नगम कहा जे विखालोकमा रहुए म

नश्दीपमा खेत्र घणा ते, तेमा सुं कया खेत्रमा रहे छे, तेनारें अतिशुद्ध मेगम त्रोल्यो के भर-वक्षेत्रमा रहुकु, ते भरतक्षेत्रमा छ म्बड ते ते महस्रा कया खडमा रहे ते तेगरें कतु के मध्यखडमा रहु हु यम कमे पूजता जेल्ले कसु के आपणा देशमा रहु हु, तेगरे करी पुष्यु के देशमा नी नगरमाम घणा ते तो ह किहा रहे ते तेगरें कतु ने हु असुक

तुषा अमुक्त यर बताच्यु तिहा सुत्री निगम नय नाणती अने सम्रह नय चाळी बोल्यो जे मारा भौताना शरीरमां बस्च छु, तथा ज्यपहारतम-बालो त्रीरमो जे सन्तरे बेंट्रो छु तैटळान

गापमा रहु इ, ते गाममा बली अमुक पाडी

विज्ञानामां रहु इ. अने उत्तुसूत्र नपनाने क्यु ने मारा आत्माना असम्याता प्रदेशमं गहु छु पली सादनय कहे ने भारा स्मभारम. रष्टु छु, तमन समिमरहनय कहे जे हु मारा गुणमा रहु छ, अने पत्रभृतनयवारी वह जै नानवर्गन गुजमा बसु छ व दशन ययो नेन सर्व वस्तुषा पहेच

सर्प वस्तुषा षहेषु
सथा वाटने भदेशमान क्षेत्र अमीका वृशी पूछतु ने ए मदेश क्या द्वारानी छे तैसा नगमनय बीन्यों ने छए इन्यनी भदेश वसन एक आसान मदेशमन्ये छ ट्रब्प मेस

छ तेवारे समझ नय चील्यो ने कालद्रश्य है अप्रतेनी छै ते मादे सर्व लोक्या एक सम पणत एक आक्राश द्रव्यना मदेश जहां नधी पाटे काल विना पांच द्रव्यनो मदेश है तैवारें व्यवहारनय बोल्यों के जे इन्य मुरुष देखाय छे तेहनो मदेश है तैरारें राज्यप्रजनय बोल्यों के जे द्रव्यनी उपयोग दें प्रिचित ते द्रव्यनी मुदेश है जो धर्मास्ति-कायनो उपयोग देइ प्रक्तियं तो धर्मास्ति-कायनी प्रदेश है, जो अधर्मास्तिकायनी उपयोगं देइ प्रुछियं तो अधर्मास्तिकायनी भदेश है तैरारे शब्दनय बोट्यों के जे द्रव्यनी नाम लड़ प्रस्थित है इन्यनी अदेश है हैन समिभिरूदनय बोटयो ने एक आकाश प्रदेश म ये वर्मास्तिकायनो एक प्रदेश के, अधर्मास्ति-स्रयनो एक पदेश है अने जीवना अनता दिश है शहलना अनता पर श्रष्टा प्रमुख \$00

अस्तिकायनी एक मदेश है, तैवारे एवं पूर्व नय बोल्पो, जे महेश द्रव्यनी क्रियाएण अगोकार करी देखींय ते समयमा ते मदेश है

इ-यनो गणिये ए पदेशमा सात नय क्या हो जीपमा सात नय कहे छे प्रथम नैरामनयने मने जे गुण पर्यायवत शरीर सहित ते जीय एटले शरीरमा जे बीमा प्रहम नया धर्मास्तिकायादिक उच्य छे ते सर्व जीव माज गण्या तेवारे सग्रहनय बोल्यो जे असै ग्व्यात मदेशी त जीव पटते एक आकाशन

भदेश टल्या बीजा सर्वे द्रव्य चना शणाण तेत्रारे व्यवहारनय बोल्यो, जे विषय ही काम बात सभारे ते जीव इहां धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय, आकाश तथा बीजा पुरु



आगमसार. अनत चारित्र, शहसत्तावत ते जीत ए न

जे सिन्द अवस्थामा गुण इता तैन प्रचा सात नये जीप द्रव्य क्या

हो साननचे धर्म कहे छे नगमनप मोरपो जे सर्व धर्म छ क्मेंद्र सर्व माण ने धर्म कहे हा सग्रहनय बोल्यो जे बडेरा

आदरको त धर्म, एणे अनाचार छोड्ये

योख्यो जे मुरान कारण ते धर्म एण पुष् करणीने धर्म करी मान्यो ऋजुम्बननयमा व वपयोग सहित वैराज्यस्य परिणाम से पर् महियें ए नयमा यथापट्रतिकरणना परिणा

प्रमुख सर्व धर्ममा गण्या ते सिध्यात्वीने पण

पण इत्राचारने वर्भ क्यो, व्यवहारन

धर्मने चाहे है ए नय स्वरूप धर्म नाम धर्म

<sup>।</sup> होप हवे शब्दनय चोटयो ने घर्मनु मृल समितत <sup>(</sup> छे माटे समितत तेन घर्म तेनोरें समिभरूदनय

बोल्यो जे जीव अजीव नमतन्त्र तथा छ

इ पने ओल्स्बीने जीवसत्ता ध्यापे अजीवनो त्याग करे एइयो ज्ञान टर्शन चारिश्रनो छुद्ध-निषय-परिणाम ते धर्म ए नये सानक सिद्ध परिणाम ते धर्मपणे छीना एवध्नुतनय योल्यो के थुइ ध्यान रूपातीत परिणाम क्षपक श्रीण कमें क्षयना कारण ते साधन धर्म जे जीवनो मुल स्वभाव ते वस्तु धर्म जे मोक्षरूप कार्य

नीपने सिद्धमा रहे ते घर्म ए साते नयें धर्म कवो हुने सातनयं सिद्धपणो कहे छे नैगम-वयनी मने सर्व जीव सिद्ध छे नेमके सर्व रुद्ध आयमनार जीवना आठ रचक प्रदेश मिद्ध समान नि मैत्र ते मोट संग्रहनय कहे जि सर्व जीवनी सत्तासिद्ध समान ते एण पर्यायार्थिक नर्षेत्रम्

क्षम् सहिन अवस्था ते द्यालंति हत्याधिर नेपक्ती अवस्था अर्थावार क्री तेवार देवन शास्त्र प्रवाद अर्थावार क्री तेवार देवन शास्त्र योग विद्या क्षित्र प्रवाद क्षेत्र प्रवाद क्षेत्र व्याप क्षेत्र अर्था तिह्व प्रवाद क्षेत्र अर्था तिह्व प्रवाद क्षेत्र अर्था तिह्व प्रवाद क्षेत्र अर्था ते तिह्व प्रवाद क्षेत्र के अर्थ प्रवाद क्षेत्र के अर्थ प्रवाद क्षेत्र के अर्थ प्रवाद क्षेत्र के अर्थ के व्यापनी विद्या प्रवाद क्षेत्र के क्ष

सत्ता ओळरी अने व्याननो चपयोग पण् तैन वर्षे छे ने समये ते जीर मिद्ध जाणवी ए नये मगर्गीत जीव सिद्ध समान छे ए क्यु हो जञ्दनय बोल्यों ने श्रुद्ध श्रुम ध्वा ्रेनागिदिक निक्षपे ते सिद्ध तैवीं

tow समिभिरुद्वनय बोर्खों जे नेवलक्षान केवल-दर्गन, ययारयातचारित ए गुणे सहित ते सिद्ध जाणमा ए नये तैरमा चरदमा गुणटा-णाना केवलीने सिद्ध नहा अने एउभूतनय

आगमसार,

मरे उक जेना सकछ कर्म क्षय थया लीकने भने निराममान अष्टगुण सपस्य ते सिछ गणा ए रीते सिद्ध पदेसा नय कहा प्म सात नय मिल्या समकीति है अने जे ण्क नयने ग्रहण करे ते मिन्यात्वी ठे ए सुनै नय सिंह ते वचन प्रमाण है अने ए सॉर्न नयमां कोइ पण नयने उत्थापे तेनु वचन अम्माण 🕏 हो ममाणनो जिचार कहे है प्रमाणना ये भेद छे एक मत्यक्ष ममाण बीज परोक्ष

आगंधसार प्रमाण तथा ज जाव पाताना उपयोगर्थी

100

इन्यने जाण त मन्यत भगाण उद्दियं ने क्वली छ इच्य अल्या, अवाणे जाणे तथ हर्षे त मारे राज्ञान त सर्वधी प्रसन्न हार है, अने मन पर्यवकान ते मनीवर्गणा प्रसार जाणे तथा अयिशान त प्रदूल इब्पने मत्पा जाणे बांडे प ने ज्ञान देश मत्यक्ष छ पी

छमस्थकान ते सर्व परोक्ष जमाण है इय परोक्ष प्रमाण कहे छै मतिज्ञानन

अने अतहाननी उपयान पराक्ष प्रमाण ममक ने शासना बच्धी जाणे ते परी ममाण कहिये ते परोक्ष श्रमाणना श्रण मे

हे रे जनुमान प्रमाण, र आगम प्रमाण, चपमान ममाणा, नमां अलुमान एटले मीर् जेम देवलोक तथा नरफ निगाद रिगरेनो विचार आगमधी नाणियें जेये ते आगमममाण अने कोडक वस्तुना दृष्टा त आपीने पस्तुने ओल्रावर्षा ते दृष्यान नमाण जाणवो प् ममाण कथा हो सत् असत् पमधी सप्तभंगी कहें जे १ स्यात् कहता अनेकातपणे सर्व अ-पंता लेड जीवद्रव्यमा आपणा त्व्य आपणो स्त्र आपणो काल आपणो मात्र एम आपणे

गुण पर्याये जीन के तेम सर्व इन्य आपणे गुणपर्यायें के ते स्यात् अस्ति नामा पहेलो

भागो पपो

सहिनाण देखीन जे झान थाय जेम धुमाडो देखीने अग्निजु अजुमान थाय अने आगम एटळे बाखुनी साखर्था जे वात जाणियें ११० आगमसार. २ जे जीपमा बीजा पाच ब्रव्यना रे,

इब्य व सेत्र ३ व्याल ४ भाग ते पद्रव्यनाँ गुणपर्याय जीवमा नथी। घटले प्रस्टव्यना 🏵 णना नास्त्रिपणा सर्व इव्यवा छ ए स्यात् नाम्नि योगा भाग वया

३ द्रव्य स्वराणे अस्ति अने पर गुणे नास्ति ए वे भागा एक समये इब्यमा छ जेम ने समये शुद्ध स्वगुणनी अस्ति छै तैन समये परगुणनी नास्ति वण ठ, माटे अस्ति

नास्ति ए वेष्ट्र भागा भेला हे ते स्थात अस्ति नास्ति तीनो भागो वयो

र अस्ति अने नास्ति ए वेह भागा एक समयमा है तो बचने करी अस्ति पटली घोष्टनां अमर्यता समय त्यांग तेथी नास्ति आगमसार

भागो कहारे तो अस्तिपणी नाज्यो माटे प्रम अस्ति कहेना थका नास्तिपणी तैन

समये इब्यमा है ते नहीं कहेवाणी माटे मुपा बाइ लागे तेमज नास्ति कहेता अस्तिनी म्पाबाद लागे माटे पचने अगोचर ठे एक समयमा बेह बचन बोल्या जाय नहीं केमके एक अक्षर बोलता असल्याता समय लागे र्र माटे वचनथी अगोचर रेते स्यात अव-

क्तव्य ए चोथो भागो कहाो ५ ते अवक्तव्यपणी ए वस्तुमा अस्ति-धर्मनो पण रे माटे स्यात्अस्ति अत्रक्तव्य पाचमो भागो कहा

६ तेमन नास्ति धर्मनो पण अवक्तव्य-

क्तर छहो भागा जाणवी ज ने अस्तिपणी सचा मास्तिपणी रेष्ट र्रम प्रसम्मे बस्तु म'चे डेपण यर्च

नथी अनकत्व हे बाटे स्वाद अस्तिनाहित-युगपन् अवक्त व च सातभी भागी वधी हर च सात भागा जिल्ला तथा अति स्वपंपामा लगाइ उ १ स्वाद निस्य २ स्पाट

स्वपणाया लगाड उ १ स्वात् नित्य २ स्वात् अनिय ३ स्वात्तित्यानिय ८ स्वात् अवर्त च्य ५ स्वात्तित्यानिय ६ स्वात् अवर्त च्य ५ स्वात्त्रित्यानिय युगात्र अव अस्वात् नित्यानिय युगात्र अय स्वात् प्रमाय प्रभावित्य युगात्र अय स्वात् प्रमाय प्रभावित्य युगात्र अवे , आगमसार ११५ सिद्ध मध्ये नय नयी तोपण सप्तभॅगी तो सिद्धमा छे

हो सत्ता ओल्खाननाने निभगी कहे छै १ मिव्यात्म दशा ते नावकदशा २ सम-कित गुणडाणाची माडीने अयोगी कवली गु-णहाणा सुत्री सातक दशा जाणती ३ सर्न फर्मधी रहित ते सिद्ध दशा ? गाननो जाण-पणों ते जीय गुण २ तेनो ज्ञाता ते जीव. <sup>3</sup> हेप ते सर्व द्रव्य, १ भ्यान ते जीवना स्व-रपनो २ ते याननो व्याता जीप ३ ध्येय आत्मानो स्वरूप, १ कर्चाते जीव २ कर्प तै एक मोक्ष जीजो यन्त्र ३ किया ते एक सपर बीजी आसत्र ? कर्म ते चेतनाने कर्म वतना परिणाम २ कर्मेड फल ते चेतनाने

118 जे कर्म उदयना परिणाम १ ज्ञान चैतना तै जीवती स्वगुण ने आमाना त्रण भेद छे ? अज्ञानी जीव शरीरादिक परतस्त्रने आत्म प्रदिसं परी माने है ते पहेली यहिरात्मा है देह सदिन जीव छ ते पण निश्ये सत्तागुण सिद्ध समान 'डे ण्टमें पोताना जीवने सिद्ध समान परी ध्या तेत्रीजी अतरात्मा जाणवी

शाममार

गीनो निचार क्यो जडले आड पसनी वि चार कहा इरा पक्क द्रव्य मध्ये छ सामान्य गुण रेते कहे छे पहेलो अस्तित ते जे छ हर<sup>ू</sup> ग्रण पर्याय मदेश करी अस्ति है

३ क्म रापानी कालज्ञान पारुपा ते अश्वित मथा सिद्ध सर्व परमातमा जाणवा ए निम आगमसार. ११६ तैना धर्म, अवर्म, आफाज अने जीव ए चार हर्व्यना असरयाता प्रदेश मिस्या स्वय थाय ठे अने पहलमा राध बयानी शक्ति ठे माटे

ए पाच द्रव्य अस्तिकाय है अने हही काल र्षिनो समय कोइ कोइथी मिलतो नथी कै-के एक समय निणस्या परे तीजो समय भा छै माटे काल अस्तिकाय नधी द्रव्यमा ा अस्तित्वपणी करो। २ वस्तुत्व करेता वस्तुपणी करे है ते इन्य छए एकडा एक क्षेत्र म ये रहा है, एक भाकाश मदेशमा धर्मास्तिकायनो एक मदेश रयो ठेतथा अनतात्माना अनता भद्दा रह्या ठे पुटल परमाणु अनता रह्या ठै ते सर्व पोतानी सत्ता सीना थका रहा है पण कोइ द्रव्य

315 साथ मिला जाता नथी त पस्तुपणी ३ द्रायाच पहला द्रव्यपणी वे सर्व द्राप

पातपातानी किया वर एटक धर्मास्तिनी यमा चलनगुण ते सत्र प्रदेश मध्ये हैं सूत्र षालें पुरल तथा जीउने चलाववारपक्रिया परे है, इहा कोड पूर्व जे लोगानत सिद्धी त्रमा धर्मास्किय छ न सिद्धना जीवने चला-

षवापणो करता नवी तेन क्प र तेने उत्तर फाहे ठे ने सिखना नार अफिय है मारे चालता नयी पण ते क्षेत्रमा ज सहम निगी दना जीय तथा पुढ़ल छ तहनी धमास्तिका घला है मारे पातानी क्रिया बरे है, तेम अधर्मास्तिकाय जीव तथा शहरूने स्थिर र

नवानी किया करे है, तथा आकाश दें

\$ \$60

फोड इन्य नयी तो अलोकाकाश क्या इन्यने अवगाहदान आपे ठे नेने उत्तर कहे छे जे अलोकाकाशमा अवगाह करवानी शक्ति तो स्रोक्ताकाण जेवीज ठ परतु तिहा अवगाहनो दान लेनार इच्य कोड नथी माटे अवगाहडान फरती नथी अने प्रदृष्ठ द्रव्य मिलवा विख-खारूप क्रिया करे है तथा काल्डब्य वर्तना रुप क्रिया करे छै अने जीव द्रव्य ज्ञान ए-सण जपयोगरूप किया करे हे एम सर्व इच्य पोताने परिणामी स्वसत्तानी किया करे उ ए द्रव्यत्त्रपणी कडी ४ मनेपत्व कहेतां मनेपपणो जे छ द्र- आगमसार व्यमा ममेपपणो छै, तेनी ममाण कैनकी, पो-ताना तानवी करे छै, जे धमास्तिमाय तथा

अथपानितराय अने आकाणानितकाय एकक इच्च ठे अने जीवइच्च अनता छे नेहनी गणति पढ़े छ सही भनुष्य सम्पाता ठे, असबी मनुष्य असम्पाना ठे, नारकी असप्पाना ठे, दवता असप्पाना छे, तिर्पंच पढीन्द्रिय अस प्याता छे, बेडन्द्री असम्पाना, तेहनी चौरंडीय असप्पाता ठे तार्वाण्य

27/

चौर्डीय असरयाता उ पृथ्वीकाय अस रयाना, अवकाय असस्याता, तेउशाय असस्याता, गागुगाय असस्याता, मरयेक असस्याता, गागुगाय असम्याता, मरयेक बनस्पति नीव असस्याता, त थर्मा सिष्टना जीव अनता ते यक्षी वाट्य नियोदना जीव अनतागुणा एड्ले वाद्य नियोद ते कृद्यून अगमसार ११९
आदु स्रण महुस्स एहने सुद्देने अग्रभानें अ-नृता जीव ठे ते सिद्धना जीववी अनतसुणा ये अने सुस्पनिमोद सर्वथी अनत सुणा ठे. सुस्पनिमोदनो विकास करें है जिस्सा की

ग्रस्पनिगोडनो विचार कहे है जेटला ली काराशना प्रदेश तेटला गोला है ते एकेक गोलामा असम्याता निगोद है निगोद श दनो अर्थ ए डे जे अनता जीवनो पिंड भूत एक शरीर तेध्ने निगोद कहियें ते एकेकी निगोदमध्ये अनता जीव है ते अतीत पार्लना सर्वे समय तथा अनागतकालना सर्वे समय अने वर्तमान कालनो एक समय तेने मेला करी अनन गुणा करीये एटला एक निगोदमा जीप है एटले अनता जीव है प ए ससारी जीत एककाना असरयाता प्रदेश

## े अने पत्रका मटेश अनंति कर्म वर्गणा

लागी है ते एकेक वर्गणा मध्ये अनता शुक्रल परमाणु है वम अनता परमाणु जीव सार्षे स्मान्या छे ते धरी जनन गुणा पुहल परमाध जीवयी रहित छुटा उ

गोलाय असरिकना, असम्ब निगोपओ हाइ गोलो। इकिंगि निगोष,

अणतजीया सुणेयवा ॥ १ ॥ अर्थ--छोक महि असरपाना गोलाछ,

एकेका गोला मध्ये असम्बाति निगीद छै।

प्रकेष निगोदमां अनता जीव छे॥

सत्तरस समहियाकिरी । इमाश्रपाश्रमि हति सङ्गभवा ॥



## १२० भागमसार भस्य जनाजीया,

जेहि न पची तमाउपरिणामी ॥ उवज्जनियचयति य, पुणावि नत्येर तत्त्येर ॥ १ ॥

अर्थ—निगोदमा अनता जीव पहरा है, ज जीव बसवणो पहेला किरारें पान्या न म अनवो काल पुत्र गयो अने अनवो

राज्य तथा ने तीर सारसर निमन अपने है अने निहान चये है एम एक नि मोदमा आता जीव है स निमादमा में भेदें है एक स्वास्त्र सारी जिल्लोक अने मीती

गोडमा अपता जीव 3 त निवादना पे भेद छै एक व्यवहार राष्ट्री निगोद अने बीजी अय्यवहारराजी निगोद तेया जे वादर एर्टें न्दिपणो यार्वे नस्पणो पामीने पाछा निगों

माइ पट्या है ते निकोटिया जीवने

पण काले निगोदमाधी निमल्या नथी ते जीव अञ्चयदारराजीया कहिये अने इहा मनुष्य-पणायी जेटला जीव कर्म खपावीने एक समयमा मोक्ष जाय है तेरला जीव तेन समये अन्यतहारराश्ची सदम निगोदमाथी निकलीने वया आये है जो दश जीन मोक्ष जाय तो दश जीव निकले कोडक वेलाए भव्य जीव ओछा निकले तो ते टेकाणे एक वे अभव्य निकले पण व्यवहारराशीमा जीव कोड वर्वे पट नहीं एवा निगोदना असरपाता लोक-माहेला गोला ते छदिशीना आच्या प्रद्रन्ते आहाराटिपणे छे है ते सकल गोला कहेवाय

अने छोक अतना मदेशे ने निगोदना

व्यवहार राश्चिया कहियें, अने जे जीप कोड

धगुरलपु अतम्यातो है अने धीना परेशर्प

1 5 5

अन्ता अगुरच्य है, तीजा बढेशमा सेरुयारी

अगुरलपु हे एव जसन्त्वाना परंपामी अगुरह

गुपवाय घटनो प्रथमा रह छत अगुरस्यु पर्माप घल ठेते के मदेशमा असरपातो है ते मदेशमां अनतो धाय 🤊 अने अनवाने हेवाणे अस

रपाती थाय है एम लोक्नमाण असम्मान

मदेशमा शरीग्रो समञाले अगुर लघु वर्षाप

फिरे छे ते जे मदेखमा असरयाती फिर्निने

अनती थाय ठे ते प्रदेशमां असर्यातपणानी

विनाश ३ अने जनतपणानो उपत्रदो उँ अने

~्रे गुण ध्रुव छे एम उपनती वि~ े अने धुत्र ए त्रणे परिणाम छे अधर्मा

स्तिकायमां पण ए जणे परिणाम असरयात भेदेशे सदा समय समयमा परिणमी रहा। है तैमा पण उपने विजये अने थिर रहे 🤌 एम 'आकाशना अनता प्रदेशमा पण एक समये रण परिणाम परिणमे है अने जीवना अस-रयाता प्रदेश है ते सध्ये पण उपने विणशे 'थिर रहे (७) तथा पृहस्त परमाणुमा पण समये समये थाय है अने कालना वर्शमान समय फिटीने अतीतकाल थाय है ता तै समयमा वर्त्तमानपणानो जिनाश रे अने अवीतपणानो चपजवो ठे काल पणे ध्रव ै ए स्वल थकी जत्पाद व्यय श्रुवपणी कयो अने वस्तुगते मृत्रपणे ज्ञेयने पत्रदो माननो पण ते भासनपणे परिणमनी बाय

आगममार रे३० १ अगत भागरुद्धि, २ असम्यातभागरुद्धि ३ मत्यानभागरदि, ४ मत्यानगुणरहि

५ असरचानगुणरुढि, ६ अनतगुणरुढि 🚏 छ मराराी दानि कहे है. ? अननमागद्दानि असरयातभागहानि, ३ वट्यानभागहानि, र सरयानगुणहानि, ५ असरयानगुणहानि ६ अनतगुणहानि ए रीते छ भए।रनी हरि तथा छ मक्कारनी हानि ते सर्व इब्यमा मर्

समय समय थड रहा छे हदि ते उपमा अने हानि त व्यय कहिये ए अगुरस्रपूर्णा क्यो नहा गुर तथा नहा छछु ते अगुहण्यु स्वभाव पहिचे च सर्वे द्वाय बध्ये छै, ते थे

भगवती सूत्रें " सन्बदन्त्रा सन्बगुणा सन्बग

सन्वयन्त्रा सन्बद्धा अगुरमहुआए

अगमसार भगुरुलघ स्वभावने आवरण नथी तथा नात्मा म ये जे अगुरुलघुगुण ते आत्माना

सर्वे मदेशे क्षायिक भाव थये सर्व गुण सामा-न्पंपणे परिणमे पण अधिका ओछा परिणमे नहीं ते अगुरलघुगुणचु मवर्तन जाणगु ते भगुरुवधु गुणने गोतकर्म रोके छ ए अगुरु-हमु स्वभाव ते सर्वे इच्यमा उ

🙏 हवे गुणनी भावना कहे हे तिहा जेटला उए द्रायमा सरीग्वा गुण है ते सामान्य गुण हिंदे। अने जे गुण एक द्रव्यमा छै अने शिता द्रव्यमा नथी ते निशेष गुण कहियें जे ण कोइक इन्यमा 🤊 अने कोरक इन्यमा थि ते साबारण असाधारण गुण कहियें रम ए छ इच्यमा अनतगुण, अनन्त पर्याय,

अनन्त स्त्रमात्र सत्ता द्वात्यता है जिम भी राखी भगवत नरुष्या ते सर्व जे रीने हैं।

आगमसार

रात सहरणा पूर्वक यथार्थ उपयोगणी अन क्षानादित्रथा यथार्थपणे जाणता सहदत्त प्र निधयक्षान माशतु कारण है जे जीव कान पान्यों त जीव विरति करे है ते चारिक कहिंप पानतु कल विरतिपणी है ते मोक्षतु तत्वराल कारण है

790

वर्ताल कारण छ हर निश्चय चारित्र अने व्यवहार चा रिजनो विचार कहे छ तथा प्रथम व्यवहार जारिज ने ले पाणानिपातविरसण प्रमुख पष

यारित ते के माणानिपातियसम्य ममुख पर्ष महाततस्य ते सर्व विरति कहियें अने स्पृत पविर व्यवादिक श्रावकना बार

ं वे देश निरति चारित्र जाणबु ए व्यव-

आगमनार. १३३ हार चारित सुखतुँ कारण है एवी करणीरप श्राह्मना बार जन अने यतिना पाच महाजत

तं अभव्यने पण आो तेयी देवतानी गति भाने पग सकाम निर्माराजु कारण न थाय हा। भोह पुठे के मो स्तु कारण नथी तो पट्छ कष्ट मा वास्ते किस्यें ? तेने उत्तर जे

त्याग युद्धि निश्चय हान सहित चारित्र ते मोसनु रारण 🤊 माटे निथय चारित्र स-हित व्यवहार चारित पालतु ते निश्रय चारित क्हें छ ग्ररीर, इन्डिय, विषय, कपाय, योग र मर्ने प्रवस्त जाणी छोडवा तथा आहार ते पुरुष वस्तु जाणी छाडवो आत्मा अणा-हरा है ते माटे मुजने आहार करतो घटे गहीं जाहार ते पुहल छे, आत्मा अपुहली

छै ते माटे त्याग करतो तहप जे तप ते तप, निनय चारित्रमा जाणत चारित परेता

त्मस्यरूपने विषे एक्ट्यपणे रमण सन्मयसा स्वस्य निशास तत्रातमव ते चारित कहिमें ते चारितना ने भेद है एक देशनिरति, बीड सर्वे विरति तिहा देश विरति कहेता आव-

घयलता रहित थिरताना परिणाम अने आ

फना चार त्रत ते बार त्रत निश्चय तथा व्य बहारथी कहे 🕏

? भागातियात जिम्मण जत तै परजी-वने आपणा जीन सरीखो जाणी सर्न जीवनी रक्षा करे त व्यवहार दया वह माटे "यवहार

े व विरमण वत जाणव अने जे ।। जीव की वश पड़यो दुःखी थाप छै

ते आपणा जीवने कमेव रनधी मुकावत अने भात्म गुण रक्षा करी गुण दृद्धि करवी ते स्पदया चबहेतु परिणति निवारि स्वरूप गुणने प्रगटपणे करवा जे गुण प्रगट थयो ते राखवो एटले ज्ञाने करी मिथ्यात्व टाली आपणा जीवने निर्मल करे ते निश्चयधी माणातिपात विरमण त्रत कहिये २ मृपाबाट जिस्मणजत कहे है जुड़ बचन विलकुल वोल्यु नहीं ते व्यवहार मृपा बाद विरमणत्रत, हवे निश्चय कहे छै जे पर पुहलादिक प्रसाने आपणी कहेवी ते मपाबाद वचन छै अने जीवने अजीव कहे तथा अजी-वने जीव कहे इत्यादिक अज्ञान ते भाव पूपाबाद छे. अथवा सिद्धान्तना अर्थ खोटा

करे ए मृपायाद जणे छाज्यो त निश्रम मुप्त गाद विरमणतन वृद्धिंग, एर्टल बीजा अरती

325

दानान्य प्रत जा मान (भाग) हो हेनी

मात्र चारित मग थाय पण ज्ञान दर्शनना

भग न थाय अने जेण निधय प्रपारा

रिरमणनो भग वरारी तेणे समक्ति तप

ज्ञान अने चारित्र व त्रणनी भग करची त्तया आगममा एम कल् छे जे एक सापू

चीथो प्रत भग परयो अने एक साध्ये वीन

मृपाबाद जत भग करची ती जेंगे चौथा भग ररघो ते आलोयण लेंद्र शुद्ध थाप प

ने सिद्धान्तना अर्थनो मृपा उपदेश आपै

पालोषण कीचे पण श्रद्ध थाय नहीं

वे अदत्तादान विरमण जत करें

8 50

वस्तु घणीना दीवा विना लेवी नहीं ए व्य-वहारथी अदत्तादानविरमण प्रत जाण उ अने ने पाच इदियना त्रेतीस विषय, आड कर्म-वर्गणा इत्यादिक परवस्तु लेवी नहीं तथा तेनी बाछा न करवी ते आत्माने अग्राय ठे माटे ते निश्चपूर्थी अटचाटानिरमण प्रत कृहिंपें इहा कोई पूछे जे विषयनी अने रमेनी बाजा कोण करे जे? तैने उत्तर जे पुण्यने भेलो लेवा योग्य कहे छैते जीव र्मिनी वाडाकरे 🤊 जे पुण्यना ४२ मेट 🎝 न्वार कर्मनी श्रुभ मकृति है एटले ने न्या र्षि अदत्तादान तो नथी लेता पण अंतरग

आगमसार

१३८ जागममार पृण्यादिक्ती पाछा उत्तनेनिश्चव अदतारान रहेत है

र मेंशुम विरमणत्रत कहे छै ते पुरुष परस्त्रीनो परिहार करे तथा ने स्त्रीपरपुरुषनी परिहार नरे शहा साधुने स्त्रीनो सर्वधा स्पाण ते अमे गृहस्थने परणेत्री स्त्री मोकली ठेपर

्रजन पुरुष्य प्रश्ना क्षा वाक्षण उर्ज स्तिनो प्रयाताण हे वे व्यवसार्थ्य मैधुनर्छ विरमण करियं अने ज विषयता व्यक्तिष्य तथा ममता हुट्यानो त्याग, प्रभाव वर्णाण्डि परद्रव्यना स्त्रामि माहिक तेनो अयोगीपणी

शासा दश्याण ज्ञानादिक सी भोगी है असे प्र प्रश्लोंघ वी अनता जीवनी पढ़ हो तेने वेग पूर्वीते त्याग निजयधी मैबन विरम्ण लेणे बाज विषय छाडची हे अने आगमसार १३६ अतरम लालच छुटी नथी तो तेहने ते मेथु-नना कर्म लामे है

५ परिव्रह परिमाणनत कहे है परिव्रह धन-ग्रान्य-डास-डार्सा-चतुष्पड जमीन-पस्र आभरणनो त्याग तेमा साधुने तो सर्पधा परिव्रहनो स्थाग ठ तथा शायकने इन्छ। परिमाण है जेटडी इच्छा होय तेटलो परि-ग्रह मोकलो राखे बीजानी बिरति करें प 'न्यवहारथी कह्यो अने जे भाव कर्म रागद्वेप अज्ञान द्रव्य कर्म ज्ञानानरणीय प्रमुख आङ किम अने शरीर इन्द्रियनो परिहार एउछे 🗘

कर्मने जाणी छाड़नों ते निश्चयधी परियु-हनो त्याम एटळे परवस्तुनी मूर्छा छाटची त्रेणे मुर्छा छोडी तेणे परिग्रह छोटघीन विना जावनी वय बर्वो पारका नार्त भ

रभ ममुख बरनानी आज्ञा ममुख आपना नै मिन्यान्य अभिरति कपाय योगची वधाय है

ध्यवहार अनर्थटह अने श्रभाशभ वर्षत

अन्धदह

पिक कहियें

तेने जीव आपणा करी जाणे ए निथयण

९ सामायिक जत कहे है जे मन वर्ष भागाने आरमधी टार्झाने तेने निरारभ<sup>पणे</sup> बर्चावे ते व्यवहार सामायिक जाणवी अने जे जीव शान, दर्शन, चारित्र गुण विचारे सर्व जीव सत्ता गुण एकसमान जाणी सर्व स्यु समतापरिणाम ते निवय समतारप सामा

१० देशानगाशिक जत करे के जे मन

; वचन काय योग एक टोर करी एकस्थानके वैसी वर्ष यान करवो ते ब्याद्वार देशावगा-विंक कहिये अने जे श्रुतनाने करी छ द्रब्य

**१**23

सागमसार

।विक काह्य जन जा अवनान करा छ द्रव्य औरम्बीने 'पूर्व द्रव्यनो स्थाग करे अने ज्ञान वर्जारने ध्यावे ते निश्चय टेशारमाशिक प्रत कहियें

११ पौषध जत कहे छे ले चार पहीर प्रथम आड पहोर सुधी समता परिणामें सामध छोडी निरारंभपणे सहाय पानमा मुर्चते ते न्यवहार पोवाह किहमें अने पोताना लीवने हाल पानधी पोपाने पुष्ट करे ने निश्चपत्री पौषध जत किहमें जीवने पोताना हव-पूर्ण करी पोपीने तैणे पौपज किहमें
१२ अनिधिसविभाग जत कहे 'छे जे

188 पोगहने पारणे अथवा सदा सर्वदा साधुने तथा जनपर्पितावकने पोतानी शक्ति ममाणे दान देव ते न्यवहार अविधिसविभाग करिये अने पोताना जोवने अथवा शिप्यने ज्ञानतु टान त भणवु, भणावजु, सुणवु सुणावजु, त निधयथी अतिथिसभाग व्रत कहिये एटले श्रावक्रमा बार जत कहा ते समकित सहित जे निधय तथा व्यवहारथी बार प्रत परि

ते जीवने पावमे शुणगाणे देशवरित आपक कहिर्षे देन कडता देशवर्की योडीची त्रति पणा छे माटे अने यतिने सर्वयो त्रतिपणो ठे तैथा पाच महात्रत ठे सायुने पाच महा त्रतमा सर्वे त्रत आज्या ए निक्ष्य स्थागस्य

यान सत्रर निर्जारामा थिरताना परि

णाम ते निश्चय चारित तेना एक उत्सर्भ रोजो अगराद ए ने मार्ग छे तेमा जे उत्कृष्ट

380

त्रीश्ण परिणाम ते उत्सर्ग रास्त्रवाने कारण-हप ते अपवाद-उक्तच ॥ " सघरणमि अ-सुष्ठ, दुझवि मिन्द तदेतयाणहिय ॥ आजर

दिह तेण. ते चेवहीय असघरणे " ॥ १ ॥

आग्रमार

पटले ज्या सुती सात्रक मांचे नायक न पट त्या सुधी जेहनी ना कही ते आदरबो नहीं अने जो सात्रक परिणाम रहेता न दीटा तेरारे जेहनी ना ते आचरे तेने अपवाद मार्ग किंदियें जे आत्मगुण राखवाने करवी ते अपवाट अने गुणीने रागे भक्तियें करवी ते

प्रतस्त ए वे तो साधन छे अने जे औटयि-कने असमग्राधां करच ते अतिवार है -तथा

35 वलो अने जीदयिक माटे,आमक्तपणे कर्ख पडिवाइ छे ते माये अपवान मार्ग ते परि

हते चार ध्यान वहे है ? आर्त यान, १ रोज यान, ३ धर्म-यान, ४ शुक्रण्यान तिहा पहेला वे भ्यान ते अशुभ वहियें अने पाउला वे यान ते अस छै, जे एक ध्येपने रिपे अतर् मुहूर्त विचनी जवयोगनी तन्मप पकाग्रपणे थीर रहेवो तै ध्यान अने केवलीने योगनी रोकवी ते ध्यान उक्तव. अती मुद्द त्ता मित्ता चित्तावत्थाणमेग वर्ध्यामा ठउमत्याण झाण, जोगनिरोही जिणाणत ि । मनमा आहट दोहटूना परिणाम ते आ कहियें तेना चार पाया छे १ भार

गम दृह रह तेम आज्ञार्थ करवी

पित्र, सञ्चन, माता, पिता, स्त्री, पुत्र, त्रन, ममुख इष्ट बस्तानो वियोग ययायी विलाप फरे ते परेळी इछ वियोगनामा आर्व यान तथा २ अनिष्ट जे भ्रहा दुःखना कारण, दामन दरिद्रीपणी, तथा क्रुपुतादि मलवाथी मनमा दुःरा चिता उपजे ते अनिष्ट सयोग नाम आति यान ३ अरीरमा रोग उपना थका दुःख करे, चिंता घणी करे ते 'रोगर्चि-तानाम अर्ति यान ४ मनमा आगलना उल-तनो घोच करे जे आ वर्षमा आ काम करश्र. आवता वर्षमा अमुक काम करन्नु तो अमुक लाम यंगे अध्या दान शील तपनु फल मागे ने आ भवमा तप की तो है माटे आवते भने रह चक्रवर्षिनी पदवी मछे पहनी आगला प्यान कहाये, ए धर्म करणीना फलनु निधा णु समिति न करे ए आर्तेश्याननी चौयी पायी जाणवी ए आर्त्तत्यानना चार में पद्मा ए विर्वेच गतिना काम्ण डे. ए ध्यान

ढाणा सधी होय जे फडोर परिणामञ्ज चितवन ते रौ इध्यान तेना चार भेट है ? जीवहिंसा क

ना परिणाम ते पाचमा अथवा छहा गुण

र्रा दर्प पामे अथवा बीजो कोइ हिंसा क

रतो होय तैने देखी गुजी थाय अयन यदनी अनुमोदना करे ते हिंसान्त्रवी रोद २ शृङ् बोलीनं मनमां हर्प मापे के

आगमसार. जुओ म केत्रो कपट केळच्यो मारा जुटाप-णानी खपर कोइने पडी नहीं, एवी मृपावाद

र्वपरिणामते मृपालुवधी शौद्रध्यान, ३ चोरी करी अथवा ठगाइ करी मनमा खुशी थाय क मारा जेवो जोरावर कोण छे, हु पारको

माल खाड छ एवी परिणाम ते चौरात्त्वानि रौद्रध्यान ४ परिग्रह वन धान्य परिवार षणो वधवानी लालच होय ते धन अथवा इडवने माटे गमे तेष्ठ पाप करे अथवा घणो परिग्रह मिल्याथी अहकार करे ते परिग्रहरक्ष णातुत्रधी रोद्रंध्यान ए रौद्रध्यानना चार भेद कया ए ध्यान नरक गति पमाडवार् कारण छै महा अञ्चयकर्भन्त कारण छे ए पौचमा गुणवाणा सुधी छे अने छहे सुणवाणे

१५० आगमसार. पण एक हिंसानुवर्गीरोद्रन्यानना परिण

काइक जीवने होय

हा घर्षः यान कहे है जे ज व्यवहार हिं
यारप ते कारण घर्ष तथा शुनज्ञान अने चा
रित्र ए जपादानपणे साधन खेत था रल
त्या भेदपणे ते जपादान गुग्ह ज्यवहार जस
गाँउनुयाची त अपनाद वर्ष जाणतो अने अ
मेद रलनवर्षा ते साउन हाट निध्यनमें च

र्गाऽज्ञुयाची त अपवाद वर्म जाणवी अने अ भेद रत्नत्रयी ते सावन शुद्ध निधयनमें व रसग् धर्म अने (धम्मो वत्श्रु सहाचो) ने वस्तुनो सत्तागत शुद्ध पारिणानिक स्वगुण मष्ट्रित कर्नाटिक अनतानद रूप सिद्धानस्थाय रह्यो त एनभूत बत्सर्ग बपादान शुद्धधर्म, त धर्मतु भासन रमण एकाग्रपणे चितन तन्मय जपयोग एकत्वनी चितवत्री ते भर्म

? आज्ञाविचयप्रभाषान ते जे बीतराग देवनी आज्ञा साची करी सप्तहे एटले भगवते छ द्रव्यर्ते स्टब्स्य जय प्रमाण निक्षेपा सहित

सिंद्ध स्वरूप, निगोद म्बल्य जे कहा तैय सरहे. बीतरामनी आज्ञा नित्य अनित्य स्या द्वारपणे निश्रय व्यहारपणे माने सद्दहे ते

आहा प्रमाणे यथार्थ खपयोग भागन ययो तेने हर्षे फरी ते उपयोग मध्ये निर्धार, भा-

सन, रमण अनुभवता, एकता, तन्मयपणी ते भाशविचय वर्षध्यान कहिये

र अपायतिचयवर्भ यान ते नीवमां अ-श्रद्भणे क्मेना योगधी संसारी अवस्थामां अनेक अपाय कहेता दूपण छै ने अज्ञान,

## गम, द्वेप, ऋषाय, आखन ए मारा नथी. हु

१५२

एथमी न्यारी छ ह अनतज्ञान, दर्शन, चारित, बीर्थमयी, शुद्ध, बुद्ध, अविनाशी ष्टु अन, अनादि, अनत, अक्षर, अनक्षर, अचल, अकल, अवल, अग्रह्य, अनापी, अरपी, अकम्मां, अव रक, अनुदय, अनु दीरक, अयोगी अभोगी, अभेदी, अरेदी, अछेरी, अखेदी, अकपायी, असलाइ, अले

ची, अधरीरी, अणाहारी, अव्यानाव, अन प्रमादी, अगुरुलघु, अपरिणामी, अतीन्द्रिय

विरुद्ध, अनाश्रव, अलख, अझोकी असमी

पनो श्रद्ध चिटानद मारी

अमाणी, अयोनि, असमारी, अमर, अपर, अपरवार, अन्यापी, अनाश्रित, अरूप, अ जीव ठे, पहनो एकाग्रतारूप ध्यान ते अपा-यतिचयवर्षध्यान जाणनी

इ विपाकित्य धर्मध्यान कहे है ले एहतो जीन है तो पह जो जीन है तो जित कर्मनो निपाक वित्तवे ले जीवनो झानगुण ते झानावरणीय कर्मे दाव्यो है अने दर्शना-वरणीय कर्मे दर्शनगुण दाव्यो है, एम आड कर्में जीवना आड गुण दाव्या है एटले आ समारमा अमना अक्षा जीवने ले सम्बर्धाय है

ससारमा भमता थाना जीवने जे छरवह्य स्व ठे वे सर्व कर्मना कीवा ठे बाटे छरव उपने रा-पर्य नहीं अने दुःख उपने दिखगीर थर् नहीं, कर्म सम्हणनी प्रकृति, स्थिति, स्त, अने परेशनो वध, उदय, उदीरणा, तथा सत्ता,

चित्रन एकाग्रता परिणाम ते विपाकित्रचय

आगमसर्गिः

४ सस्थानिवयधर्मध्यान कहे है है घडद राजमान लोकन स्वरूप विचारे ने 🕻

लोक त चउदराज अचो ठे ते मध्ये सातराज अ गोलोफ है निचमा अहारसी योजन मनुष्य क्षेत्र निज्ञां लोक है ते ऊपर काइक ऊणी

सातराज अ बेलोक है तेमा सर्व वैमानिक देवता वसे छे अने उत्परें सिद्ध शिला सिद

क्षेत्र हे ए रीते लोकन मसाण है ए लोकड़

ि व इच्य मध्ये गुणपर्यायतु अवस्थान

षरी फरस्यों है, एउ ने छोक स्वरूप तथा लोकने विषे पचास्तिकायन अवस्थान तथा

जीर समारमा भगता सर्व लोकने जन्म मरण

सस्थान वैज्ञाल छे अनतो काल आपणा

तेनो ने एकाग्रताये नन्मयांचत्रन परिणाम पर्दे ने ध्यान ते संस्थान तिचय धर्म यात कृद्दिं ए धर्म यानाना चार पाया कथा ए धर्म पान चोवा गुणडाणाधी माडीने सातमा गुणडाणा सुवीं है

इवे थ्रक यान कहे है शुक्र देशता नि-<sup>म्ल,</sup> राद्ध, पर आलान विना आत्माना संरुपने तन्मयपणे व्याने णहर्नु ध्यान तेने पुरुषान कहियें तेहना पाया चार है ते पहें है १ प्रथात्वितिर्कसमिवाग-ते प्रथाता नतां नीतयो अनीत जुड़ा करता, स्त्रभात विभाव तेने जुदा पृथर्पणे वहेंचण करवी सरपने विषे पण इच्य तथा पर्यायनी पृथक्-

१५६

पणे भ्यान करी, पर्याय ते गुणमां सक्रमाने

अने गुण ने पर्यायमा सकमण करे ए रीन

स्वधर्मने विषे धर्मीतरभेद ते प्रथक्त कहिएँ

अने तनो वितर्क त ज अतहाने स्थित उप

योग अने समिबचार ते सविकल्पोपयोग

ण्डले एक चितन्या पछी बीजी चितनवी तैने

विचार कहिये एटले निर्मेल विकल्प सहित

पीतानी सत्ताने ध्याने ते पृथवस्य वितर्कसम

विचार पेहेली पायी ए आडमा गुणडाणायी

मादी अभ्यारमा गुणदाणा सुधी छे

२ एकत्र वितक्षेअभविचार नामा बीजी

पायो कहे छे जे जीव आपणा गुणपर्यायनी

प्यता करी भ्याने ते आवी रीते के जीवना

अने जीव ते एकज छे, अने महारी

जीन सिद्धस्वरूप एकन ठे एवी एकत्व स्त-रूप तन्मयपणे अनता आत्म धर्मनो एकत्वपणे प्यानवितर्फ केहता श्रुतज्ञानावलगीपणे अने

अमितचार केहता विकल्प रहित दर्शन झाननो समयांतरें कारणता विना रत्नत्रयीनो एक समयी कारण कार्यतापणे जे ध्यान वीर्य उपयोगनी एकाव्रता ते एकत्ववितर्के अप-विचार जाणवो ए पायो वारमा गुणटाणे ॰यावे ए वेह पायामा श्रुतज्ञानात्रस्रतनीपणी ठे पण अवधि मनःर्षयत्र ज्ञानोपयोगॅ वर्तता जीव कोइ यान करी सके नहीं, ए वे ज्ञान परात्रयायी छै माटै ए ध्यानथी धनघातिया चार कर्म रापावे निर्मल केवल ज्ञान पामे पठे तरमे गुणठाणे ध्यानतरीकापणे- वर्चे ठै तेर-

161 माना नने जो चडटमे गुणठाणे पाशीना वे

त सूक्ष्म मन, प्रचन कायाना योग रथे, शै-रेशी करण वरी अयोगी थाय ते जे अप्रति-पाति निर्मेल्योये अचलतारप परिणाम त मूक्ष्मित्रपाअमितपानि व्यान जाणा इहा स चाये ८५ प्रकृति रही हती ने माये ७९

४ उन्छित्रस्यानुरुचि पायो कहे छ रे योग निरुध कीवा पुरे तेर मकृति खपान भरमी थाय, सबै कियाओं रहित थाय है, िछन क्रियानिट्ये शुरुष्यान कहिये 'यान ध्यावता नेप, दल, खरणस्य किया

पाया यात्रे

खपाउं

३ मूल्यक्रिया अवतिपति पायो कर्हे हैं

१५९

बन्जेदे, अवगाहना देहमानमाथी त्रीजो भाग घटाडे, भरीर मुक्ती उद्दायी सातराज छपर स्रोक्तने अते जाय, सिद्ध याय इहा शिष्य पूठे जे चोदमे गुणडाणे तो अफिय ठै, तो सात राज उचो गयो ए किया केंप करे उँ ? तेने उत्तर जे सिद्ध तो अक्रिय उँ, परतु . पूर्व मेरणाय तुर्वाने द्यान्ते जीवमा चालवानी

गुण डे धर्शस्तिकायम वे परणा गुण डे. तेयी कर्मरहित जीव मोक्ष जता छोऊने अते जड रहे इहा कोड पुरे जे आगळ उची अ-लोक है तिहा किय जातो नथी ? तैने उत्तर

ने आगठ धर्मास्तिकाय नथी माटे न जाय. पली कोइ पूछे ने तो अपोगतियें अथवा

तिरच्छी गतिये केम नथी जातो ? तेने

१६०

उत्तर जे कर्मना भारधी रहित थयो, इउनी

अधिकार वहारे

थयो, माटे नीचो तथा डायो जिमणी न जाय,

फारण के प्रेरक कोड नयी तथा कपे नही रुमरे अफ़िय छ माटे तथा कोई पूछे जे सिद्धने कर्म रम लागता नथी ? तेने करे है जे कर्म तो जीवने अज्ञानधी तथा घोगधी खाँग ठे, ते सिद्धना जीवने अज्ञान तथा योग नथी, माटे कमें जाने नहीं ए चार भ्याननी

**इ**ग नली बीजा चार भ्यान कहे छै **१** पदस्य, २ पिटस्थ, ३ रूपस्थ. ४ रूपातीत तेमा पहेलु पदस्य ध्यान कहे छै जो अरि इतादीक पाच परमेशीना गुण समारे, तेनी ध्यान करे ते पदस्य चान २ पि

358 स्य केहतां शरीरमा रह्यो जे आपणी जीव म अरिहत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय ने सादुपणाना गुपा सर्व ठे पहनो जे ध्यान पिंड कहेता जीव द्रव्य अथवा आकार ापना स्थापना तेनु अवल्यन पामी गुणीना ण मध्ये एकत्वता उपयोग करवो ते पिंडस्थ गन, ३ रूपमारह्यो थको पण ए गारो ह्मपी अनत गुणी छे, जे वस्तुनो स्वरूप तिशयातल्बी थया पठे आत्मानुं रूप एक-पणो पहरो ने ध्यान ते रूपस्थ-यान क ग ध्वान धर्म ध्यानमा गणवा ४ निरजन, र्मल, सकल्पविकल्प रहित अभेद **ए**क इ सत्तारूप चिदानद तत्त्वामृत, असग, वट, अनंतगुण , पर्यायरूप, , आत्मस्वरूपनु

१६२

क्य

ध्यान त रूपातीत व्यान जाणन इस मार्गः णागुणठाणा मयमयाण मति आदिक हार भयोपत्रयमात्र सर्वे छाटवा योग्य थया. एक मिद्रना मूल गुणने ध्याने ते स्पानीत ध्यान जाणवो एटले मोसन कारण जे ध्वान ह

आगमसार

इये मानना कहे है तैमा धर्म ध्याननी भार भावना कहे छै ? मैती भावना ते सर् जीव साथे यित्रतानी भाव चित्रवी, सर्वे मलु चाहबु पण कोइनु मार्ड चित्रबं नही

सर्वे जीव उत्पर हित बुद्धि राखरी ते मैत्र भावना २ गुणवत अने ज्ञानादिक गुण राग जे गुणी थी अरिहतादिक मह्मी निःसंगता एहवो ने परिणाप ते अ-द्वहतता वली दुःखे करी मोहायीन मोहमपी प्रदूगल रगी पराचीन मने पहवा परमात्मा मह् अथवा यथार्थ वादी ग्रुक तथा स्याहाट पर्मनो पोग मिल्यो, आज श्रुजने चिताम-णिमी कोडी मिलि आज माहरा मननो

अही मसूजी अही मसूजीनी उपकारता अही

मनीरप सफल धयो, पढरी आर्थपता तथा बढी रखे मने पहरा कारणनो विरह पढे पहरो कायरता परिणाम ते नीजी प्रमोदभा-बना ३ जे वर्मनत ऊपर राग अने मिथ्या-सी ऊपर राग नहीं तेम हेए पण 358

नहीं थारण के हिंमक ऊपर पण उत्तम जी

मार्गे आने तो तने शब्द पार्ने आणवी, कहा-चित्र मार्गे न आये तो पण द्वेच न शालका रमके ते अजाण छे एम समज्ञ यहवा जे प रिणाम ते मध्यस्य भावना ४ सर्वे जीवने पोताने तृत्य जाणी टया पाले. कोहने रणे नहीं तथा जे दृश्सी अथवा धर्महीन तैनी जीव उपर करणा तेना दु ख टाळवानी परि णाम तथा धर्महीन जीव देखीने एवी विना जे ए जीव कियारें धर्म पामशे. यथार्थ आत्म साधन पामी स्वरूप पर्मने किवार (वयारे) ाशे एवी परिणाम ते चौधी करमा दया मानना ए चार मानना कही

वने पराणा उपने जो उपदेश थकी साप

? हवे बार भावना कहे है शरीर. हेंदुब, धन, परिवार सर्व विनाशी छै जीवनी मुल धर्म अविनाशी छे. एम चितवबु ते प-हेंबी अनित्व भावना २ ससारमा मरण समये जीवने शरण राखनार कोइ नथी. एक पर्मनी अरण ठे पत्र चितवबु ते बीजी अशरण भारता ३ मारा जीवे संसारमां भ-मनासर्भ भव की घा छेए ससारधी हु के शर छुटीश, ए संसार मारो नथी, हु मोझ-१यी छू एम विचारव ते त्रीजी ससार भा-ानाः ४ ए माहरी जीव पकलो छै, एकलो गच्यो, एकलो जशे, पोताना करेला कर्म कलो भोगवशे एम चितवतु ते चोयी एकत्व गर्ना ५ आ संसारमा कोइ कोइनो नयी

146

पम चितवतु ते पाचमी अन्यत्व भाषना 1

भा शरीर अपवित्र मत्रमूत्रनी खाण है, ए ग-जरायी भरचो है, ए शरीरया हु न्यारे

हु, एम चितवनो ते छही अधुचि भारती

७ रागद्देप, अज्ञान, मिथ्यात्व मग्रल सर् आस्त्र छे, एम चितवष्ट ते सातमी आला भावना ८ ज्ञानध्यानमां वर्त्ततो जीव नर्रा फर्म पाथे नहीं ते आउमी सबर भावना ९ शान सहित किया ते निर्ज्ञाराच कारण छ, व नवमी निर्म्भरा भावना १० चनदराज हो पन स्वरूप निचारत ते दशमी लोकस्वरू भावना ११ ससारमा भगता जीवने समि शाननी माप्ति पामनी (यनी) दुर्लभ है, अया समिक्ति पास्यो पण चारित्र सर्व विरति ।

आगमसार १६७ रिणाम रूप धर्म पामतो दुर्लभ ठेते अग्या-रमी बोधिदुर्लभ भावना १२ धर्मना कहेण-

हार ( फयक ) गुरु तथा शृद्ध आगमन सा-भटन पहनी जोगनाह मरुनि दोहें छो ते बारमी धर्में दुर्जभ भागना चटले वार भागना कही ए चारितन स्वरूप सपूर्ण कहा एको समक्रित सहित ज्ञानचारितन ते

ः एवो समकित सहित ज्ञानचारित्रज्ञ ते कारण है, तेना उपर भव्य प्राणीय उद्यम करवो अने जो तेत्र ज्ञानचारित्र नहीं परु तीपण श्रेणिक राजानी पेरे सहहणा श्रद राखजो जो समिकित शुद्ध छै तो मोक्ष नजी-ह छे समिकत विना ज्ञान यान क्रिया सर्व नै:फल छे एम आगममा कहाो छे.

186 भागमसार जसक त किरड, अहना न सकेंद्र तहम सहस्र (

धी पाम

सष्ट्रमाणी जीवो. पावड-अयरामर ठाण । री

अर्थ-रे जीव? स करी शके तो कर

अने जो न क्री शक तोपण जेत्री कीतराग धर्म क्या ते रीते सदहने सहहणा शृद्ध रा

२ अजीव, ३ पुण्य, ८ पाप, ५ आन्ना, ६ सनर, ७ निर्द्धारा, ८ वन, ९ मोस ए नव तत्व छ तेमा मोक्षनो कर्चा जीव छ, अने सवर तथा निर्मश ए वे ठे, ते मोक्षना उपी दानकारण है, देवगुरू उपकारी ते मोसन निमित्त कारण छे एउले जीव सत्रर निर्जार

खनार जीव अजरामर स्वानक ते मोस पर

इने समिकतनो मार्ग वह छै, १ जीव

हेप छे पहनी परिणाम तेने समकित ज्ञान

आगममार

कहियें ते समिकित ज्ञान भलोज थाय तिहां अत्योगहारमा कहा है.

नायम्मि गिन्हियको, । 'अगिन्हियव्वे अ इच्छ अत्यमि ॥

जहबमेबहयजी, सी उबएसा नओ ताम । १।

अर्थ:-ज्ञानथी छ इब्य जाणीने लेवा

योग्प होय ते ले अने छाहवा योग्य छाडे

पत्रो जे उपदेश ते नय उपदेश जाणवी ,हवै समिकतनी दश रुचि कहे छै

जीवादि नव तत्त्व जाणे, आश्रव त्यागे, संवर आदरे, बीतरागना कदा। भार जे छ दूच्य

१ निसर्ग इचि ते निश्चयनये करी

त्तेन काल भाव सहित जाणे, नामादि चार निर्सेषा पोताना बुद्धिशी जाणे, सहदे, बीत, रागना भारया भाव ते सस्य प्यो सहद्दणा होय

₹90

े उपदेश रिय नव तस्त तथा छ द्र ह्यने ग्रर उपदेशयी जाणी सहहे ते उपदेश रुषि ३ आज्ञा रिय ते रागदेश मोह जेमना गया ठे, अज्ञान मिट्यु छ एहवा अहिंद देव तेंगे जे आज्ञा नहीं तेने माने सहहे तें

आहारिचि १ आचाराम, २ सुयम ४ सूत्रचि १ आचाराम, २ सुयम राम, ३ ठाणाम, ४ समनायाम, ६ भगवती, इत्तापर्भ कया, ७ जपासकद्शांम, ८ अ तगढदशाग, ९ अनुत्तरोबवाड दशाग, १०

पश्चन्याकरण, ११ निपाक, ए उग्यार अन तथा बारम् अग दृष्टिवाद जेमा चउट पूर्व इतां ते हमणा विच्छेद गया छै तथा १

ववराइ, २ रायपमेणी, ३ जीवामिगम, ४ पन्नवणा, ५ जैनुद्वीपपन्नति, ६ चटपन्नति, ७ सूरावति, ८ कर्षाञा, ९ कषावहसिया.

१० पुष्पिभा, ११ पुष्पचुन्तीआ, १२ व-

न्हिदिशा, ए पार उपाग जाणवा अने १० व्यवहारस्य, २ बहत्रकरण, ३ दशाश्रतस्कथ, ४ नित्रीय, ६ महानिशीय, ६ नितरूल, ए

ष छेदप्रथ तथा १ चउसरण, २ सथारापय-

मा, ३ तदुरुनेपाछीय, ४ चदात्रिजय, ५ दे-

विद्युओ, ७ बीर्युओ, ८ गुड्छाचार, ६

रेखर भागमसार. जोतिकरट, १० आयुः पश्लाण, ए इत

पपद्माना नाम तथा ? आग्रहयक, ? ठक्षः वेकालिक, ३ उत्तरा ययन. ८ ओवनिर्पेकि,

ए चार मृलसूत तथा ? नदि, 🤉 अनुपीर द्वार, ए पीस्तालीम आगम ते मुलसूत्र तथा न निर्युक्ति, ३ माप्य, ४ चुणि, ६ टीका, प पचागीना वचन ने जीर माने तथा - आगर सामलगनी तथा भणवानी जेने चणी चा इना होय ते सनक्षि जाणवी

५ जे जीव गुरमुख्यी एक पदनो अ सामलीने अनेक पर सहहे ते बीजर्बिः ६ अभिगमहिच ते जे सूत्र सिद्धान अर्थ सहित जाणे अने अर्थ विचार सांभ ी घणी चाहना होय ते अभिगमरुचिः

प्रमाण तथा सात नये करी जाणे ते विस्ता-रहीं ८ कियारुचि ते दर्शन, हान, चारित्र,

तप, जिनम, समिति, गुप्ति बाध किया सहित आत्मवर्भ साथे जेने रुचि घणी होय ते कि बारचि

९ सक्षेपरुचि ते जे अर्थने झानमा थोडो कडे यके पणी जाणीने कुमतिमा पड निह, जिनमतनी प्रतीति माने ते सक्षेपरचि

जिनमतनी प्रतिति माने ते सक्षेपरिच

रे० जे पाच अस्तिकायन स्वरूप जाणे
अ्तज्ञाननी स्प्रभाप, अनरग सत्ता सदद ते
धर्मरिच

हैं समिकितना आद गुण कहे हैं, २

नि:शका ते जिनागम मध्ये सूक्ष्म अर्थ मुक्षा ते साचा सफ्हें तेमां सदेह आणे नहीं तथा सात भयथा पण दरे नहि २ निकला गुण ने युण्यरूप फल्मी चाहना न राखे वेषक जिहा १००० तिहा क्ष्मी चय छै माटे १ निचित्तिगिष्ठागुण ते युम अहाम युक्र पक सरिला छै तेमा युण्यना उदय्थी थुम

आगमसार े

१७४

योग मिल्या राजी थई अहंबार न करवी तथा पापना उदयशे दुःशतसयोग मिल्या दिलगीर थाउ नहीं ४ असुदृहित गुण ते जे आगममा सूहम निगोदना तथा छ द्रव्यना सूहम विचार काग दे है सांस्थानी सार्वी

सहस विचार कथा है ते सांभरती धरी सनाय नहीं, जे पोनानी धारणामा आये ते. सहहे ५ जपबृहगुण ने ए आपणा जीतमा अनत ज्ञानादिक ग्रुण छे ते उपायवा नहीं,

शुद्ध सचा जेरी ठे तेती कहेबी, राग द्वेप अक्षान ते कर्मनी उपाधि ठे जीव ए उपाधिथी न्यारो छे ६ स्थिरीकरण गुण ते आपणा परिणाम क्षानध्यानमां स्थिर करता, डगाववा मही अथवा कोइ भव्य प्राणी धर्मयी पडतो होय तेने साहा देड उपदेश आपी स्थिर

हर्रों : ७ वास्सर्यता ग्रुण ते जेनी साथे हान ध्यान तप पिडक्रिमणों भेलों करता होर्स्य अने सद्द्रणा पण एकन होय ते अगुणों साथिम भाइ ठे तेनी भक्ति करवी अथवा सर्व जीवना ज्ञानादि गुण आपणा समान छे माटे सर्व जीव ऊपर दया करवी 105

अथवा रीमा जीवना पण आएणा हुन्

आगममार शानादि गुण है ते जीवने पोपवा योग्य शर्न

दान, जील, तप, भाव, प्रज्ञा करी घणी महिमा फरवी ए समकितना आठ गुण इने समक्तितना यांच लक्षण वह छै । र उपशम भाव सक्षण ते विवेकी माणी प्रामे फपाय न करे अने जो कटाचित् कपाय करे तापण तरन मनने पाछी बाउँ २ आस्ता भूषण ते भगवतना वचन उपर शृद्ध मंतीव राखे, मगवते जेम आगममा आज्ञा करी तेम सद्दे ३ दया भाव छक्षण हो सर्वे जी

व्यानना पणी अभ्यास कराते ८ प्रभावक

फरवो अथवा पोताने ज्ञानाटि गुण वघारवा

गुण ते भगवतना धर्मनी मभापना महिमी

निर्वेद ते ससारयी तथा घनधी शरीरेपी देवाशीपणो राखाने ५ संवेत, ते इन्द्रियना मुख 'जीन अनति बार भोगव्या पण ते दुंग्यना फारण छै, एक चिदानंद मोक्षमणी अर्तीन्द्रिय मुखने आपणा करी जाणे ए समिताना पण्ड लक्षण कथा

आगंगमारे

भतीन्द्रिय सुखने आपणा करी जाणे प समिकतना पाच लक्षण कथा इते छ जायतन कहे छै १ तिश्रय इतुरु ते भगततना बचनना खोटा अर्थ करे खोटी मरुपणा करे २ व्यवहारकुतुरु ते योगी, सन्यासी, ब्राह्मण अने आचारहीन वेपशारी

सन्यासी, ब्राह्मण अने आचारहीन वेपनारी यति ते पण छोडवा ३ निश्चय कुट्वें ते जिणे श्रीवीतरागटेवसु स्वरूप नयी जाण्यु, ४ व्यवहार कुट्वें ते जे सरागीदेव कुटण, महा- १७८ आगमसार देव, सेतपाल, देती, जितर महस्त ते पण छोडवा ५ निश्रमधी कुर्रम ते जे एकात मार्ग पाक-करणी उपर राज्या के अतराहाल, नधी ओएक्पो ते ६ व्यवहार कुर्धम ते नपारका

जन्य दर्गनोना मत सर्व छाडबा पटले हुरैं खार तथा क्रघरेने छोडी श्रद्धदेव, गुरु तथा वर्षे सद्दहे ते समकितनी सद्द्वणा जाणवी समकितना लक्षण पद्मयणा सुनुधी कहे छैं.

पग्मस्यसयतो वा, स्रविद्वपरमस्य सेवणावाचि ॥ बावश्च सूदसणा, बूनाणाय सम्प्रचसहरूका ॥ १ ॥

वावज्ञ बृदसणा, बज्ञाणाय सम्मत्तसङ्ख्या ॥ १ ॥ अर्थे –परमार्थ छ द्रव्य नव तत्त्रज्ञा ग्रण प्रपांय मोशज्ञ स्तरूप एटले जे परमार्थ द्वस्य

१७६३ अर्थ ठे ते जाणवानी घणो अभ्यास परची करे अथवा जाणवानी घणी चाहना राखे अने म्रदिह कहेता भली रीते दीवा जाण्या छै परमार्थ छ द्रव्य मोक्षमार्ग जेणे पहना गुरुनी सेवा करे एटले ज्ञानी गुरु वारवा अने वात्रक कहेता जिनमति यतिना नाम धरावीने जे र्तत्रपाल मम्रुखने समकित विना माने एवा गुरुनो संग वर्जे अने क्रुटर्शनी ने अन्यमति तेनो सगन करे एवा जे परिणाम ते सम-कितनी सददणा जाणवी

निरया सावज्याओ, ' ' कसायद्दीणा महच्यपपराति ॥ सम्मदिष्टिविद्णा, क्यावि ग्रुरख न पावति ॥ २ ॥ 820

निरजण निम्न अयल, देवअणाइ अणाइ अणत ॥ चेयणल्एलण सिद्धसम्, परमप्पा सिनसत ॥ ५ ॥

आगमसार

अर्थ -फर्म अजनया रहित निरंजन छु फलफ रहित छु, अयल केहता पोताना स्वरू पथी किनारे चलायमान थाउ नहीं, परमदेव

छु जेनी आदि नधी तथा जेनी अंत नधी

चेतना छक्षण छु, सिद्ध समान छु, सतसत्ता जीरादिसहहणं सम्मत्तः अहिममी नाण्॥ व ट्येन स्या रमण, चरण एसो हु मुर ख पहो॥६॥

अर्थ:--जीवादिक छ द्रन्य जेता छ तैना सद्दवा ते समकित अने छ द्रव्य जेवी चे तेहवा गुणपर्याय सहित जाणे ते ज्ञान जा-

णबु ते छ द्रव्य जाणीने अजीवने छाडे अने शीवना स्वग्रणमा स्थिर थडने रमे ते चारिश्र कहियें. ए शान दर्शन चारित शुद्धरत्नत्रयी ते मोधनो मार्ग छ माटे ए ज्ञान टर्शन चारिश-मो घणी यत्न करवो, ए रतत्रयी पामीने मगाद करवो नहीं तिहा निश्रय व्यवहारनी गाया चीत निच्छयमागो मुख्लो, ववहारी प्रव्णकारणी बची ॥ पदमो सवरस्त्रो. आसवदेव तओ वीओ॥ ७॥ अर्थ।---निश्चयनयनो मार्ग ज्ञान सत्ता-

रूप ते सोशंज कारण छे अने व्यवहार किया

158 भगिमसार नय ते पुण्यनु कारण कंबोः पहेलो निर्म

नय संबर छे अने निधय सवर निश्रय म से एकन ठे जदा नथी. बीजी व्यवहार न ते आस्त्र नवा कर्म लेवानी हेतु छै एस

श्रम पुण्य वर्मनी आखन थाय है अने अध्र व्यवहारें अग्रम कर्मनो आश्रव थाया छै की पूर्व ने व्यवहारनय आस्त्रवतु कारण है वे

अमे व्यवहार नही आदरस्य, एक निश्चय मार्गे आदरम् तेने उत्तर कहे है जह जिणमय परजाह,

ता या ववहारनित्यए मुयह ॥ एकेण विण तिथ्य, छिज्ञइ अनेणयो तच्च ॥ ८॥

अर्थ.-- अही मन्य पाणी ! जो तमने

जित्तमतनी चाहना है अने जो तुमे जिनमतने इम्लो छो, सोसने चाहो छो तो निश्चयनय अने व्यवहारनय छाडशो नाहि एट ने बेह नय मानजो, व्यवहार नये चालजो अने निश्रय-नय-सद्दनो जो तुमे न्यवहार नय । <del>पत्पापशो हो जिन्दासनना तीर्थनो उन्हेद</del> थाश्रे नेणे न्यबहार न मान्यो तेणे गुरु । प्रना, जिनमक्ति, तप्र, पद्मा खाण, सर्व न भान्या एम जेणे आजार उधाच्या तेणे निमित्त पारण उपाप्यो अने निमित्त कारण विना · एकलोः उप्राटात ।कारण ते सिद्धःन थाप, माटे तिमित्त कारणकृप व्यवहार सय जरूर गानवो असे जो एकलो व्यवहार नय । मीनियें तो निभयनय ओल्ल्या तिना तस्त्रज्ञ ₹¢€

ऑगप्रसार. स्वरूप जाण्यु नाय नहीं माटे तस्वे मीक्षमार्भ

ते निथयनय निना पामिये नही अने सन्तरान विना मोस नवी एटले निवयनय व्यवहार नय ये मानवा जे कारणे आगममां हान

मित्यायी मोक्ष है, तिहा ज्ञान-हेय उपादेयनी परीक्षा, किया जे हेय वधकारणनी ह्याग, खपादेय स्वराण ते लेवा, थिर परिणाम रा

सवा पत्र क्षान किया ते मोक्षत्र कारण है

माटे ज्ञान सहित किया अमाण छे ज्ञान विना किया पुण्यतु कारण छै एव निश्चय विना न्यवहार नि फल उ अने निश्चय सहित <sup>हय</sup>

बहार ते प्रमाण छै तेनी दृष्टान्त-जेम सीनाना

आभूपणयां उप शतु अथवा किणजो मिहये वे पण उचा सोनाने भावें लेइ रालिये छैपें अने जी ते किणजो न्तया सोर्ज ज़ हुं करिंग्रें तो सह कोड़ सीनाने छे पण कोड़ किणजो जे कुनातु ते छीपे नहीं तेम निश्चय नय सोना समान छे माटे निश्चयनय सहित सर्ने मछा छे अने निश्चयनय बिना सर्व अन्तेले माटे आगममा निश्चय ब्यनहार रूप मोसमार्ग ठे ते कथी क्या करे नहीं ते विषे

िछनी भिज्ञी जाय खओ, जो दहमें हु सरीर ॥ अप्पा भाने निम्मली, ज पाव भवतीर ॥ ९ ॥ अर्थ:-भव्य माणी पम चिंतने जे ए परीर छीजनाओं भिजजाओं, सय यह जाओ, विणसी जाओ, ए इहार खेरीर चौहेरिक हैं परवस्तु छे ते एक दिवसे मुकबु छे किटे रे माणी ! तु आपना आत्मान निर्मटपरें

100

ध्यावतो संसारती तरीने कडि। पामीझः --प हिन जप्पा सौ धरमणाः कम्मविसेसोह जायोजप्पाः। हमये देवजानुसो परमपाः,

इनय वयनागुसी परमप्ता,
बहु होसे अपने अपना ॥ १०॥
अप-अहो मन्यजीव ! पहीन आपनी
आत्मा हे ते शब्द हात है पन कर्मने सब

आत्मा छ ते शुद्ध ब्रह्म ठे पण कर्मने वश्च पड़्यों जनमभरण करे छे पण प शरीरमां है जीर छे ते देवे छे, परमात्मा छे, माटे हमें आपणो आत्मा ध्यारो, तरण तारण जिहान आपणो आत्मान छे पम श्री हेमाचार्षे आगमसारः १८९ वीतरागस्तोत्रमां कबो ठे यः परात्मा पर ज्योतिः, , परमः परमेष्ठिनाम् ॥

आदित्यवर्ण तमसः, परस्तादामनति यम् ॥ १ ॥ सर्वे येनोटमूच्यत, , समूलाः देजपादपाः । उत्यादि ॥ अर्थः—परमात्मा ठे, परमञ्जाति है परमेष्ठीयी पण अधिक पुज्य ठे, केस

अर्थः—परमातमा ठे, परमञ्चोति छे, पत्र परमेष्टीयी पण अधिक पूज्य ठे. केमके पत्रपरमेष्टी तो मोक्षमार्गना देखाडनारा ठे पण मोक्षमा जवातालो तो आपणो जीव ठे अज्ञा-वनो मिटाउनार छे सर्व कर्म क्रेशनो स्वपाव-वार छे एवो आत्मा भ्यानो एहिन परम भ्रेषम् कारण ठे, खुद्ध छे, परम निर्मल छे. 260

पहवी आत्मा उपादेय जाणी सद्दे औ

आगमसार

स्पानने दान आपे अने इन्द्रियना विकार ह फर्मग्रभना कारण जाणी परिहरे, हील पाले, जे आहार छे ते पौट्टिक परिवस्त है, शरीर पुष्टीचु कारण छे, अने कारीर पृष्ट की भागी इदियोना विषयनो पोप थाय माटे ते पर स्वभाव छे, ञज्ञान ससारत कारण 🖁 छे [मारे आहारनी त्याग करनी तेने तप कहिय तर पूना ते जे श्री अस्टित देवें मोक्षमार्ग उप देश्यो ते आपणे जाण्यो माटे आपण पपकारी छै ते चपकारीनी बहमान सहि भक्ति करियें गाँट श्री अरिहत देव

जेरो पोताथी निरवाह थाय तेवी त्याह

वेरातमा मनसे पटले धन से परवस्त आणी

आगमसार. १९१ विदेवनी पूना कर्सा पम दान, शील, तर, पूना, सर्व जीव अजीवत स्वरूप ओ-ल्स्या विना जे करतु ते प्रणक्ष्य दृद्रिय सुरततु भारण के अने जे जीवने उपादेय करी बाजा विना करे ने क्रिकेटन स्वरूप के

विना करे ते निर्म्मराजु कारण है. एम दया पण श्रीमगवती सत्रमा सातानेटची कर्पनु कारण छ पटले सम्यक् ज्ञाननी सर्व करणी निर्ज्ञरास्य छै अने ज्ञान निना सर्व करणी <sup>ब</sup>न्तु कारण छै, माटे ज्ञाननो घणो अभ्यास करती ए भगवर्ते सीखामण दीनी है 🕡 ं तथा ज्ञानतुं कारण श्रुतज्ञान छे तेनो यणो मात्र राखनो श्रीठाणागमा तथा रवस ययनमां १ नाचना, २ पृच्छना, '३ परावर्तना, ४ अनुषेक्षा, ५ अमेकया, ए

सम्माय भणवा गुणवानु फल मोध्र नगा ह

सवाय करवाया ज्ञानारणी कर्म स्वा क्षमके वाचनार्था तीर्घणमें प्रवर्षे, महानिर्व्वत थाय पृष्ठवाथी चून तथा अर्थ शुद्ध थाय, पि ध्यात्व मोहनीय स्वाबे, ते जेन अर्थ बुवा पूर्वे नेव तेम समकित निर्मक बाय अने अन

१९३

प्यास्त मोहनीय ख्वाने, ते जेम अर्थ ह्वारा, । प्रधारत मोहनीय ख्वाने, ते जेम अर्थ दिनार पुठे तेम तेम समक्रित निर्मक याय अने अर्द देशा विचारता सात कर्मनी हिपित, रस पातला कर जनती नससार, खपानी पातला करे तथा श्रदातानी आराभनाम

पातला करे तथा श्रवहाननी आराधनाण अज्ञान मिटे एवा फल कथा छै -माटे वाचना तथा मणवानो घणो जयम करवो, कमक आज पाचमा आरामा कोई करवी नथी तथा मन पर्यवनानी अने अविज्ञानी पण नथी, एकमान श्रवहान आयार है युक्त आगमसारः कह अम्हारिसा पाणी,

दुसमादोसदृसिया ॥ हा अणाहा कह हुता, न हतो जइ जिणागमो ॥ २ ॥ अर्थ-हे भगवत ! अमसरिग्वा पाणीनी शी गति थात जे अमें आ दूसम पचम का-खमां अनतार लीवो. हा-इति खेदे, अमे अ नाथ छ (छीए) जी जिनराजन कहेला आगम न होत तो आज श्र थात, एटछे थान आगमनीज आधार हे माटे आगम यने आगमवर ने वहुश्वत तैनी घणी निनय करवो भागममा विनयतु फल ते साभलबु अने सामलवात फल ज्ञान है, ज्ञानतु फल मोस है, एम आगम सामली लेवा योग्य **ले**जो, छडवा योग्य छोडजो, सहहणा धुर् राखनो, सददणा ते मोधन यल है ए इदिष मुख तो आ जीवे अनतियार पास्य है पहनी जाति-जन्म-योनि कोइ रही नथी जे आप णा नीने नहीं करी होय ए जीवने ससारमा ममता अनता प्रद्रल परावर्तन थया पण धर्मनी जोगवायीं मली नहीं हो हो मतुष्प भर, शावरकल, निरोग शरीर, प्वेंद्रिय मगट, उद्धि निर्मल, घटला स्योग मस्या वली श्री वीतरागनी वाणीना वहेनारा श्रद गुरनी जोगवाइ पामीने अहो भव्यलाको ! इमें धर्मने विषे विशेष उद्यम करजो, परिशी

एवी जोमबाह मिलबी दुर्लम उ माटे प्रपार करशो नहीं, ए शरीर, धन, कुटुव, आयुष्य

१९३

सर्व चचल है सब सब छीने हैं, बाटे पाच समवाय कारण पल्या पोक्षरप कार्य सिन्द करत ते पचसपत्रायना नाम कहे है १ काल. २ स्वभाव.३ नियतिः ४ पूर्वकृतः ६ प्ररूपकारः ए पांच समग्राय माने ते समकीति है। एमां पक्र समबाय चळापे तेहने मिळ्यात्वी कहियें एम सम्मति सूत्रमा कहा। के कालो सहाव नियइ प्रवासय प्रशिसकारणे पच।। मगराप सम्मन, पगते होड मिच्छन ॥ १ ॥ अर्थ:-काल छटित तिना मोक्षरूप फार्य सिद्ध थाय नहीं जटले काल सर्वेत कारण है जे कारू ने कार्य धवानी होय ते कार्य ते कालें थाय. ए काल समवाय अमीकार करी मसो. इंदा कोइ पूछे जे अभव्य जीन मोक्षे

165 रहा है, अनता पुद्रल परमाणुआ रहा ह

कालनो समय सर्गत वर्चे है

हवे छ द्रव्यनी फरसना कहे है धर्मा-स्तिकायना एक मदेशे धर्मास्तिकायना 🛡 मदेश फरस्या छेते आशी रीते के चार दि शिना चार अने पाचमी नीचे, छही उत्तर

प छ मदेश फरस्या छे तथा एक मूल पीते मेडेश एम सात मदेशनो सबय हे अने धर्मा स्तिकायना एक मदेशने आकाशहब्य तथा अधर्मास्तिकायना सात सात प्रदेश फरशे छै

ते एक मुलना भदेशने बीजा द्रव्यनी मूलनो मदेश फरशे माटे सात मदे शनी फरसना छे अने वर्मास्कायना एक मदेशें जीव युद्रस्त्रना अनता मदेशनी फरसना

छे तेने आकाश फरसनातो छए दिशीनी छे अने एकमृत पंदश सुद्धा सान मदेशनी फर- • पना छे अने बीजा द्रव्यनी त्रण दिशीनी फरशना छे एम सर्वे द्रव्यनी फरशना छे अने आकाशयी धर्म अपर्मनी अवगाहना मृह्म छे धर्म अधर्म इन्दर्धा जीवनी अवगाहना ब्ह्म है जीवधी पुहलनी अपगाइना मुस्म छे एम छ इन्यना गुण पर्याय सामान्य स्वभाव ११ ठे अने निशंप स्वमाव दश है, वै श्रीसिद्ध भगवत ज्ञानथी जाणे दर्शनथी दले ते इंग्यार सामान्य स्त्रभाव कहे है ? भहित स्वभाव, २ नाहिन स्वभाव, ३ नित्य

भागमसार स्मभाव, ४ अनित्य स्वभाव, ५ एक स्वभाव ६ अनेक स्वगाव, ७ भेद स्वभाव, ८ अभेद

200

" स्त्रभाव, ९ मच्य स्वभाव, १० अभन्य स्व भाव, ११ परम स्त्रभाव ए इग्यार सामान्य स्यभाव सर्वे इन्यमा छे ए सामान्य जपयोग दर्शन गुणवी देखे हो दश विशेष स्वभाव कहे है ? चैतन स्वभाव. २ अचेतन स्वभाव।

३ मृति राभाव, ४ अमृति राभाव, ५ एक मनेश स्वमाव, ६ अनेक मदेश स्वभाव, ७ शृद स्वभाव, ८ अशृद्ध स्वभाव, ० विभाव

रामान, १० उपचरित स्वभाव ए दश वि शेप स्त्रभाव छे ते कोइक द्रव्यमा कोइक स्त्रभाव छ, कोइक द्रव्यमा कोइक स्वभाव नधी। प

े जाणे एटले सिद्ध भगवान लोकालो

भागमसार

सिद्ध भगवान् है ते समान पोताना आत्माने

जाणे उपादेय करी ध्याने ते समकित जाणवी. ॥ टोहा ॥ अष्ट कमें बन टाहके, भए सिद्ध जिनचन्ट । ता सम जो अप्पा गणे, बंदे ताको इद ॥१॥

कमरान ओपधसमी, ज्ञान द्युवारस दृष्टि । शिव द्युलामृत सरोवरी, जय २ सम्यक् दृष्टि॥२ रहिन सद्गुरु बीख डे, एहिन शिवपुर माग । डेनो निन ज्ञानादि गुण, करजोपरगुण त्याग॥३ गान दृक्ष सेवो अपिक, चारित्र समक्तित मूळ । गपर अगमपद फळ ळहो, जिनवर पदवीकूळ ४

आगमसार सवत सत्तर टिहचरे. मनश्रद्ध फागुण मास मोटे काट मरोटमे, पसता सुख चौपास ॥६।

202

सुविदित स्वर्तर गण्ड सुधिर, युगवर जिन प्र षुण्य मधान मत्रान सुण, पाउकसुण पहर !!६!!

तास शिष्य पाठक घयर, मुमतिसार गुणवत्। सकल शास्त्र शायक गुणा, साधुरग जसपत । तास शिष्य पाटक विजुध, जिनमत परमत जाण भविक कमल निताधना, राजसार ग्रहभाणा

ज्ञानवर्षे पाडक मवर, शमदम गुणे अगाह I राजहस गुरु गुरु शक्ति, सहुजग करे सराही तास शिष्य आगमरचि, जनधर्मको दास ।

देवचर आनद्रमें, कीनो ग्रथ प्रशास ॥१०॥ आगमसारोद्धार एह, प्राकृत संस्कृत रूप । । कियो दवचदमुनि, झानामृत रसक्रपारि करवो इहां सहाय अति, दुर्गटास श्रुभचित्त । समजावन निज मित्रकु, कीनो ग्रथ पवित्ता।?२ पर्ममित्र जिन धर्म रत, भिजन समकितवत ।

ध्रद्भ अमरपद ओलराण, अय कियो ग्रुणवत॥१३ तत्त्वज्ञानमय अथ यह, जोव वालानोध । निनपर सत्ता सन्न लिस्ते, श्रोता ल्हे प्रवोद॥१४

ता कारण देरचदश्चान, कीनो भाषा ग्रथ । भणवे ग्रुणको ने भविक, लहेरो ते श्चित्रप्या१५ क्ष्पक रेख श्रीतारचि, मिळजो पह सयोग । तररहान श्रद्धा सहित, रळीय काय निरोग॥१६ नरमामस राचजो, लहेको परमानद । भरमामस राचजो, लहेको प्रस्तानद ॥

학교당 गुणस्थानय विचार यथ कियो मनरगसी, सितपख फागुणमाम l भोपपार अर तीज तिथि, सफल फली मन

यणस्थानकविचार हरे गुणडाणानी विचार लखीह छ

मथम मि वारत्रगुणठाणु १, सास्वादनगुणगणु २, मिश्रगुणडाणु ३, अविग्त समक्ति गुण

डाणु ४, देनविरति गुणढाणु ५, ममत्तगुण टाणु ६, अनुमन्तगुणटाणु ७, अपूर्वकरण

गुणटाणु ८, अनिष्टत्तियाद्र गुणटाणु ९, स्रह्मसपराय गुणठाणु १०, उपशातमोह गुण

🗻 ११, सीणमोह गुणडालु १२, सयोगी

े गुणवाणु १३, अयोगीकेवलि गुणवाणु

सहरेनार्ड ते मिथ्यात्व गुणठाणो कहीड, तेहना मेद पाच है अभिग्गहिय मिथ्यात्व जे लीघो इट मुकी सके नहीं १, अनिमग्र-हिक विध्यात्व जे देव तथा क़देव तथा गुरु तथा क्रमुर धर्भ अन्तर्भ सरिखा करी माने परीक्षात्रद्धी नहीं २, अभिनिवेशमिध्यास्य जे खोटाने सोड जाणे पण इट मुकी सके नहीं रे, सार्शायक मिध्यात्व जे केवलिना भाएपा वचन तैमां सञय उपजे पूरीपरतीत आवे नही क अनामोग मिट्यात्व ने काई जाणपण उपने नहीं एकदीविकलंदीनी पेरे तथा श्रीता-, णागसूने मिथ्यात्वना दसनोल बद्या छै, जीवने 'जनीत करी माने ते मिध्यात्व १, तथा

3¢5 गणस्यानक विचार अजीवने जीन करी माने ते मिथ्यान २, तथा धर्मने अधर्म करी माने ते मिध्या व है

मार्ग नथी ससारनो हेतु छ तेइने मोक्समार्ग करी माने ते मिथ्यात्त्र ६ तथा मोक्षगया नधी तन मोक्ष माने ते मि॰यात्य ७, ने मोक्षे गया तहने मोक्ष न माने ते मिथ्यात्व ८, जे साधु विषय विकार त्यांगी तेहने असाध माने ते मिध्या व ९, तथा जे साधु नथी तेहने साधु करी माने ते मिथ्यात्व १० ते मिथ्यात्वनी चाल तीन भकारनी 🕏 देवगत मिथ्यात्व ते कुदेव सरागी देव करी माने १, बीजो ग्रुरुगत ने

तया अधर्मने धर्म करी माने ते मिध्यात्व ४। मो नोमार्ग ज्ञानदर्शन चारित्रतपः तेहने मो-क्षमार्ग न माने ते मिटयात्य ६. तथा मोक्षनो

संसारी पर्वने धर्मना पर्व करी माने ते मि-

व्यात्व ते मिध्यात्वनी स्थिति तीन मकारनी छै अनाहि अनतनी अभव्य जीवने, अनाहि सार भव्यजोपने, साहिसात पडवाइने, ते जयाय अतमेहती उत्तक्ति। अर्द्धपुद्लपरावर्त्त पाईक उणी छै बीजु गुणठाणु सास्वादन ते कोईक जीव उपसमसमक्रिनथी पडतो मिध्यात्व ग्रणवाणे पोतो नथी बचे छआरखिका रहे ते सास्तादन गुणठाणं कहीइ. तेहनो ह्यात छे कोड प्रथप खारखांड घृत जमीने तुरत प्रमतो होइ ते वमतां काईक स्वाद आये तिम सम-कितियी पहला पिण काइक वासना रहे तेहने सास्त्रादन कहिई २ त्रीजो ग्रणठाणो मिश्र २०८ गुणम्या परिवार कोड जीव संयोजनय समिकतथी पटी मिश्र मोहनीने उद्ये मिश्रमुणठाणे आग अपन मिश्यात्वथी निकली समिष्टित गुणठाणे आ बता वस मिश्रमोहनीने उदय मिश्र गुणठाणे आप ते जीव अतमुहर्चकालसीम रहे प्रते

समिकत मिथ्यात्वदृष्टि कहीइ पहनी दृशा फहे छै जै कोई जीव नालियरवीयमां बसवा होइ ते नाल्यिर साइ तेडने अस दींडे सग न उपने तेम देश पण न उपने तिम प जीवने जिन धर्भ साची सामळतां राग पण न उपने तेम द्वेप उपने नहीं एहवा जीवने मिश्रगुणठाणु कहीइ, एहनी स्थिति अतमुहूर्तना रे चीया अविस्त समक्ति, तेहना भेद त्रण छै, तेहनो पहेंछो भेद उपसमसमित ने

जीव अनादि मिश्यात्व सज्ञीपचेद्रीपर्याप्तो कोई कारण पामीने ससार्थी उभगे,नरक निगोदधी जनमपरणना दुःखयी वीहे तेवारे ए सर्व ससार खोटो जाणे, धर्म जाणवानी रुचि मणी करे, दयापाले, दानदे, तप करे, श्राव-कना बार जल पाले, साजना महाबल पाले ते जीन यथापष्टिकरणे वर्तता कहीइ, एटली करणीसुत्री भव्य तथा अभव्य जीव आते,

नवप्रैनयकस्त्रवी जाए पण समक्तित पाम्यो नयी ते बाटे छेखामा नावे, तीवण कोई जीव वैराग्य परिणामसहितससारने असार जाणनी साचा धर्मनो परीक्षा करतो सातकर्मनी धीति उत्रुष्टी खपाव, एक कोडाकोडी सागरोपम वाकी यीति सातकर्मनी रहे तेनारे अपूर्वकरण

270 गुणस्थानकविचार करे तेवारे एक झान मार्ग साची करी मानै, रुद्धिस्क्ष्मभाव जाणवानी विशेष थाइ तेवारे पछे एक आत्मा पोताना शरीरने विषे रही,

पण अश्वरीरी छे, अरपी छे, अविनाशी छ,) अनतज्ञानमया, अनत दर्शनमयी,अनत चारिन मयी,अनतअगुरलपुमयी, अनततपमयी, अन तवीर्यमधी, निर्मछ अलेप अखह छ तेहना मदेश अखरूयाता छे, मदेशे २ अनंता गुण अनता पर्याय छे, उपयोग लक्षण ते माहरी धर्म छे, ए धर्म जे जे करता मगट पापे, ग्रणीश्रीभरिहत, सिन्ह, आचारज,जपाध्याय, साधु तथा सिद्धात तेहनो जिनय तथा दैया वय करनो, अस्टितना आगम प्रमाणमतीत े ते समकित कहीइ, ते समकितना तिन

गुणस्थानकविचार. २११ भेट छे,उपसम समक्रित १ क्षयोपशम समितित २ साथिकसम्बित तिहा अनतानुविधितपाय

४ मिध्यान्वमोहनी, मिश्रमोहनी, समिकतमो-हनी प्रसातमकृति उटये आगे ते रापारी अने उटये नथी आबी ते विपाकेउपसमात्री टै.

प्रदेसे उद्ये ठे, समिकतमोहनी उदय आकरो ठेतेणे समिकितमा अतिचार लागे ठेतेहने सपोपशम समिकत रहीह, पहनी स्थिति जान्य अन्तर्भहुन्ते ठे उत्कृष्टि ६६ छासठि-सागरोपम केतलाएक सन्तर्यमा अजिक

पतळा स्थिति रहे ए समितिने पाच अति-चार छागे तेहना नाम ॥ सका जे आगममा फयो ते साचो पिण कहिंक सदेह उपने १, अतिचार ॥ कसा चीजा मतना शास्त्र तथा २१२ गुणस्यानम् विचार

नही याय अथवा जिनसासनधी बीजा मन्त्री फरणी रही छै पहती परिणाम आवर्त श्रीजो ३ अतिचार॥ पसस जे परमतनी परसम भरे जे बीजा यनना देव नथा हिंगीयाना फप्टकरणी तथा कोई चमत्कार देसीने ते खपर राग आरे तहने पंग लागे तहना गुण योले ए चोबा ४ अतिचार जाणयो ॥ सम्ब के बीजा मनना देव तथा गुरु तथा ते मतन जे सेनक तेहनो पश्चिम मेनाप घणो करे । मवनी नात करे सामक्षे तेपाचमी अति

त्व इरिइराटिक सरागितथा ते मतना ग्रुर्स विज्ञारी तेहने वार्ट्स ज्डावणे जाणि बाज करिय २ अतिचार, जितिगिछाने धर्मश्ररि तनो क्यों करीड वण प्रनो फल गांने ह

. गणस्थानकथिचार 213 चार ॥ ए श्रयोपश्रम समकित एक जीवने असरपातीचार आहे अने वळी असख्याती-बारगाए, जे आगमने आयारे राखे तेहने रह तेपठे सायिक समकित याउ ते सायिकनो **अर्थ छिखीइ ठे अनतानुवंशी च्यार ४** 

मिध्यात्व मोहनी १ मिश्रमोहनी २ समिकत-मोहनी अए सात प्रकृति सर्वधा जे जीव रापानीने निरमलीपरतीतिकधी ते शायिकस-मिकिनी फहीड ए आव्या पठे जाय नहीं ए सम्भित्रपाला जीवने दस जातिनी रुचि उपने तेहना ४ निक्षेपा सातनय पोतानी बुद्धियी साचा जाणे ते निसर्गहचि १ अभिगमहचि

त लिसीर है निसर्गरुचि नव तस्व ९ छ द्रव्य . पे तिनागमनायुक्त अर्थ जाणवानी रुचि

270 गुणस्थानकविचार ग्रम्मा मुखर्था उपदेशर्था जाणे ते उपनेशर्राष श्रीअरिहतके बलीना क्या वचननी आणी ममाण करे ते आणारुचि ३ सूत्रहचि जिने सूत सांभलना साचा मारगनी परतीत उपने समितिन पाम ४ बीजरचि सिद्धाननु प्रमप साभरता बधावीरत जाणपण आव श्रदा समीयाः ५ अभिगयहचि जे २२ अगादिक ८४ आगम तथा निर्युक्तिभाष्य चूर्णिरीकाना अर्थ जाण सर्व बोजना प्रमार्थ जाणवानी रचि ६ विस्ताररचि ६ द्रव्यनाभाव ४ निशे पेसातनये करी ज्यार प्रमाणे करी जाणे ७ फिया रचि ने जीव जिनशासननी किया साची नरी सुनमा कही ते रीत करे आयी

ं न करें ८ सक्षेपरुचि, जे जीव सिद्धा-

गुणस्थानक**यि**चार 284 तना जाणगीतार्थ आगमने अनुसारे जे अर्थ महे ते साचा करी माने ९ धर्मरचि, आतमानो पर्मे ज्ञानदर्शन चारित्रमधी अरूपी आतमानो परिणाम भावटया प्रमुख सुणी श्री अरिहतादि-कनो बहुमान वेयावच ते वर्ष करी माने बीना बाह्य तपवाशकिरिया ने आगमपा कहा। परमाणे करे ते धर्मनो कारण करी माने ते ्र्यंरिब, समिति मोधमार्ग मूळ ठै, समिति विना जे करिंग ते संसार खाते है (पण) ं मोसमारन न जाने ए चीथा गुणडानी कछी ४ पांचमी देशिवरित गुणठाणी इहा जीवने वनपमलाग आवे, जपन्ये एक नवकारसी-

पश्चरकाण तथा कदमूलना पश्चलाण साची

थदा सहीत थया होवे तेहने शावक कहीड.

उत्रुष्टे प्रदीसुमर्ना बांछा विना श्रावरनां पारत्रवराले वे उत्हरों शासक कहाँड धार त्रतना नाम १ स्थलवाणातिपात विरमण ने अस जीवने निरापराघ हुणे नष्टि ? स्पूर्ल मपावात विरवण, जे मोटका पांच कन्या लीक १, गवालीक २, भौमालिक ३, धापि-णमोसो ४, कुदीसाल न बोले ५ ॥ ३ पूल अदत्तादान विरमण, जे चोरी कीचे राजा दर्व

गुणस्यानव विचार.

२१६

णमोसी के, कुडीसारन न बोसे ६ ॥ ३ पूर्व अवचादान विरमण, जे चोरी कीणे राजा दर्वे तथा च्यार रहां माणस ठवको दे अयवा पाताने भय लागे अथवा सामाना जीवनै भारको पढे ते मोटी चोरी चरकी नहिं के पूर्लपुन विरमणावत, जे परसी मानुष्णी सथा तिर्वचणी तथा देवतानी भोगवर्वी नहीं इंटीना स्वाद घणा मानपुणे सेपे नहीं शुल्स्यानकविचारः २१७ ५ पुल्परिग्रह विरमण जे धनादिक नन भेदनो परिग्रहनो पचलरााण करे, ईच्छा परि-

माण करे अथवा पोता पासे जे घन होइ ते राली बीजाना पचनलाण करे ६ दिक् परि-मागप्रन ने च्यार दिशा तथा ऊचो तथा नीचो विसी जातानों मान करे ७ भोगोपभोग परिमाण प्रत जे नीम साचवे, पक्षर कर्मादान न करे, जे वोताने स्वावेपीये तथा बस्त्रोतु मान राखे ८ अनर्थ दृढ विरमणत्रत, ते जे मोन्का पाप, रमवा, खेतर सेंडवां, भाटो जे प्ना ममुखन करवाना पद्मरसाण करे ९ सा गाविस्त्रत ने नतन्य २ घडी सुद्धी ससारना काम मृकी कृद्धन वननो राग तजी कोर्स्थी द्वेत न करवो एइनो समयरिमाण राखवो ते

गुणस्यानकविचार २१८ साम पिक कहिइ १० देशावगासिकात ने है

घडीथी च्यार पोहोरघी उग्रुकाल दिसर्व

मानकरियीरचित्तसमतापणे रहेर ते देसावगा सिक्तत जाणतु ११ पीपधनत च्यार पीहर अयना आड पोहोर सूची समतापणे साधुपर

आवकवरते, मन वजन काया समताह राखे ते पोपयनत कहाँह १० अतिथिसयिभाग बारस

प्रत ने शायक ते साधूने विहरानीने पछे निमन् जो तेहवा साधुना योग न मिले तो साधर्मिक शावरुने जीमाडीने जमवा बेसब बेठा पछ यौ

डीसीन्त्रार साधुजीनी बाटजोबी इम करती साधूजी नाच्या तो एहर्रा मावना भावती जे धन्य ते शावक जे साधुजीने बहोरावीने जिमत इस्ये इम चितवी जनवा वेसे ए बारतत भे

गुणस्था उक्तविचार 219 ते शावक कहीड शावकने जघन्य ३ वार स्त्रष्टे ७ वार चैत्यपदन करवु, अरिहतदेव-सिंद भगवतने बदना करवी तथा नित्य पहिकामणु वे बार करबु जो नित्य न धाय तो पार्लानो पटिकपणु नियमा करवु तथा पचरपाण मभातना नोकारसी अत्रस्य साच-यनी, रात्रि चडविहार विविद्यार दुनिहार ए ३ माहि एक पश्चरताण अवस्य करबु ए , पाचमा गुणडाणानी स्थितिः जघन्य अतमु-हुर्च उत्हुछे देशे उणी पूर्वकोडी वर्षनी जाणवी ए भीव अदार पाप स्थानक आलोइने निर्मल थयो चारित्रफरसे ते कहे छै, अथ अहारे पाप स्थान छिलीइ है कोइ भन्य जीव अव-सर पामीने जैनागम सुणता संसारथी जभग्यो

गुणस्थानकविधार थको मोक्ष मुखनो अभिलाप करे पण आल वन रिना कार्य नीपनत्रो दुक्र छै तेथी प्रथम

देवतत्त्व श्री बीतराम अनत् शानमय अनत वर्शनमय शुद्ध स्वरूपी आत्म ऋदिभोगी आत्मालवी आत्मपरणामी जेदने अवलवाने अनता जीव अच्याबाच झुख वरे ते देवतन तेहने सेवव सर्व जीव ससारमयथी छुटे सवा निग्रथपच महाव्रतधारी सवरस्वरूपी एक

निर्मल मोक्षमार्गने विषे जेहनी इष्टि है, शरीर इद्रीय, क्पार्य, योगनी महत्तिजीपता सुनिरात भतीतकाल विषय सभालना नथी, वर्तमान

विषयमा रमता नयी, अनागतकाल विषयनी नधी, पोताना अनतगुणपर्याय निर्मेत्र नाने उत्कृष्ट उद्यमनत हो ते साधु महात्मा

गुणस्थानकत्रिचारः । गुरुपणे धारवा, तथा वर्मतत्त्व जे जीव द्रवय असम्यात पटेशी स्याद्वाट रीते पोतानी सुण-पर्याय परणिन ते वर्ष श्री सिद्ध भगवानने भगट छे, श्री अरिहते उपदिस्यो आचार्य ते र्घम सापनाने ज्ञानादिक पचाचार पाले है, श्रीउपाध्यायजी ते वर्मनी घोषणा करे है, , साधुनित्रय ते वर्ष साधनाने राज्य तजी इद्रिय विषय तजी उनमा साबु टोळा माये जयवा एकल वासी वनतासी गुफानितासी पर्वतनी पीला उपर उनाले आतापना शीतकाले नदीने तटे शीत मामे छे, जगायया अव्याक-पणे रागद्वेष वारता समतामई श्रुतसपन्न चा-ग्निसपन निचरे है तथा देशनिरति ते सुद धर्म मगढ करवा वास्ते देसविस्ती छेइ सर्वे

## २२४ गुजस्थानकविचार गुरसाग्ने मिर्जामिडुकड ए मयम पापस्थान ॥ हर्ग यीजो पापस्थान ते सृपानाङ ले जुड़

याल्यु, लाकिक ससारकामम ये लोकोक्तर वर्मकावेम वे ते पिण भाव ग्रुपाताट स्वस्तरू-

पशुद्ध अध्यात्मभात्र पोतानी परणतिने पो-तानी न माने, शरीर इन्द्रिप धन एडन ते परभाद ससार हेतु दुएता घुल नेहने पोताना कहें क्रोपेस्पा बोले, भयेश्वा बोले, लोभेस्पा बोले ते सर्व माहरे जीन ससार भमता चार

गतिमाही ने मृपाताद त्रोच्या होय, त्रोखान्या होय, बोळता असुमोत्रा होय, ते मने वचने मापाए ते सर्व श्रीमधुजीनी सार्त्व गुरुमाले

भाषाय ते सब आम्रह्मजाना साद्य गुरुसाल भारमसाले मिच्छामिटुकट २ हो जीजो अदत्तादान ते ने पारकी वस्त गुणस्थानकविचारः २२५ अणटीघी लेवी ते लौकिक ने ससारी असंय-

मीना धनकंचन द्विपट चतुःपट जादिक अण दीया लेवा. छोकोत्तर ते जे चत्यउपगरण प्रजाउपगरण चारित्रउपगरण तहनो चौरवी पाद्य वस्तमो लेवो. ते द्रव्य. भार ते जीउपर प्रद्रल खबादिकनो आत्मानेविषे ग्राहकतारुप परिणमन करचो हते, कराव्यो, हवे, करता अनुमीयो हुवे, ते मन बचन काबाए ते सर्व श्रीमञ्जानी साखे गुरुसाखे आत्मसाखे मि च्छामिद्कुड ३ हवे चोथो पापस्थान मैयन ने कामी भोगीयणे इदी तिथे पुरुलना वर्णी-दिकतो भोगपत्री लोकोत्तर वर्पलिये धर्मा महाजन साधु साम्बी वर्मीपकरण चैत्यादिने विषे इद्दीनी पोषणा करवी ते वली द्रव्यथी

गुणस्यानव विचार १२इ षेद ३ उटये ने कामितारीपणे भोगविला-

सादिक, भावधी आत्मपरिणति परभोगीपणे पर वस्त अश्रविपरिणाममध्ये रमणीयता ते माहारे जीने, एकेन्द्रियणे वेरिन्द्रियणे, तेरि-न्द्रिपणे, चोरिन्द्रिपणे, पचैन्द्रिपणे फरसन

र रसन २ ब्राण ३ च<sup>1</sup>र ४ <sup>१</sup> श्रोतेन्द्रिय ६ इट्रिना नेत्रीस निषय गाँचछचा सैच्या सैवाल्या सेवता आसीयाँ हीड ते मर्न उचन

कायाए करी श्रीमञ्जीनी साखे आत्मसाखे मिच्छामिदकट ४ हवे पाँचमो पापस्थान परि-

ग्रह में कोई आत्मवर्षथी अन्यभाव सरक्षणा राखना ते, लीकिक परिव्रह द्विपद

धनवान्य गृहलेत्र वस्त्रपुरव, लोको-

परिग्रह सम्यज्ञलनो हेत्र गोक्षकारण श्री-

गुणस्थामकविचार. २२७

अरिहननो चैत्य-तथा जिनविवे तथा ज्ञाननो

कारण पुस्तक नवकारपाली भग्नुखचारित्रना उपगरण तेहने मनत्त्रभागे गहे, द्रव्य परिग्रह पुहल खपादि ममत्वभावे ग्रहे, भावपरिग्रह क्रोधादिक अशुद्ध परिणाम परभायस्त्रामित्व-प्राहकत्वादिक परिणति ते परिग्रह राख्यो हर्षे परद्रव्यनी इच्छा करी हते, परिग्रह सुख मान्यो इये, परियह शसते धर्मभाचरण करणो इवे ते परिग्रह पापस्थान मने उचने कायाए करो सेव्यो, सेताव्या होय साता अनुमोद्यो होवे तें श्रीअस्हितनी सारी गुरुसासे आत्म-साखे मिच्छाविद्वक्ड ५ इवे उद्दो पापस्थानक को नतप्त परिणाम हामानो रोबक ते माई पिता, म्मून कद्भ , जपर

गुणस्थानक विचार नीत उपर फाँच परिणाम लोकीचर दिवगुर सायर्गिक उपर क्रोध परिणामने उन्यत तथा

मिछामिडकट हवे सातमी पापस्थान मान. अहकार ? रुपनी, धननी,राज्यनी,परिवारनी, बलनी, वपनी, विद्यानी, कुलनी तथा गुणो नद्दा ने गुणीनो मान आचार्य उपाध्याय साधुपणानो अभिमान ससारकार्य यशाभि-मान, घर्मकार्ये सघयात्राचैत्य ममुखनी रम्बवारवानो मान कर्या हो, हो-किस वाहालोकोत्तर गुणनी गुणीधी, महस्य

सक्टोरता भाव नद्र परिणाम ने जो फोई रीतनों अवगस्त कोच कवीं होने पराव्यों

386

होर करती अनुमोची होरे. वे श्री निश्चवन-

पति निरजन देवनीसाखे गुरसाधे आत्मसाखे

गुणस्थानकथियारः २२९

क्यों हवे कराव्यो होवे करता अनुमोयो होवे ते श्रींत्रमुजीनो सार्ग आन्मसारे मिछामि-दुक्ड ७ हो आउमो पापव्यान माया कपद यक्रता ने फोर्ड्यो पचननो डोह उगाई करवी ते मापा अन्डोकिक ससारी सर्ग्यथी छोको-चर आचार्य सामु सार्वामक्यी वर्ष पद्धतिनो

फर्पो इवे तै सर्व मने वचने कायाई करि

त्तर आचाप साधु सावामकथा वम पद्धातना कपट करवो ते द्रव्यतः कोडने वचरो, भावतः आर्ज्जवता रहित परिणामे जे माहरे जीने कर्यो कराव्यो करता अनुमोत्रो ते मने त्रवने काराये करी श्रीजगातस्त परम करणाति-

कायाये करी श्रीजगास्तल परम करणानि-तिनी सार्वे गुरु वर्धावनिनी साले, आस्म साने मिछामि दुक्ट ८ हवे नवमी पापस्थान कोम, काकची परिणाम इच्छा ग्रद्धता ते २३० गुजस्थानविष्वार
लोक्कि, वाग पोनाने इष्ट वस्तु तेइनी
लाञ्च ने पणी जहें, इद्रोप सुप्त प्रमुख आपे
एह्यो परिणाम ते लोग, लोकोचर पर्मिलेंगे
धन निष्प नसनी लाम बाठ ए द्रव्यतः
क्या, ने भारत परभाषाभिलाप सर्व ते ने

माधारे जीने कवों कराव्यों करती अनुमोद्यो

ते मने परि वचने परि नायाचे करि श्री
प्रश्नुजीनी साले ग्रुट साले आरम साले मिछानिद्कड ९ इवे दसमी पापस्थान रागमीत
परिणाम बाब्हास जि जीव अजीव पोताने
रिपे पोपणीय लेकिक तथा लोकोचरपी

तथा भावधी ते राग परिणति अनती
े जपनी अन्य इब्धने विषे तेना
र्गा रीक्ष ते माहोरे जीवे करी कराबी

गुणस्थानकविचार \$88 करनां अनुमोदि ते सर्व मने करी वचने

फायार करी श्रीअरिहतनी साखे गुरुनी साखे विछाविदक्ष १० हर्ने अग्याग्मी पाप-स्थानक द्वेप अमीनि परिणाम जीव तथा अजीव उपर पोतानी विषयादि इष्टताये

अपूराता ने असुहायणा ते लौकिक उपर हैंप तथा छोकोत्तर उपर देप ने कर्पी होये कराव्यो होने करतामध्ये अनुमोत्रो होवे ते मने वचने कामाये करी ते श्रीसर्वज्ञनी साखे

गुरु साले मिछामिद्वाह ११ हवे घारमो

पापस्थान फलह बहुबाट कोर्ट्यी हृद्य चासते जस । यहाई वासने आक्रोश क्रुपचनादिक करवा तथा वर्ष म ये नामगावा चासते, इयक्तिये पोतासो मन बापवाने क्ले झलह

गुणस्या विषार 235 करवे मशस्त करतां अनगस्त थयु होते ते सर्व मने प्रचने कायार करी कर्षे कराष्य अनुमोध है देउसाखे ग्रहसाखे आत्मसाले

मिच्छामिद्रकड १२ तथा तैरमी पापस्थान

अध्याख्यान कडोआल देवी देवे तथा डास्पे गुणीना गुण ओलवदा, आगलाने सहसा रकारे हिणी बचन यहेवी तथा वस्त्रगते छोपीने फदकार फरवो ते लोक्कि अन्यमी वने ससारी रीने, लोकोत्तर अरिहत /सिद्ध आचार्य खपा याय साधु साधमिक देशविरति समितिनी तेहनी औदिय चाल देखी कलक

े ैं। ते अभ्यारयान कर्या होय, कराव्या होवे त अञ्जूमीया हो ने ते मने पचने कायाए करी . तताले ग्रहताचे आत्मसाले विच्छा

गुणस्थानकविचार मिदुकड १३ हवे सोळमो पापस्थान परपरिवाद पारकी निया ते द्वेपे पारका अपगुण कहा,

२३३

कोइना अपनस पास्ते पारकी क्रथली करी अथवा सामा मनुष्यने खिसाणी पाडवा वासते जे निदा करो ते मध्ये लोकिक ते जे ससारी जीवनी, छोकोत्तर गुणी जैनमार्ग अवलवता मार्गानुसारिधी माडी सिन्हभगनान लगे जे अव र्णेयाद बोलबो ते बोत्यो होने वोलाब्यो होवे योजताने अनुमोशी होवे तै मन वचन कायाए करीने श्रीप्रश्नांनी नाखे, गुर साखे, आत्म सासि विछाविद्दहर्ड १४ पनार्यो पापस्थान रति तथा अरति उपने असाता दुःखिवयोग हानि मग्रस उपने जे अर्ति धाक्कता किहा-इ सहाय नहीं ते अरति लोकिक निषयमी

गणस्यो प्य विचार उणी अमहामणे, तथा लोकांचर आगम सुण

प्राप्त ते मध्ये अरति करि होवे तथा गति। इरी विषयमध्येरील सुरामण रक्तता विश्राम ते रति लौकिक, तथा लोगोचर चैत्य प्रस्त-कादिकनी सदरता देग्याने के उड़ी विषे रीम पामे ते रीझ ए नवा कर्य यां उवाने आकरि विकणना जे माहरे जीन करी, करानी, क-रता अनुमोदी ते मने वचने फायाये करी श्रीपरमात्वानी साले ग्रहनी वाले आत्म साले पिछामिदक्ड १५ हा च उनमो पापस्थान पैथुन्य पारकी चाडी करती ते ने देंपे थाये जीउनेकष्ट असातानी हेत्र राजा अधिक आगल तेहना छता

सं देउपात्राये तप सामायकपोसह भणती

538

गुजरधानकविचार २३५ अथवा अञ्चल होप कही तेहनो आश्रय भी-जबो ते पैशन्य कहिये ते जे माहारे जीवै करचो कराव्यो करता अनुमोद्यो मनेदचने कायोए करी श्रीवश्रजीनी साही, आत्मसाखे ग्रहसाखे पिछामिदवट १६ हमे सत्तरमो

पापस्थान माथा गुपा कपटे परने ठगना चास्ते मिट्र घोले, कोड कपटर्लिंग बगलानी पैरे दे खाडीने गुणा नहि ने गुणी रीते बदावबी. प्रजापती मनावती करावती अथवा छौकिक वचने व्यापार प्रमुख मध्ये कपटे ग्रपा बोले तथा धर्मचाले जैनागम मध्ये फपट शिते प्रदृत्ति कर्रा ते लिंगा जीव प्रमुख कर्जा ते जे माहारे जीव करचा कराच्या करतो अनु-मोषा ते मने बचने कायार करी श्रीमधर्मानी

# २३६

साखे गुरु साले आत्म साखे मिछामिद्रकड

१७ इव अदारमी पापस्थान मिध्यात्व जे इदेव विषयी कर्माधीन परिव्रही प्रण्यमकृति भोगि तहन देव माने, क्रमूछ चारित्रधर्भ रहिन

त जे अन्य लियी नथा स्वलियी गुणश्रप्र परिव्रहतो लोशी अदार पापस्थान भरपा तै

ग्रर करी माने, बमें यथार्थ आत्मपरिणनि

विना अथवा तहना सावन विना धर्म माने

तथा जीवादिक नव तत्त्व निम बस्तूधर्म बस्तू

पणे पोतानी परिणति छै, पटइच्ये जिम पोता

नी परिणति ग्रुणपर्याय स्वभाव स्वाहाद रीत जिम छ तिय न सबहे परिषव शीन मद्दे

१८४ वह है, तहना मुख भेद प

गुणस्थानक विचार

104-लोडोकदाग्रह सारयो मृगे

परत्या विना सर्वे सरिखा माने २ अभिनि-वेश मि॰यात्व जाणीने खोटो कटाग्रह खेचे सञ्चित्रधास्त्र जे सर्व सञ्च मध्ये रहे ४ अनाभोग मिभ्यान्य जे काड जाणे नहि तथा साध्य सावन निमित्त तथा उपादान उत्सर्ग अपवाद विषयांस रीने करि पहनी अथुन्द सददणा जे वेदातादिकनी ते सर्व मिथ्यात्व जाणत्रो, ते जे सेव्ती होवे, सेवाच्यो होवे सेवता अनुमोधो होव मने यचने कायाण करीने ते श्रीमधलीनी साखें गुम्साले आत्मसाले मिन्छामिद्वन्द, ते मि-ध्यास्य जीवने महादःखकारी है, अनादि स-सारनी पीन है, लोकोचर शीनिनेंद्रनी कही

नहि १ अनभिग्रह मिध्यात्य गुणअवगुण

236 गणस्थानय विचार श्रुद्धमार्थ जीव पामे नही ते मिध्यात्व महापाप स्थान छ ते घटा वर्ष करणी थिण साधक न बाय है यादे मिट्यात्वनी प्रधाचाप प्रणी करवी ते मिध्यास्य रसतो नथी ते ने पूर्व नीये गुणीनी

आशावना तथा गुणनो अनादर कथों छै ते

महागुणी अरिहत देव तेहनी अस्तिने काने उत्तम भव्यजी। जे बनादिक बढ़ी यकी पोताना आत्माने तथा अन्य मसारी जीवने निण ( स्नेह ) सरागता, परिग्रहता हिसादि-

कनो इत थाये तिणे गणीनी भक्ति जोडती निर्धिकरणी थाय ते मादे ने अस्टित्नी

मक्ति कारने वर्षी जे उनाटिक ते देवकी ने साबों होने अयस पोते। विण ने अथवा उपेख्यो होय ते सर्वे देवकाना दुपण थयो तै गाटे देवका दोपनी

आछोपणा करवी त रखींये छे जे माहारे जीवे पर्नेद्री पृथगीकायपणे जिनींत्रजादिकनी आशातना करी-अवना प्रध्नीकायपणे सुप्रया जे श्रारीर तेहवी जे मुणी अथवा मुणीनी थापना चैत्यादिक तेरने व्यापात अयो तथा अपुकाय-पणे पाणिमे चन्य बहुबराच्या पाइ वा जिन विव वहाच्या तथा अधिकायपण जे वस्यविवादिक बाह्या होते. तथा नायुकायपणे चैन्य पाडची होते, तथा बनस्पतिकायपणे जे चैत्य मध्ये म्राहा बाद खापण स्मीने चैत्य पाहवा होने, व्रसकायपणे चत्यम ये मालाटिक करी रहा इवे पखीने भने चत्य तथा जिनविंग न्छपर मेसी असमजस आचरण करचा होचे, तथा गुणस्थानव विचार

यश घोलाच्या होते. देवका दोकडा ध्यानै राखी घोडो व्याज भरी आध्यो होवे अने पणी लाम लीपो होने, तथा बांसी पण नेनयी उद्री सल यगवडाई मधल जे करी होवें तथा अरिहत देव पत सामारिक कामे मान्या इल्या होने ते मने वचने नायाप करी मिछामिद्वड हिवे माहारे ए कार्य अथुन्दाचरणस्प न करत आज पछी माहारी

**े भगट करवानी रिच** लो पद्मी मार्ग तहत्त करी

देवराइच्य मन्द्यपणे जाणि तथा जाण्या विना खाधा होने अथना अनिधि बावर्षा होने तथा देवका उपर अन्याय हकम कर्पा

250

होते. अथवा टेउकी बस्त वावरीने पौताना

सहहता. अन्य सर्वे मिथ्याः श्रीतीतरागे कह्यो निव्रथे आचर्यों सम्पितनी जीने सहबो थी-गणवर देवे जागम मन्ये गुध्यो श्रद्ध धर्म माहरी तथा भी जीवनी हित ठै ते माहारे ममाण ते सहहवा ते जाणवा ते आदरवो ते नीपनावतो ज समये समये गुणस्थान चढी कर्भक्षयें करी सलेशी अने पोतानी सिद्ध संपदा मगढ थास्य ते समयसार मानवो अने जैने ए मोर्गर्ना परतीत भगटी तैने शर्णे रहेवा तथा से य गुद्धसत्ता सावन गुणठाणे चढी नै रत्नेत्रयी परणमबी ए मार्ग माहरी सदा अग्रिहर होज्यो इति ॥

#### गुणस्यामय विधार 285 ॥ दुहा ॥

परम अध्यात्मने ज्या, सङ्ग्रहकेरे सम, तिणक भव सफलो होत्, अविदृद मगढेरम १

धर्म पानकी देत यह, शिव साधनको खेन, ऐसी अपसर पाप मिले, चेत सक तो चैत २

वक्ता श्रीना सम मिल, मगटे निजगुणरपः अक्षय राजानो ज्ञानको, तीन भूवनको भूप ३ पह पत्र अनुपहे, समन्ने ने चित्तलाय,

देवचद्रकवि इमक्दे, निज आतम् थिर थाय ४ 👉 इति अहार पापस्थान जाणवः हत्रे छठो गणराणी प्रमत्त साध पहने नामे कहीये जे र्गा चोनडीनो उदय दल्यो सर्र

मगढी, सवन साचन गाढे पोदुगलिक

भाने ब्रहेपण पुट्गलने भोगिपणे ब्रहे नहीं स्वरूपरमणी आत्मत्रमें निरता रूप सर्वेपरभाव उपर अब्राहरूतारूप चारित्रत्रमें बगटयो है

ते साध उत्सर्ग अपनाट गार्गपचमहात्रत

गुणस्थानेकविचारः २४३

पाळ छे, तिहा इटयमान पच महानत सिहत पांच समिति तीनगुपतिना दश यति धर्मना पात्रयक्षा निराधसी एक आस्मा निर्मेळ करताना च्यामध्यी विचरे तै पच महानतः, तिहा पहेलो महानत सञ्चाओंपा णाईवायाओविरमण " विनदारे छकायना जीनना ३०० प्राण १० हणे नही हणाने मही हणताने अनुमोदे नहीं मन चचन कान

याप करीने, निययथी ज्ञानुदर्शन चारित छल मधुरन भावभाष पोताना परना कर्ष

388 गुणस्थानम् विधार आवरणपणे हणे नहि, हणार नहि, -हणतां अनुपोधे नहा, तथा पीने महाप्रते, सन्वाओ योसा वायाओ वेरमण इन्यत कोधे माने

मायाप लोभे सध्यवादर लातिक तथा लो-कोत्तर जठ पोते बोले नहीं बोलादे नहि घोलता अनमोधे नहिं मन वचन कायाए करी, भावशी सर्ने इन्य पर्यायना ययार्थ जा

ण्यो. सत्य भागमध्य अयकता शक्ति साधि ज्ञान सत्यपणे पाने तथा श्री बीसरागना आगम प्रमाणे अर्थ भाव छै तेहनी सप्ताप

फरे जेहधी पोताना जानवर्शन चारित्र निर्मेल

षापे ते भाषा बोले (जीनी महाजन सम्बाभी ो बेर्समण" जे इच्य ते प्रणतस

पण अणः दीवो छेवे , नर्धाः ' सेवरावे

गुणस्यानकविचारः २४५ मही, जें होने तेहने मारी कहे नहीं, मने धर्चने कायाए करीने छोकिक चोरी जे ससारी जीवनी वस्तु चोरी छेवी, छोकोत्तर चोरी जे दीर्थकर आणमे जे न लेवानो कहाँ। ते लेवो ते चोरी न करे, भावधी आत्मानी ग्राहकता शक्ति ते स्वरूप ग्रहणरूप कार्यना फता ठे ते अनादिनी परभाव ग्राहरूता करी रमु छे ते निवारीने स्वरूप ब्राहक्ष्यणे परण-

रणु छे ते निवारीने स्वरूप ग्राहक्पणे पर्ण-प्रारं, ते अदत्तादान विमरणवत थया ते अदत्तादान चार भेदे छे ते तीर्थकर अदत्तने तीर्थकरनी आणाम न छेवो कक्षो सर्व परभाव तैरहेवे १ बीजो ग्रह्भदत्त को ग्रुष्ट पर्परा

निनासृत्र अर्थ कहेता २ तीजो स्त्रामी अदत्त जैवन्तमो को धणी होवे तेनी अणदीर्धाज

गंगस्यानेयं विचार ર૪ફ बस्त लेनी ते ३ ची श्रुं जीय अदन जे को इ जीर एम नहीं नथीं जे माहरा पाणहणीं अने योतानेइद्रामबान माटे परजीवना माण-हणे ते जीव जदत्त ' ८ तथा मशस्त काम करता कोड जीवना प्राणघात थाये ते श्री मगउते हिंसा कही नथी, ते जिनय तथीं वैयावद्यमा गंण्य है ए इन्यभाव अहत्ताहाने निनिनि निविधिपणे होवे चोथे महानते

<sup>11</sup>सब्बाओ भेल्लाओं वेरमल्<sup>ग</sup> जे दब्देशी पाच इंद्रिना त्रेतीम त्रिपय सेवे नहीं, सेवता अ

सुमेदिः नहां, मनुष्य विर्वच देवताना विष पर्ना बाळा न बरे, न कराये, अनुमोदे नही, भावर्षा जे जात्मा द्रव्य जात्म संपनी भोगी े ते पण करम करवा माटे परभावने भोगवे गुणस्थानकविचार २४७ ते भाव,मेथुन छे, ते सर्व परभाव भोगीपणे भोगवे नहीं, ते आत्मानिःस्मा करवा माटे,

परभाव सामनपणे ब्रहे पण अभीग्य अधान्य हापणे अरमणिक माने जे माहरी आत्मा आत्मानउनी भोगी ते परभाव अनंत नीवे अनतवार लेड भोगवीने वस्यों ते मने ग्रहवी भोगवयों घटे चही ए अनत जीवे अनतीवार भोगवी ले केड जडवल तेहने हु भोगद्व नहीं

सुन सर्व परभाव भोगीपणो तजी स्त्रभाव भोकापणे रहेंबो हे द्रव्ययी मैंबुनना कारण, रूपी राम तथा रूपी राम मिल्या जीवनी, स्त्रमी मृंदुन तीन लोकने त्रि इंद्रीना स-बादनी हेन्छा, कालधी मैंबुन दिवस तथा राष्ट्री, भाषधी मैंबुन रागकों तथा हेप्यों, ते

### २६२ गुणस्थानक विचार फहिने ते मध्ये ११ में गुणवाणे उपशांत यथारूयात छे १२, १३, १४ में गुणठाणे

साविक यथाख्यात है, इव सातवी अपर्मत गुणहाणो सिन्धीये कें, छठे गुणहाणे ने भाषें साधुजीना बच्चा ते सर्व होवे पण पाचे ममाद न होद, ते माटे अपमाद, ए छठे गुणडाणें

बरततो साधुजिन शासनने कामे ल्डिय फीर वे पण सातमे ग्राणाउणे वस्ततो साध्र सन्धि न फीरवे. पहनी स्थिति जयन्य एक समय-

चरकृष्ट अवर्महतेनी के छठे तथा सातमे गुणै-टाणे विलीने साधु देशे वणी पूर्व कोडी े श्री भगवती सुत्रे ए वे सुणठाणानी देशे

पूर्व कोडी स्थिति जूनी कही 'छै' ते

, नये हे, समय तथा वे समय पन

ग्रणस्यामकचिचार २५३

र्गणडाणो पलटेते गवेल्यो नथी ते माटे अंतर्भ हर्तनी स्थिति कही उहे, सातमे वे गुणठाणे सामायिक तथा छेडोपस्थापनीय तथा परिहार विश्रंद्धि चारित्र है, तथा सातमे ग्रणठाणे सीध लब्धि 'फोरी नहीं अने छहा गुणडा-णांना साब जिनशासनने काने लिध

फोरवे तेत साजपण जाय नहीं ७ आठमो अपूर्वकरण गुणठाणो ने भीन भावनाभा-वर्ती आत्मानी स्त्ररूप अनतज्ञानमयी, अ-नतदर्शनमधी, अनतचारित्रमयी, अनतदान-मयी, अनतज्ञाममयी, अनतभोगमयी, अन-तजपभौगमयी, अनतत्रीर्यमयी, अनतअव्या-वाधमुखमयी, परमञानदमयी, अरूपी, अव-दी, अक्पाई, अलेसी, अश्रीरी, अनाहारी.

#### गुणस्या किविधार રવદ स्थिति जवन्य एक समय उत्कृष्ट अर्तमृहर्भनी

छै ९ दशमो गुणठाणी सूक्ष्म सपराय इहां मृहम सच्चलननी लोग खदय होने इहां वे जातना जीप पापीये, उपश्चम श्रेणि हया क्षपक श्रेणि करमने उपयामा े अपकश्रेणि कर्म मोहर्नाने रावाने, ए गुणठाणे एक मुक्त सपराय चारित्र होते, व्यान शुक्क होते परि-

णाम निरमल होते. ते अवेदी छै पहनी स्थिति जयन्य एक ममय उत्सूष्ट अतुर्वहर्त्तनी छै १० इन्यारमी गुणवाणी खपवातमोह तिहा जे जी-

व उपग्रम श्रेणि आठमेछतोघोलना परिणाम-

भात मोह कर्मनी मक्तिवयशमायतो जाय तै-पुर्वत उपसमायानो 🖥 ते नवमे े, े उपश्रमानी दलमें लोग उप गुणस्थानव विचार

२५७

शमात्रीने कषायना उदयग्हीत है ते इग्यारमे आने ने विधाल्यात चारित्र पामे. एहने चोबीन सपरायकी किया उत्तरी एकइरियान पहिकी किया रहे मछति तथा परदेश प वे वय रहा है हेतुन बाहै, वय एक सातानेहनीनो छै, ध्यान शुरू छै ए गुणटाणे जे जीउ मरण पाम्या पड़ी चौथे गुणठाणे आरे नै देवता खब्मसमीया थाए, एकावतारी थाए अथना कोइक जीव अगीयारमे गुणठाणे उपशात अद्वाते जई पाठो पढे ते इग्यारमाथी दशमें आने दशमाथी नजमें आने नयमेथी आडमे आने आडमेवी सातमे आने सातमेधी

१ पडी पाउरे साक श्रेणिये चढी

गुणस्थानक विधार छहे जार इसथा पाछो पढ नचडे तो पाछी

अतेम्रहर्तनी छै एजगायारमी, इव वारमा .. गुणहाणा ते जे जीव आउमा गुण-कर्म खपानतो वात्र बीरज निरमक

पाचमे गुणवाणे आत, पाचमाथी चौधे आप, जो बायर ममकिवी होए तो बाथे गुणहाणे दक अने उपजय समस्तिती हाए तो नाधार्थी

2+6

वही बीजे साम्नाटन गुणवाणे यहंने पहेले

मिथ्यान ग्रणनाण आने काइ एक जीन

अतेम्हर्ने रह. जाडक जीव दश ओणीअर्घ

पद्रल परावर्त मिल्यात्वीपण रहे पर्डे समितन

पामे, एअगायास्मा ग्रुपदाणो एक जीव

च्यारवार पामे, एक जीव एकभवनाहि वेबार

पामे, एहनी स्थिति जपन्य एक सबय उत्कृष्ट

उपयोग शुद्ध शुरू भ्यानने बले नामे दशमे गुणदाणे मोहनी कर्म स्पाची नारमे गुणदाणे आने, पह शुरू ध्याननो बीजो पायो एकत्व-निकर्क अमिषचार ध्याने, पहची आञ्च बले घनघाती जी। कर्म ज्ञानामणीय दर्शनावर-णीय अस्पाच स्वाची पहनी दिशीन अभिक्ट-

घनपाता ता कम हानाउरणाय दर्शनायरणीय अतराय खपाने, पहनी स्थिति अर्तेष्ठहूतेनी है १२। तेरमी गुणग्राणो सयोगी केनली
ने जीन वारमाने अते हानायरणी, दर्शनावरणी, अतराय, ए खपे केन्नख्कान केन्नख्क दर्शन मगटे, छोक अलोकना सर्व भाष अतीतकाल अनामतकाल वर्तमानकाल सर्व मत्यक्ष आत्मग्रहे इन्द्रिय विना जाणे देखे, इहा जे अंतग्रह केवली होये ते केवली सम्र-

इघात करीने मोक्ष जाय अने जे केवलीनो

आऊसो घणो हावे ते अनैक जीवने उपगार फरता अनेकदेशना देता विचरे देशे उणीपूर्व कोडी एगे विचरे तथा जेतीर्थकरदेव केवली-पण किचरे ते चोजीश अतिशय तथा आठ

गणस्थानम् विचार

२६०

मातिहारण विराजमान थका नवा सोनाना फमले पग धापता चाले, योजनप्रमाण प्राहले-समोसरणे सोनाने सिंहासने शीन छत्र मापे वीरानता वे पासे चामरनी जोड विह्नता हजार नजा इत्रपत्रा छहेनता देशना देता जमन्य बहोतेर वरसने आऊसे उस्कोर ची-

जपन्य बहोतेर वरसने आऊखे उत्कृष्टे चौ-रासी लगल पूरवने आऊखे विचरे, अनैक जीवने परम उपदेश दे, गणधर यापना करे,

जावन घरम खपदेश हैं, गणधर यापना करे, ""ध्वी आवक शाविका ए च्यार सघ ॥ सिद्धान मस्पे, अने सामान्य

गुणस्थानकविचार केन्नलीने अतिशय नहीवे ते छेडे आवरजी-करण करे पड़ी जो आऊखो अने बीजा करम भरता होवे तो केन्छी समुद्रधात न

करे. अने जो आऊलेथी (अन्य) करम घणा

२६१ 💌

होते तो केवली समुद्धान करें तेहने आठे समय लागे, ए तैरमा गुणठाणानी स्थिति जधन्य अत्रम्हतनी है चत्करे देश चणीपूर्ण कोडी वर्षनी छै १३॥ चउटमे गुणठाणे अयोगी केवली ते जे जीव तैरमे गुणटाणे जोगरोध कर्या माडे, सूक्ष्म किया अमितपाते शक भ्याननी त्रीजी पायी भ्यानती ते चउदमे गुणवाणे चढे तिहा मधमधी बादर मनोजोग

रीके पछी बादर बचनजोग रोके पछी बादर कायाजीय रोके पछी सूक्ष्म मनोयोग केरो

गणस्यासक जिचार २६३ पन्ती मुक्त्म पचनजाग गाँक पछी मुक्त्म काया-जाग राम अरीररहित थाए जिटली देहमान हाने जनम्य ने हायना उत्कृष्टी पाचसे धरु पनो तीने भाग पढाडे, तेशरे जपन्य प्रतीम आगुण्नी उत्कृष वीनसेतेर्वास बनुप बतास आगुलनी अनगाहना रहे, तैवारे आत्मा अयागी अकिय, अलेसी, अनाहारी, अश-

रीरी, शुक्र ध्यानना चोथा पायो यहने अपाती करम च्यार, वेदनाकमें १ आडली-

कर्म न नामर्रम ३ मीत्रकर्म ४ नी सम

करीने मोल जाय ॥ इतिश्री चटदम ग्रणस्था

नक संपूर्णम् ॥





## पहित श्रीदेवचन्द्र गणि विरवित ॥ अध्यात्मगीता ॥

श्री सबेगीसिरदार शिरोमणि जिन उत्तम पटपकज रूप, क्षिप्य अमीक्चवरकृत वाला योघ सहिता ॥

॥ ढालभवरगायानी ॥

प्रणमिये विश्वहित जिनवाणी । महानद तरु सीचवाऽसृत पाणी ॥ महा मोहपुर भेदवा वज्जपाणी । गहन भवफद छेदन क्रपाणी ॥ १ त्रयमा जीव, तेहनें हतना वरणवाली जिन

वाणी कहेना जिनेन्यन त्रेयनी वाणी, तेर्षें नमस्कार मनें करिये हे एटले वली जिनवाणी कहवी छै के महानद तर सींचवा अस्ति पाणी एटले माहा कहता जे मोटी, अने नव कहता जे आणदमयी, पहनो मोसस्पीयो तर कहता हस, तेहनें सींचीने नय पहन

सरामें निवारणी केहरी है? के अपूर्व समाणी वहेवां अपूर्व समान जाणवी एटलें "ी जिनवाणी देहरां है! के माहा मोहबूर बजराणी एटले महा कहता जे मोटी, मोह रप पर फहेता जे नगर, तैहर्ने भेदवान जिनवाणी फेहबी है ? के बज्जपाणि कहेता इद्र समान जाणवी एटले जिम बजे फरीने इद्र असुराटिकना नगर मते विटारे तिम. इहा जिनेश्वर देवनी नाणी रूप बन्ने करी सिनेर कोडाकोड गोइनी कर्म रप स्थित छै तैहने विदारी, एक कोटाकोडिनी माहिली

अध्या संगीता

पासे आणी मेले, ए परमार्थ एटले वली जिननाणी केहवी छे ? के गहन समफद छे-उन छपाणी एटले गहन कहेता जे आकरी, एहरी अवरूप फद कहेता जे अटबी, छेडवा ने जिननाणी केहवी छे ? के कीवाडी समान जाणवी॥ १॥

अध्यात्मगीता ॥ चाल ग्रुरती महिनानी ॥

इट्य अनंत प्रकाशक,भासक तत्व स्वरूप । आतम तत्त्व विवोधक, शोधक सचित्रप ॥ नय निक्षेप प्रमाणे, जाणे वस्तु समस्त । त्रि

करण योगे प्रणमु, जैनागम सुर प्रशस्त ॥ २ ॥

अर्थ:-वली जिनवाणी फेहबी हैं के इब्य अनत प्रकाशक परले इब्य अनी

कहेतां उटय भावने जोगे करी जीय अमीव रप अनता द्वाय जगत्रयने विवे रहा है, ते े फेहवी छै ? के मकाशना कर । छे अने भासक तत्व स्वरप एडा

٧,

भासक कहेता आत्म तत्वना मासननी कर-णताली है आतम तत्व विनोधक शोधक सचिद्रप. एटेंने बली जिनवाणी केहवी है ? के ओनम तस्त्र वित्रोधक कहता आतम तस्वना बोधनी करवाबाली हे परले जिनवाणी समिल्हा यका आत्मा बोध जीननी माप्ति मते पामे अने वली जिनगाणी केहवी छे ? के शोधक संविद्ध एटलें शोवक संविद्ध करें-ता ज्ञान दर्शन चारित आदि अनंत ग्रुण आत्माने विषे शक्ति पणे रहा छे तेहने जिन-वाणी केहरी छे ! ग्रद्धनी करवाराली जाणवी जिम मीनाने विषे मेल रहा। छे ते मोनो. अग्रिने जोगे करी शुद्ध बाय तिम, आतमा ने त्रिपे कर्म रूप मेळ रहो डे ते आतमा, जिनवाणीने जोगे करी शुद्ध बाय छे ए पर-

अध्यारमगीता मार्थ जाणवी नयनिशेष ममाणे जाणे वस्त समस्त एटले वर्ला जिनवाणी के हवी है ! के नय कहता नगमादि सात नये करी, अने मिसेप पहेता नामादि च्यार निहेप फरी जने अमाणे कहेता अत्यक्ष परोक्ष वे प्रमाणे फरी, जिनवाणी नेहबी छै ? के समस्त बस्त पदार्थना जाणपणाना करणवाली के विकरण योगे मणम, जैनागम सुवशस्त चटले अन्य-मतिना शास डे ते तो अमजस्त है, अने जिनमविना आगम हे ते महास्त है, पहती

जैनागम, वहने निकरण जोगे कहेता मने फरी, वचने परी, नावाये परी मणमू कहेतां नार प्रति कर हु॥ २॥ इति श्री निन नमस्कार जाणना॥ अध्यारमगीना

,3

ह्ये अध्यात्मगीतानी उपदेश करघो ते मुनिमति ओल्खाने ने एटले अन्यात्मर्गाताना उपदेशक, ते मुनि नेहना ने !

রাজ:---

जिणे आतमा गुज्ताये पिछाण्यो । तिणे लोक अलोकनो भाव जाण्यो॥ आत्मरमणी भुनि जगवदीता । उपिटस्यूं तेणे अध्यात्मगीता ॥३॥

अधे: -- पटले बली ए मुनि केहना है ? के जिणे थातमा शुद्धताचे पिठाण्यो एटले जिणे पोताना आतमाने शुद्ध रीते पिठाण्यो कहेता जाण्यो थोटण्यो है तिले लोका-लोकाो भान जाण्यो, एटले ते मुनिये लोका-

इ फर्ची नयी ॥ ३ ॥

पोताना आतम स्वस्पनेतिये सटा काल रमण मित करपो छै प्या मुनि कहेतां जे मुनि, अने जगादीता कहता जगहत्रमने पिपे पाता छै उपदिटयु तेणे अध्यातमगीता-एटले उपदिटयु कहेता ते मुनिय अध्यातम गीता नो उपदेश मते करपो छै कर्ता कहे

छोरूना भाव मत्यक्षपणे जाण्या दीटा आतमरमणी मुनि जगवदीता एटले वली ए मुनि केइबा है ? के आतमरमणी कहेता जिणे

द्रव्य सर्वना भावनो जाणग पासग पह।ज्ञाता, कर्त्ता, भोक्ता, रमता,

## अध्यात्मगीता

परणित गेह ॥ याहक, रक्षक, व्यापक, धारक धर्मसमूह। दान, लाभ, वल, भोग उपभोगतणो जे

च्युह् ॥ ४ ॥

अधः-एटले बली ए सुनि केहम है? के द्रव्य सर्पना भागना जाणन पासनापद एटले द्रव्य सर्प कहेता धर्मास्तिकाय अध्मा-स्तिकाय आदि पर द्रव्यना भागना जाणन फहेता भिन्न भिन्न प्रकारे करी जाणे है, अनें/ पासन कहेता देगे है नाता, कर्ता, भोका, रमता, परणितोह एटले वली ए सुनि केहम हैं। तोके जाता कहता जाने करीनें

अनेक ज्ञेय पटार्थने जाणे छै, अने पोताना

वान-अतराय कर्म क्षय गयो त्यारे अनत दान मगट्यो । १ । अने छाभ अतराय क शय गयो त्यारे अनतो छाम मगटधो । २

वाध्यातमगीता

अने भोग अतराय कर्म क्षय गयो त्यां अनतो भोग मगटचो । ३ । अने उपभी अतराय कर्म क्षय गयो त्यारे अनतो उपभोग मगटचो । ८। अने वीर्यअतराय फर्म क्षर गयो स्यारे अनतो वीर्थ मगटचो। ५० स्यारे

भोगवे है ? अने उमभोग ते स्तु फहिये ? अने बीर्थ निहा फोरते हैं (त्यारे गुरु कहें) शिष्य । दानपोताना ज्ञानादि अनत गुणर्ने

भे नीये छै अने लाभ पोवाना स्वरूपनी

(शिष्य कहे छेक) टान ते कोने दिये छै। अने छाभत इयानी थयी ? अने मोग ते इयू नत गुण एप जे पर्याय तेहनो समे समे अ-नती भोग भोगरे छे अने उपभोग वे पोताना ग्रुणनो कहिये वीर्य पोताना ज्ञानादि अनत गुणने विषे फोरवे है इति सामान्य मकारे दानादि पच रुव्धिनो निचार जाणवो ॥ ४॥ एणी रीते श्रीअ यात्मगीताना प्रकाशकरप फर्चानी स्तृति करी हवे कर्चा, जिप्य ऊपर कपा करी साते नये जीवनो स्वरूप प्रति ओ-लग्रा है:-

सगहे एक आया वखाण्यो । ं नैगमे अञ्चर्धी जे प्रमाण्यो ॥ , , १२ अध्यात्मगीता. दुनिध ज्यवहार नय वस्तु विहचे।

अग्रुङ विक ग्रन्ड भासन प्रपचे ॥५॥

अर्थः-सग्रहे एक आया बसाण्या क हेता सग्रह नयना मत्रवाली संचानी ग्रहण कर छ एटले सर्व जीव सत्ताये एक रूप सरीरा है माहे सबह नयने मते मर्न जीन सत्तापे एक रूप जाणनाः अने नैससे अश्रधी जे ममाण्यो एटले नैगर्म जनयी जे प्रमाण्यो फहेता, नैगम नयना मात्रालो एक अश्व म हीने सर्व यस्त्रतो भगाण अते करे है. माटे

सर्वे जीवना आठ रूचक पद्रा, सता काल सिद समान निरापरणपणे वर्ते हे एटले

नेगम नयने मते अश्चयकी सर्व जीव एक रूप

अध्यात्मगीता

निहचे एटले न्यवहार नजना मनजालो वह-चण करीने जोल्यो के एम निह, जीव ना जे मकार जाणजा अग्रह विल श्रष्ट भासन म-

पचे एटले एक अनुद्ध मकारे अने बीजा शृद्ध मर्मार एटले ए अशृद्ध मृद्ध रूप भारत करवा जाणपणारूप औरउदाण करवा साह. वृहचण करी दिखांडे है एटछे जीवना वे भेद-पक सकत कमें सप करी लोकने अते विराजमान ते मिद्ध, अने प्राफी बीजा ससारी तै ससारी ना ने भेद-एक अयो-गी ने नीजा सयोगी पटले चउदमा गुण स्थानना जीव ते अयोगी, वाकी बीजा स-योगी, ते सयोगीना वे भेद-एक देवली

१६ अध्यात्मगीता बीजा छदमस्य एटले तेरमा गुणस्थानन जीव ते केवली बाकी बीजा छदास्य एटले छवस्थना वे भेद-एक शीण मोही, अते बीजा उपमत मोही एटछे बारमा ग्रणस्थानना जीव ते शीण मोही, अने वाकी बीजा उपस<sup>त</sup> मोही ते उपसत्तमोहीना वे भेद-पद अकपापी अने जीजा सरपायी परले अव्यासमा गुण स्थानना जीव ते अक्रपायी, अने बाकी बीजा

सक्षपायी ते सक्रपायीना वे भेद-प्क सूक्ष्म क्षपायी अने बीजा वाटर क्षपायी एटले दलमा गुणस्थानना जीव ते सूक्ष्म क्षपायी अने बाकी बीजा सर्वे बादर क्षपायी ते

वादर कपायी ना वे मेद-एक श्रेणि प्रति-त अने घीना श्रेणी रहित एटले आदमा अन्यात्मगीता. १७ नवमा ग्रणस्थानना जीव ते श्रेणि प्रतिपन्न

अने वाकी तीजा श्रेणिरहित ते श्रेणिरहितना वे भेद---- एक अम्पादी अने वाकी वीजा सर्व प्रमादी एटठे सातमा सूण स्थानना

जीव ते अवमाडी, अने बीजा सर्व प्रमादी, ते प्रमाडीना वे भेद---एक सर्व विरति अने बीजा देश निरति ते देश विरतिना वे भेद--एक विरति परिणामी अने नीजा अविरति

परिणामी तेअनिरित्तना वे मेट-एक अविगति सम्पवस्वी अने बीजा विध्यात्वी, ते मिटपा-स्त्रीना ने मेद--एक भव्य नीजा अभव्य ते भव्यना ने मेट--एक गठी मेदी अने भीजा जीन गठी अमेटी एटन्डे पणी रीते व्यवहार नयना मत चान्डो जेहवी देखें कुनैहवा मेद विद्ये ॥ ५ ॥

अग्रद्धपणे पणसयतेसठी भेद

प्रमाण । उदय विभेटे ब्रव्यना भेद अनत कहाण ॥ ग्राह्मपणे चेतनता प्रगटे जीव विभिन्न । क्षयोपशमिक

असख क्षायिक एक अनव ॥ ६॥ अर्थ'--व जी व्यवहार नयने मते अ-

श्रद्ध प्रकारे करी जीवनो स्वरूप ओल्खाने छै अशुद्धपणे पणसयतेमठी भेद ममाण,

ण्टले पणसयतेसठी कहर्ता जीवद्रव्यना पाच रेसड भेदनो ममाण जाणवो उदय

अध्यारमगीता १९ विभेटै द्रव्यना भेट अनत कहाण एटले चटप विभेदे कहता उटय भावनें जोगे करीने जीता तो द्रव्यना भेट अनन कहाण केहता जीत द्रव्यमा अनता भेट जाणवा श्रद्धपणे चैतनता प्रगरे जीव विभिन्न एटले श्रद्धपणे फेहता शुद्ध प्रकारे करीने, अने चैतनता फहेता जीवनी चेतना, अने मगटे कहेता निपने, अने विभिन्न कहेता अभेवात्मपणे फरी जाणवी लयोपसमिक असख लायिक एक अनन पटले क्षयोपमिक कहेता क्षयो-पसम भावना असरा कहेता असग्याता भेट कहिय जने शाथिक एक अनस परछे क्षायिक कहेना क्षायिक भावनी एक भेट

जाणतो ॥ ६ ॥

अध्यात्मगीता हाल:---

₹4

नामधी जीव चेतन प्रवृद्ध । क्षेत्रधी असल देशी विशुद्ध ॥ व्रव्यथी स्वग्रुण पर्याय पिड । नित्य

पकरव सहजी अखड ॥७॥ अर्ध'--- हा च्यार विक्षेप करी जीउनी

स्वरूप ओल्खाने है नामधी तीन चेनन मसुद्ध परले नाम थकी जीवन चेतन कहिये परले चेतना छक्षणो ते जीव चेतना ते इस के नान,

इर्शन चारिन, तप, वीर्य, अने उपयोग ए ि वितना अने मग्रद्ध कहेता पहची

ia जाणवी क्षेत्रधी असल देशी विश्रद

एटले क्षेत्रधकी कहेता जीवने स्वक्षेत्र रूप असलमद्दशी कहिये अने निगुद्ध कहेता शुद्ध निर्मलपणे करी जाणवी द्रव्यथी स्वगुण पर्याय पिंड एटले द्रव्य बक्ती कहेता जीव द्र-व्यने स्वगुणने स्वपर्याय तेहनोन पिंड कहिये निस्य एकत्य सहनी अखड एटले निस्य

अध्यात्मगीता

कहेता भारपकी जीन सदा काल शास्त्रतो निस्य वर्ते ठे अने पकस्य पणे वर्ते छै अने सहजी अखड कहेता सडन धकी जीव अखड छे, कोईनो छेयो टेदाय नहीं, भेषो भेदाय नहीं, निर्लय अखड सदा काल शास्त्रतो छै ॥ ७॥

<sub>चालः</sub>— रुज्ज सूये विकल्प परिणामी जीव

২২

स्त्रभाव। वर्तमीन परिणतिमर्य व्यक्ते

अध्यात्मगीता

ग्राहक भाव॥ शब्द नये निज सत्ता जोतो इहतो धर्म। गुद्ध अरूपी चेतन अणग्रहतो नव कर्म ॥ ८॥ अर्थः - रिज सुवे विकटप परिणामी जीन रनभान एटले रिज सुवे कहता ऋजुसून नयने मते अने विकल्प परिणामी जीव स्व भाव एटले जीव नो स्त्रभात कहेतां जीव विकल्प रूप परिणामी भारने ग्रहे हैं वर्तमान परणतिमध व्यक्ते ब्राहक भाव एटले नर्त मान फेइता वर्तमान समय ने जीवनो जेहरे उपयोग बेर्त त समय ते जीवने, ए नयन मन बालो वेहवो कहि बोलाव शब्द मर

नेज सत्ता जोतो इहती वर्ष एटले शब्द न ाने पते निज सत्ता केहता पोतानी आत्म उचाने जोतो. अने इहतो धर्म नेहता ज्ञान, (र्शन, चारित्र आदि अनतो धर्म पोतानी आ-म सत्ताने तिपे ग्यो ठै तेहनी मगट करवानी हा (इन्छा) करता शुद्ध अरूपी चेतन अणग्रहतो नत्र कर्म घटले श्रद्ध कहता निर्मल कर्मरप मलथकी रहित, अने अरूपी कहतां पुद्गलादि विभाव दशाना रूप थकी रहित, अने चेतन फहना ज्ञानादि चेतना रूप लक्षण करीने सहित, अणग्रहतो नत्र कर्म एटछे अ-

णग्रहतो नव कर्म कहता जे समय ने जीउनी एहरो उपयोग वर्षे ते जीउने नक्ष कर्मनो ग्र-

इण न जाणवो ॥ ८॥

अध्यातमगीनाः

53

इणि परे शुद्ध सिद्धात्म रूपी। मु-

25

क्तपर शक्ति व्यक्त अरूपी॥ सम-किती देशवित सर्व विस्ती। धरे साध्य रूपे सदा तत्त्व प्रोति॥९॥

अर्थ'-- पटले बली जीव केहवी है ? के इण परे शुद्ध सिद्धात्म रूपी एटले एणी

पर शब्द कहता निर्मल कमें रूप लेप धर्मी रहित छै अने सिद्धात्मरूपी कहतां निश्चय नयने मते जीत सत्ताये सिद्ध समान अरूपी

टै मुक्तपर शक्त व्यक्त अरूपी एटले मुक्त

पहता जे समय जे जीवनो एइवी रीते भासन रूप उपयोग वर्ते ते समय ते जीव मुक्तपर कहतां कर्मयकी मुकाय है. अने एहवी रीते कर्मथकी मुकाय त्यारे शक्त, व्य-क्त, अरूपी एटले शक्त कहतां अनता ग्रण पोतानी आत्मसत्ताने विषे शक्ति पणे रहा। 3. ते व्यक्त कहता व्यक्तिरूप अरूपी पणे मगद थता जाय है एटले ए किहा किहा जीव ? पहचा रीते जाणपणो कोने थयो ? पहनी रीते भासन कोने थयो ? पहनी रीते रमण कोण करे छे? के सम्यकत्वी देश विरति सर्व विरति एटले सम्यक्ती फहता चौथा गुण स्थान वाला जीव, अने देश विरति कहता पाचमा गुण स्थान वाला जीव, अने सर्वे विरति कहता छठा सातमा

गुण स्थान बाला जीव, तेहनें एहती रीते

श्रेष्यीतमगीता

74

## २६

जाणपणा रूप भासन रमण थयो छे. अति धरे साध्य रूप सदा वत्व मीति पटले धर साध्य रूप कहेता पोतानो आपनस्य निरा-वरण करवा जोवे जो त्यां जेहनी प्रीप्ति पर्ने

अध्यातमगीता

स्यारे ॥ ९ ॥

समभिरूढ नये निरावणी ज्ञाना-विक गुण मुरय । शायिक अनत

लागी है, अने पहनी रीते मीति मतें लागी

चतुप्टय भोगी मुग्ध अलक्ष ॥ एव

भूते निर्मेल सकल स्वधर्म प्रकाश। एपी पर्याय अगटे पूर्णशक्ति विश

11 02 11

**अध्यात्मगीता** अर्थ:-समिर्ट नये निरावर्णी हा-नादिक गुण ग्रुएय एटछे समिमस्ड नयने मते भूक्छ ब्यान रूप अग्निये करी घाति

कर्पने क्षये. निरावणीं कहेता कर्मरप भावरणने अभावे, ज्ञानादिक अनत ग्रुण रूप लक्ष्मी मते मगटे अने सायिक अनत चतुप्रय भोगी ग्राप अछल एटले शायिक अनत चत्रप्य बहेता अनतज्ञान, अनतदर्शन,

अनत चारित्र, अनतवीर्य, ए चार अनत चत्रप्रयूच्य धायिक भावे मगढे अने भोगी **पहेता तेहना भोगने विषे सदा काळ** निरतर पणे जेहनी उपयोग मतें वर्ते है अने मुख

कहेता ने भोला लोक, अने अलक्ष कहतां वैद्रना रुख्यांमें ए स्तरूप न आवे. पवभूते

वर्त्तमान नगम ३ अने सग्रह नयना वे भेद् -एक सामान्य सग्रह ४ अने बीजो निरीप संग्रह ६ अने न्यवहार नय ना वे भेद-एक श्रद व्यवहार ६ अने बीजो अश्रद्ध व्यवहार ७ अने रजुस्त नयना वे भेद-एक सूक्ष रज ८ अने वीजो बादररुज ९ शब्दनयनो पक्त भेद १० समाभिरुद नयनो एक भेद ११ अने एवभूत नयनो एक भेद १२ हवे वश द्रव्यास्तिक नय कहता निस्य द्रव्यास्तिक १३ एक द्रव्यास्तिक १४ सत्द्रव्यास्तिक, १५ वक्तव्यद्र पास्तिक १६ अशुद्ध द्रव्यास्तिक १७ अ वय द्रव्यास्तिक १८ परम द्रव्यास्तिक <sup>2</sup>९ तुद्ध इच्यास्तिक २० सत्ता द्रव्यास्तिक

. २२ इवे पर्यायास्तिक

अध्यात्मधीता

30

बध्यात्मगीता ११ नवना ६ भेद कहे छै-एटले मयम दृश्यपर्याय २३ दृश्य व्यजन वर्षाय २४ गुण पर्याय २५ गुणव्यंजनपर्याय २६ ६२भाव पर्याय २७ अने

विभाव पर्याय २८ एगी रीते अठावीसडप-नयनो स्वरूप जाणवो अने भग कहता एक

एक नयना सो सो आगा फहता ७ नयना सातसो ( ७०० ) भांगा जाणवा अने सगे कहता तेहने सगे करीने सनूरो करता जी-घने दीपतो कहिये अने साउना सिख्ता रूप पूरी एटले जीव ने पूरो क्यारे कहिये ? में साउना कहता शुद्ध व्यवहार नयने मते घोषा गुणम्यानयी माटी याउत् तेरमा चड-दमा गुणस्थान पर्यंत साउक याउं करी नि-

अप नपने मते सिद्धिरूप कार्य प्रतें नीपजे

त्यारे जीवने पूरो कहिये. अने साधक भार त्या लगे अधरो एटले जीवने अधरो

मेम कहिये ? क साधक मात्र कहता शब्द समिभरड नयने मते देशविरति सर्वविरति रप साधक भाव है त्यालगै जीव ने अधूरो फहिये अने साध्य सिद्ध नहीं हेत सूरी पटले साभ्य कहता पोतानो आत्मा निरापर्ण

32

फरपा रप जोने जो अनेसिद्ध कहता शुद्ध निथय नय मिद्धिर्प कार्यभत नीपने

स्यार नहीं हेत सुरी एटले नहीं हेत फहता जीवन साधन रूप कोई हेत नो मयोजन न रयो॥ ११॥ 🗸 अनादि अतीत अनते जे

पर रक्त । सगांगी परिणामे वर्तें मोहाशक्त ॥ पुद्गल भोगे रींइयो धारे पुद्गल खध । पर कर्ता परि-णामे बांधे कर्म नो बध ॥ १२ ॥

अध्यातमगीता

थकी माडी में देराबे 3 पटले काल अनाहि अतीत अनते जे पररक्त पटले अतीत कहतां अनाढि काल च जीवनें पर पुद्गलादि वि-भाव दशोंं त्रिपे रक्त परिणाम वर्तें ठे ते स्पेण करोंने १ तो के समाशी परिणाम देंतें मोद्दाशक पटले समागी कहता जीवें करवों

सग, त्यारे मोहं दीवो अग एटले सगागी परिणाम थया तेण करीने स्वो निगाद थयो ?

अर्थ:--हिंचे जीवनो स्वरूप निगीद-

१४ अध्यासमानातः नोके पुद्गल भोगे राज्यो वाने पुद्गण्डं स्वरः एरले पुद्गल भाग राज्यो कहता पुर्णलन्ना भोग में पिप नाप रोज्यो, एटल निम र पुर्णलन्ना भाग मिल निम निम जी

वन अविक २ रीत उपने अने एडवी रीत

पुरुगलना भोगने निर्प राह्न उपनी स्पार्ध पारं पुरुगल खब एटड पारं पुरुगल खब एटड पारं पुरुगल खब फहा। पुरुगलना निर्मा ने नेलवानी निर्माण के नेलवानी निर्माण के नेलवानी निर्माण के नेलवानी नेलवाने नेलवाने नेलवाने नेलवाने के नेलवाने नेलवाने के नेलवाने के नेलवाने के नेलवाने के नेलवाने के नेलवाने नेलवाने के नेलवाने

थयां अने एहती रीते पर नो कर्ताध्यो रेबाने कर्म वस एटले सांधे कर्प नी वर्ष

वंधक वीर्य करणे उदेरे । विपाकी प्रकृति भौगवे व्ल विखेरे ॥ कर्म

उदयागता स्वग्रण रोके। ग्रण वि-ना जीव भवो अव होके ॥ १३ ॥ अर्थ'-- प्रथम प्रार्थ करणे उदेरे एटले

च ब क कहता जीव नवा नवा वर्गना बच मते ं बीर्य कहतां पराक्रम, अने करण कहतां इदा,

केम बाचे ? तोके नीर्य करणे खडेरे एटले

अने उदेर कहतां तैइनी पेरणाये करीने,

3£ अध्याहमगीता विषासी महाति भोगन दल विग्वेरे एटले निपाको कहना श्रमाश्रम मकृति रूप विपाक ना दर्शया जीवां सचाये रहा है, ते उदे आवे ते भोगवी में विरेशे कहतां खेरवे अने तेहने विषे परिणाम रूप मननी चिकासे करी नता वर्मना व अ अते वांचे, अने पहबी रीते नवा कर्मना वध शत वाध्या त्यारे कर्मे उदय वदयता स्वगुण रोके पटले कर्म उदय कहती पहनी रीते ते कर्म ने उदय करी ने स्व कहता पोताना गुण तैहनें रोक कहता दकि, अने एहती रीते पोताना गुण ने डिक स्पारे गुण विना जीव भवोभर दाके एटले गुण फहता गुण विनानो जीव निर्मुणी स्पारे मनोमन ने निषे दोक फहता

अध्यात्मसीता माथडे ( भ्रमण करे ) त्यारे शिष्य कहे कैम मायहे 1 ॥ १३ ॥

30

आस्म ग्रण आवर्णे न घंहे आस्म धर्म । ब्राहक शक्ति प्रयोगे जोडे

सर्म ॥ पर छाभे पर भोग ने योगे थाये पर कत्तीर। एह अनादि प्रवर्ते वाधे पर विस्तार ॥ १४ ॥

अर्ध:-- एटले आत्म ग्रुण आवर्णे न ग्रहे आत्म धर्म एटले आत्म ग्रुण फहता

एहत्री रीते पोताना आत्मगुणने कर्प रूप आवर्ण मते लाग्यो, त्यारे न ग्रहे आत्म धर्म. चारित आदि अनतो धर्म आत्माने विषे रयो छ, तहना ग्रहण मते न करे अने पश्ची रीने आत्मगुणनो ग्रहण मतें न करे त्यारे, ग्राहक शक्ति मयोगे जोडे पुद्रल समी, पटले ग्राहरू शक्ति कहता आ मानी ग्राहरूता रूप

जें शक्ति, अने प्रयोगे कहता तेणे करीने जोडे पुरुल समें एटले जोडे पुरुल समे फहता फर्मेन्प पुरुजना राव मते जोहन माच्या, अने प्रवा रीते कर्मस्य पुरुष्णना

स्वथ भत जोडवा माड्या त्यारे, वरलामे पर भोगने जोग थाये पर कर्चार एटले परलामे

। श्रमाश्रम रूप पर पुद्रलना लाभ

• वेहने विभे छाभ पणी मान्यो १ अन

अध्यातमगीता 30 दान फहता धुभाश्चम रूप पर पुहलती टान देईने तेहने विषे दान पणी मान्या व अने भोग कहता अभाजम रूप पर प्रहलना भोग मिल्या, ते:ने विषे भीगपणी बान्या ३ अने उपभोष कहता धुभाशुम रूप पर प्रद्रगलना उपभाग मिरुवा, तेहने विषे उपभाग पणी पान्यो ४ अने ए टानाटिफ चार लवियने विषे बीर्यनी शक्ति हती ते फोरववा माडी

विषे वीपेनी शक्ति हती ते फोरववा माही
एटल ए पर्च लिटा स्परूप अनुनाड पणे
जीव भूटयो त्यारे पर अनुनाइ पणे अपली
( खलटी ) फोरवजा मांडी अने पहनी रीते
अवली फोरवजा मांडी अने पहनी रीते
अवली फोरवजा मांडी, त्यारे जोगे याथे पर
फर्चार एटले जोगे कहता तेहने जोगे करीन
ज़ीव परना कर्चा थयो अने परना कर्चा

थयो त्यारे, एह अनादि भनतें वाधे पर

रीते अनादि काण्नी जीवने अवला मवर्ती, थई त्यारे वार्ष पर विस्तार, पटले वार्ष पर

विस्तार फहता जीवने कमें रूप पर प्रह्रगङ्गी विस्तार मते वधना माट्यो, त्यारे शिष्य करे फर्मरप पर खुद्रलनो विस्तार मते केम वधना मिल्ह्यो १ ॥ १४ ॥

विस्तार एटले एह अनादि कहता एहवी

एम उपयोग वीर्यांदि लव्धि । पर भाव रगी करे कर्म वृद्धि॥ पर दयाः । यदा सुह विकल्पे । तदा तदा कर्भतणो वधकल्पे॥ १५॥ , अर्थ'—एटले एम उपयोग बीर्पाटि हिंदे कहता एडवी रीते वीर्यादि पचलविध रे विषे जीवनो अवलो उपयोग बरर्यो. अ**ने** रम अवलो उपयोग वर्त्यो स्यारे पर भाव ली करे कर्म बृद्धि एटल्डे पर भाव एंगी महताजीव पर स्त्रभात रूप विभाव दशा ने विषे रगाणो अने एहवी रीते पर स्वभाव ह्य विभाग दक्षाने विषे रगाणो त्यारे करे कर्भ दृद्धि फल्ता ते जीने नवा नवा कर्मनी ष्टब्हि मर्ते करवा मांडी अने पर दयादिक पदा मुह निकल्पे एटले यदा कहता जेवा रे जीवनो पर दयाढि श्रुम विकल्प थयो तदापुण्य कर्मतणो वचकर्पै एटले तदा

कहतां तिवारे जीय प्रण्य रूप कर्मनो वध मतें

अध्यात्मगीता

કુદ

अध्यान्यगीता वारे, अने एहवी रीते श्रमाश्रम रूप फर्मना धात्र प्रते चाध्या त्यारे ? ॥ १६ ॥

तेहिज हिसादिक द्रव्याश्रव करतो

चचल चित्त। फटक विपाकी चैतन मेले कर्म विचित्त ॥ आरम ग्रण में

हणतो हिसक भावे थाय । आस्म

धर्मनो रक्षक भाव अहिंसक क-

हाय ॥ १६ ॥ अर्थ--तेहिन निसादिव द्रव्याश्रा

े चचल चित्र एटडे तेहिल हिसादि ते जीव पहिले गुणस्थान अणा उप-

योगे विश्वात्व मानै, एडवी रीते हिंसादि आश्रव रूप प्रणामे चचल स्त्रभाने श्रुभाशम रूप आश्रवने दलीये करी पोताना गुणने हाँके कहता हणे, अने एहती रीते पोताना ग्रणने हण्या त्यारे. कड़क विपाकी चेतन मेले कर्म विचित्र पटले कटक विपाकी , बहुता ते जीन कहवा निपाक मते भोगनै: अने मेले कर्म जिचित्र एटले मेले कर्म जिचित्र कहता जीव विचित्र विचित्र प्रकारना कर्भ प्रते मैठना (ग्रहण करना) माड्या, अने एडवी रीने कर्म पत मेलवना माड्या त्यार. आत्म शुणने इणतो हिंसक भारे थाय पटले आत्म गुणने इणतो कहता एहवी रीते जे पोताना आत्माना ग्रुगने इण तेहने भार

अध्यात्मगीता

83

रीते भाव दया रुप मणाम बत्यां त्यारे ?॥१६॥

आसम ग्रण रक्षणा तेह धर्म । ख राण निष्वसणा ते अधर्म ॥ भाग प्याप्त अनुगत प्रवृत्ति । तेहथी ससार हिन्ति ॥ १७ ॥

हिंसा नागे जैने आम धर्मनी रक्षक भार अहिसक क्षाय पटले आत्म धर्मनी रहक

88

महता श्रुभाश्चम विमात हवा रूप पर प्रदुग-

छनी बच्छा बनी रहित, अने एक पोतानी

आत्म सत्ताये नानादि अनतगुण रपधर्म रही

छै, तहनी रक्षा पते करे छै. ते जीवने भाव

अहिंसक पहला भाग दया कहिये अने एहबी

शस्यातमगीता अर्थ:--आत्म गुण रक्षणा तेह वर्म एटले धर्म कोने कित्ये ? तोके एहवी रीते जे पोताना आरम गुणने निरावर्ण **क**हतां मगट करवानी वाच्छा रूप प्रणाम मते वर्ते है, अने ने गुण मगट्या है ते गुणनी रक्षा करे ठेते जीवने धर्मा कहिये अने स्वग्रण वि उसणा ते अधर्म एटले अपर्म ते कोनें फहिये तो के स्व कहना पोताना राण तैहने विध्वसणे कहता कमे रूप आवर्णे करि हणें ते जीवर्ने अवर्षी कहिये अने भाव आ चात्म अनुगत पनुत्ति एट रे भाग अ यान्य कहना एहती रीते जेहन चाण पणी थयो है, एहबी रीते जेहने भासन थयो है, एहती रीते जे रमण करे के ते जीव में भाव अध्यासी क

अध्यात्मगीता ¥ą हिये अने पहनीरीते मान अध्यातम् स्प गुण प्रणम्या त्यारे, अनुगत प्रवृत्ति एटले अनुगत्, महता एहवा रीते के पोताना आत्म स्वरूप में पृत्वि कहता समण यते वर छै अने पहनी रीते ग्मण मन करे स्यारे तेहची होय ससार छित्ति एटले ते जीव ससारनी छैह यहता पार मते पाम त्याने शिष्य करे छहती रीत ससारनी पार वर्ते उम पाने १॥ १७॥

पह प्रवोधनो कारण तारण सड्-

गरु सग। श्रुत उपयोगी चरणानदी ग्रह रग ॥ आतम तत्त्वालंबी रमता आत्म राम। शुद्ध स्वरूप नें भोगे जोगे जसु विश्राम ॥ १८ ॥

अर्थ -एटले एह प्रयोग रहता एह्नी रीते मतिबोध किहा पामीये १ अने कारण कहता पद्दरी रीते मतियो बनो कारण किहा मिले ?

अने तारण कहता पहनी रीते प्रतिवीघ देईने ससार थकी कोण तारे विशेष सद्युक्त सग

सद गुर केटना है जाने अन उपयोगी चरणा नटी कर गुरु रग एटले श्रुव उपयोगी कहतां

एटले सद्ग्रह मग कहता में भला ग्रह तेहनो संग करता तेहनी सेना कहता, तेहनी मक्ति फरता ससार समुद्र नो पार मते पामीय जला

श्रुत ज्ञान ने विषे सदाकाल निरतर पणे उप-

21 योग जेहनो वर्ते है जन वली सद्गुरु केहवा है ? ताक चरणानदी एटले चरणानदी कहता

चारित्रने विषे सदा काल निरतर पण जहनी आनद पणो वर्ते छै; अने कर गुरु रग एट<sup>हे</sup> कर गुर रग कहता जो पढवा गुक्तिहारे रग लगावीय तो ससार समूत्रनो पार मते पामीये अने वली सदगुरु केहवा छै ? तो के आत्मतत्त्वालवी रमता आत्म राम पटले

आत्म तत्त्वालवी कहना सदा काल निरतर पणे जे पोताना आत्म, स्वरूपना आलयनने निपे वर्ते छे अने उली सद्गुर केहवा छे ?

तोक रमना आत्य राम एटले रमता आत्म राम कहतां सटाकाल निरंतर पणे जे पोताना शात्म स्त्ररूपने निषे रमण मते करे छै । वही

अध्यात्मगीता सदग्रर केहवा है ? तो के शुद्ध स्वरूपने विषे भोगे जागे जस विश्राम एटडे शुद्ध फहतां जे निर्मल प्रम स्प मल यक्ता रहित पहनी पोतानो स्वरूप, अने भोगे कहता तहना भोगने विषे अने जोगे कहता मन वचन कावाना जोगना विश्राम पणा वर्ते है अने पली सदग्रम केटबा छे <sup>१</sup>॥ १८॥

सद्गुरु जोगयी वहुल जीव। कोइ वली सहजिथ थड सजीव ॥ आत्म

शक्ति करी गठिभेदो । भेद ज्ञानी थयो आत्म वेदी ॥ १९॥

## अध्यातमगीता अर्थः—पटले नहुल कहता घगा जीव

पहनी रीते सद्गुकना जोग मिल्या थकी सम्यक्त्वना माप्ति मते पामे, अने कोई पछी सहज्ञथि थः मजाव एटले कोइक जीव सहन यही सजीव थड़ने चार प्रत्येक बुद्धनी परे पिण समिक्ति पामे पिण आत्मशक्ति फरी गढी भेदी एटले जिहाँ गढी भेद फरवों तिहा तो पोताना आत्मानी शक्तिये अपूर्व परण रूप वीर्थे करीने जो गठीने भेदीये तो समितिनी माप्ति मते पामीये, अने पहची रीते समकितनी गाप्ति नते पाम्या त्यारे भेद हानी तयो आत्मप्रेदी एटल भेदशानी ऋहता मन अजीवनी ओल्साणे, स्व परनी चैचण ते जीवने भेदतान मगटे, अने एहवी

अध्यात्मगीता राते भेदतान पंगट्यो न्यारे ? तोके थयो आत्मेरेदी कहता पाताना जात्मानी स्वरूप मगट करवो तेहना बेटने विषे सटा फाल निरतर पणे उपयोग जेहनी वर्ते, अने एहवी रीते उपयोग मेर्त केम बत्यों 7॥ १९॥ द्रव्ये ग्रण पर्याय अनतनी थई पर-तीत । जाण्यो आत्म कर्ता भोका

-गइ परभीन ॥ श्रद्धा योगे उपनो भासन सुनये सत्त । साध्यालवी चेतना बळगो आत्म तत्त ॥२०॥ अर्थः—पटले इव्ये गुण पर्याय श्रुनत् नी थई परतीत एटले इव्य कहता

## ५५२ अध्यात्मगीता पाप १ अधर्मान्तिकाय २ आक्रास्तिकाय १

पुत्रज्ञानिकाय ४ काल ५ जने जीव ६ ९ छ, द्रव्य जने ग्रुण पर्ण्याय कहता तेहना अनता अनताग्रुण ने अनता पर्याय तहनो भासन कहता जाणपणा रूप प्रवीत मत् मगटे, अने षहवी रीते प्रतीत् प्रति प्र

गर्टी त्यारे, जाण्यो आत्म कर्त्ता भोता गा परभीत पटले जाण्यो आत्म कर्ता कहत व्यवहार नयने मते जायने शुमाश्चम क्ष् विभाग दशानो कर्त्ता कहिये अने निश्च नयने मते जियन पीतार्गा हानारिये अन

ावधान दयाना कत्ता काहर अन । गय नपने मते जिवन पोताता हानादि अन ग्रुण रप जे लक्ष्मी तेहनो क्चां प्रदिये अ मोक्ता वहता व्यन्दार नयने मते जीव ग्रुपाग्रुभ रूप पर शुद्रस्त्रनो भोक्ता कहिर अध्यात्मर्गीता ५३ अने निश्रय नये जीवनें पोताना ज्ञानादि यनंत ग्रुण रूप जे पर्य्याय तेइनो भोक्ता क-रिये अने पूर्वा रीते निश्रय व्यवहार नये पोनाना आत्माने कर्चा भोक्ता पणे जाण्यो त्यारे, गृह पर भीत. एटले गृह प्रभीत

भवना भय प्रते केम दृश्या शितों अद्भा पीने चपने भामन छुन्ये सस्य प्रदर्श अद्भा फहता अद्भान योगे अने छुन्य फहतां मर्छे नये करीने सस्य भासन रूप मतीत मर्वे मण्डे अने पहनी रीते सस्य भासन रूप

प्रतीत प्रत प्रगटी स्वारे साम्याखरी चेतना वर्छमा आत्मतस्य एटले साम्य बहुता पोतानो आत्मा निरावणे कर्वा रूप जेवे जो, अने

फहता ते जीवनें भव ना भय मते दले. एटले

48 चेतना वलगी कहतां त्या जेहनी चेतना श्रॅ

लागी अने एहवी रीते चेतना लागी स्यारे ? ॥ २०॥

इद्र चद्रादि पद रोग जाण्यो।

**शुद्ध निज सिद्धता धन पिछाण्यो**॥ आतम धन अन्य आपे न चोरे।

कोण जग दीन वली कोण जौरे

li \$8 n अधा - ईंड चडादि पद रोग जाण्यो

एटले इब चद्रादि महतां इब चद्र आदि चमें वर्ती वासुदेवना, बलदेवना इद्रीजनित पुरलीर

अध्यास्मगीता ने सुल, तेहनें रोग समान करी जाणे एटले पहनी राते इंद्री जनित प्रद्रलीक सुखने रीग समान करी केम जाण्या ? तो के शुद्ध निज सिद्धता धन पिछाण्यो एटले श्रद्ध कहतां जे निर्मल कर्म रूप मलयकी रहित, एडवी पोवाना आत्मानो सिद्धि रूप के धन, तेइने पिछाण्यो कहता जाण्यो एटले एहवी रीते पोताना आत्मानो सिद्धि रूप धन मते ओट ख्यो त्यारे आत्म धन न आपे न चोरे. पटले आत्म धन घडता पोताना आत्मानो **झान, दर्शन, चारित्र आ**ढि अनत गुण रूप , जे धन, न आपे न चोरे एटले न आपे कइतां ए कोईने आप्यो अपाय नहीं, अने न चौरे कईता ए कोईनो लीघो लवाय नहीं.

QE

कौण जग दीन बली कोण जोरे एटले जगा

मे कोई दीन पिण नथी जे तहने आपे, अने

जगतमे कोई जोरावर पिंग नथी जो सिंची

लेवे एटले निधय नयने मते सर्वे जीव सत्ताये एक रूप सरीखा ब्रानादि अमेत गुण रूप लक्ष्मीना घणी जाणवा पहले लाही मेरे लालकी, ज्या देख त्या लाल (इसमें कौन है कगाल ?) तोके दिलकी गाव खोलत नहीं तांवे फिरै कगाल ॥ २१ ॥

आरम सर्व समान निधान महा सुख कद । सिद्धतणा साधरमी सत्ताये ग्रण वृद ॥ जेह स्वजाति

तेहथी कोण केरे वर्ध वघ। प्रग-ट्यो भाव अहिंसक जाणे ग्रद प्रवधा ॥ २२ ॥ अर्थ:-एटले आत्म सर्वे समान कहता सर्वे जीव सत्ताये एकरूप सरीखा सामान्य पणे करी जाणवा. अने निधान कहतां निश्चय

शध्यात्वातीताः

नपने मते सर्वे जीव सत्ताये ज्ञान, दर्शन, चारित. रूप निधाने करीने सहित है अने महा सख कद पटले महा सख कद फहता निश्चय नयने मते सर्व जीव सत्तापै सखना

फद कहतां मूल सामान्य करी जाणना सिद्ध तणा सावमी सचावै गुण हट एटले सिद्ध

तणा साधर्मी कहतां निश्चय नयने मते सर्वे

40 अध्यारमगीता. जीवना वर्ष सत्ताये सिद्ध समान एक स्प सरीयो करी जाणवा अने गुण हद यही निधय नयन मने सर्वनीय संचिप होने दर्गन, चारित आदि अनत गुण रूप ही कहनां ने समृद्द तिण क्रीन सहित छै अर् एइवी रीत जेड स्वजाति तेहची कोण म वय यथ एटके स्वनाति कहतां सर्व जीव सत्ताय एकरूप बरीसा छै. एक डिकाणेप आच्या, अने एक दिकाणे जासे देहशो की करे वथ वथ पटले तेहथी वथ वथ करी तिण स महारे देवन भेदन रूप विरोध भा फरवो न घंटे एटले एहती रीते विरोध भा केम न करं ? ता के पगटयो भाव अहिंस जाणे शुद्ध वषय, एटले बगटची भाव अहि

अध्योत्मगीता ५९

सक् कहता ते जीवने भाग दया रूप अहिसक पणे मगटे अने एहवा रीते भाग टया रूप अहिसक्तपणी मगटे अने एवी रीते भाग टया रूप अहिसकपणी मगटयो त्यारे जाणे थुद्ध

मयपु प्रक्षे जाणे श्रद्ध मबन्य कहता ते जीवने श्रद्ध मित्रोयनो लाम मते जाणरो अने पहती रीते श्रद्ध मित्रोयनो लाभ ययो त्यारे ॥२२॥

ज्ञाननी तीकेणता चरण तेह । ज्ञान एकत्वता ध्यान गेह ॥ आत्मता दारमता पूर्ण भावे । तदा निर्मेळा-

दारमता पूर्ण भावे। तदा निर्मेळा-नद सपूर्ण पावे॥ २३॥ अर्था—गाननी तीक्ष्णता चरण तेह ६० अध्यातमगीता पटले यरण पहतां चारित्रवत जीव ते कोने फहिये १ तो के जीव अजीव रूप नव तत्व पट द्रव्य, नय, निक्षेप, ममाण, जस्समे, अप-

बाद, निश्चय, व्यवहार, द्रव्य, भावनी स्वरूप

जाणि, जीव सवाने ध्यापे, अजीव सवाने त्याग करे ज्ञान, दर्जण, चारित रूप शुद्ध निश्चप नप ज्ञाननी सीक्ष्णता रूप उपयोग जेहनो वर्ते, तेह जीत्रने चारित्रयत करिये ज्ञान ध्यान गेह पटके ध्यान नो गेह कहता प्र

जेहनो वर्ते, तेह जीवने चारिजयत कारिय झाने ध्यान गेह एटळे ध्यान नो गेह कहता पर ते कोन कारिय ? तो के एहती रीते जे पो ताना जात्म स्वरूपना झान रूप ध्यानने विषे एकत्वपणे, सदाकाळ निरतर एणे, लेहने उपयोग वर्ते ते जीवने व्याननो गेह कहता पर पर्यं कहिये एटळे एहती रीते झान ध्यान

अध्यातमगीता. \$3 रूप जीवनो उपयोग वर्त्यो त्यारे; आत्मता दामता कहता जात्मानी तदस्य स्वरूप जेहनो सत्ताये रहा छ तहनो, अने ता पूर्ण भावे एटले ता कहता तिमज अने पूर्णभावे कहता शुद्ध निश्चय नय सम्पूर्ण माने करीने

सहित तदा निर्मेलानद सम्पूर्ण पाने पटले तदा फहता तियारे अने निर्मल कहता कर्म रूप मलयकी रहित अने नद कहता आनद मयी. अने सम्पूर्ण पाने कहता सिद्धि रूप कार्य प्रते सम्पूर्ण भारे करीने नीपने अने गहरी रीते सिद्धि इप कार्य सम्पूर्ण भावे करीने नीपने त्यारे ? ॥ २३ ॥

चेतन अस्ति स्वभाव में जेह न

भासे भाव । तेहथि भिन्न अरोवक रोचक आत्म स्वभाव ॥ सम्यक्त भावे भावे आत्म शक्ति अनत।

कर्म नाशनो चिंतन नांगे ते मति-वत ॥ १८ ॥ अर्थ:--चेतन अस्ति स्वभाव में जी

न भागे भाग एट डे चेतानो अस्ति स्वभाव पहना शुद्ध नियय नय पोतानी आम सत्त ने तिप तानाति अनतगुण रूप स्काटिक ग्रह समान अस्ति स्वभाव रूपो है; तेहना फी माले नास्ति पणो नथी; जेह न भामे भाव पटछे जेह न भासे भाव फहता ए अस्ति है, ते व्यवहार नवर्ने धते, पिण नास्तिपणे जाणवी तेहिब भिन्न अरोचक रोचक आत्म स्त्रभाव पटले तेहिब भिन्न कहता ए शुभा-ग्रुथ विभाव द्शा रूप क्रमधकी भिन्न कहता

हुदो ठै; अने अरोचक करना ए विभाव दशायरी पहबी दष्टि बाट्य ओवनो अरुचि भाव उर्चे ठै त्यांगे शिष्य कहे रचि किहा वर्चे ठै ? तोक रोचक आत्म स्वभाव, एटले

वर्षे 3 ? तोके रोचक आत्म स्वभाव, प्रत्ये रोचक आत्म स्वभाव कहता एडवी रीते जाणवण रूप रमण जेहनें थयो 3, तेह जी-वर्ते एक शुद्ध चिटानद प्रमुख्योति पूर्णसद्धा

83 रप निर्मेशनद पहनी पीताना वात्मानी स्वरूप मगढ करता, राचक कहना कवि जेहनी वर्त है जो एहती गते कचि मर्ते वर्ती त्यारे, सम्यक्त भाग भाव आक्राक्ति अनत एटरे सम्यक्त भाग कहता एइवा राते जाणपणा रूप सम्यक्त भारे करीने जेणे पोताना आत्मानी अनती शक्ति मते जाणी है, अने एहत्री शीते अनतप्तक्तिः मते जाणी स्यारे, पर्भ नाशनो चिंतन नाण ते मतितत परले मतियत कहतां एहता निर्मल युद्धिना घणी शुद्ध भामत रूप जाणपणे करीने, जेणे पोताना आत्मान वर्म रूप उपाधि धर्मी

रहित, शुद्ध चिदानट निर्मेल परमञ्चोति सत्तावे सिद्ध समान, एडवी रीते जेगे निश्चय

अध्यातमगीता Ęĸ नयने मते जाणपणा रूप अन्तरम मतीत फ़री है, ते जीव कर्ष नाशनो चितन नाणे: कहतां गुड़ निथय नय करीने जीताती स्फटिक रत समान आत्मानो स्वभाव निर्छेप है पटले जिम स्फटिक क्याम इंकर्न जोगे फरी ने इयाप दीखे अने राता डकन जोगे करी ने रातो दीखे: पिण ए दक्ते अभावे जोतांतो स्फटिक निर्मेळी है, तिम आत्मानी स्वभाव श्रद्ध निर्मेल स्फटिक समान छे पिण श्रुभा-धम प्रण्य पाप रूप डक्क्नें जोगे करी कमिस्प आभा (मतिनिमन) पडी है. पिण ए कर्म रूप इकने अभावे करी ने जोतातो आत्मा श्रद्ध निर्मल परम ज्योति सत्ताये सिद्ध समान छै. (गाया) जिस निर्मल तारे रतन

€€ स्फटिक तणी, तिम जे जीव स्वभाव ॥ इ निन वीरेर, धर्म प्रकाशियो. मयल कंपार्य

अभार ॥ निथा जनवियमं इत नरा सा गायाना स्नयन मध्ये परमार्थ जाणवी पहनी रीते शुद्ध भासन ऋष लाण पणाना धणी

वैड जीव पर्म नागना चिन्तन कहता दापर पणो चित्रन विषे न लाव जे म्हारे कर्म की पारे टले अने एडडी रीते कायर पणी कैम स छाते १॥ २५॥

आत्म सत्ता भणीजे निहाले ॥

स्त्रगुण चिन्तन रसे बुद्धि घाले।

शुद्ध स्याद्वाद पद जे सभाले <sup>1</sup>

अर्थ:—स्त्रगुण चिन्तन रसे दुद्धि धाले एटले रम्गुण, कहता पोतानी आत्म सत्तानें विषे ज्ञान, टर्शन, चारित्र आदि अनता गुण रथा के अने चितन रसे वृद्धि धाके पटले चितन कहता तेहना चितन नें

विषे रसे करी न युक्त युद्धि जेहनी वर्ते छे अने पहनी शीते रसे करी ने युक्त युद्धि वर्षी त्यारे, आत्म सत्ता भणी ते निहाले पटने आत्म सत्ता महता झानाटि अनन्त

प्रश्ले आत्म सत्ता महता झानाटि अनन्त गुण रूप पोतानी आत्म सत्ता ने अन्तर दृष्टिय क्रोनि निहाले कहता निरसी ने गोने हैं,अने पहनी रीते पोतानी आत्म 86 अध्यात्मतीला सत्ता ने जोवे त्यारे शुद्ध स्पाद्वांड पद ने सभाजे पटले शुद्ध यहना निर्माट वर्ष रूप लेप यको रहित अने स्यादाद कहता स्यादाद रूप नित्य १ अनित्य २ एक ३ अने त ४ सत्य ६ असत्य ६ उक्तव्य ७ अवक्तव्य ८ एणीरीते आठ पक्षे करीने सहित, अने पद फहता एइनो पोनाना पद वर्ते, अने समाले कहतों जाणे देने छै. त्यारे शिष्य कहे, नित्य अनित्यादि आड पक्षे करीने पोतानी पर

मतें केम सभाले कहतां जाने देखे छै ? त्यारें गुर कहे भी ? जिप्य स्यादाद मनरी में कयी -है - नित्या नित्याद्यनक धर्म समलेक वस्तुः भ्युपगमत्त्र स्याद् बादस्य ॥ त्यारे शिष्य कहे ए नित्य अनित्यादि आढ पत्ते करी

जींनों स्टेंक्प केम जाएगिये ? त्यारे गुरु कहे, व्यवहार नयनें मते उदय माननें नोगे करी जे गीत में जीव यादे जे, ते गीति में नित्य छे अने समय समय आउसी पिट डे यातें अंतिरमं कर्ताहेंगे; पिण ते अनित्यपणा में पीतें नित्य पणे वर्तें छे पटले प नित्य में अनित्य, अनित्य पणे वर्तें छे पटले प नित्य में अनित्य, अनित्य में नित्य, ए ज्यवहार नयनें मतें मेर्यपि जार्जीं। ११

हिंच निश्चय नयन मते नित्य अनित्य पत्ते फरी जीउनो स्वरूप देखाई छ एवछे निश्चय नयने मत जीवना चार गुण झान, दर्जन, चारिज, अने वीर्य, ए चार गुण, अने पर्याय में अन्यावाज अमृति अने अण-अमेंगाह, एटछें एं चार गुण अने

## जीवना नित्य है अने एक अगुर लघु पर्याय जीव ने सर्वे गणमा हानि विद्य रूप चपजवी विणसवी करे है. माँट अनिस्प कहिये अने ए अगुरु लघु पर्णाय सर्व गुण में हानि दृद्धि रप उपजवी विणसवी परे छै तेहमा ए झानादि चार गुण ते निन्य पणी वर्षे छ एटले प नित्य में अनित्य, अने अनित्य में नित्य पक्षनो विचार निधम नयने मने जाणतो ॥ २ ॥

अध्यात्मगीमा

ĠО

हिने व्यवहार नयनं सते एक अनेक पक्षे करी जीवनो स्वरूप देखाडे छै एडले व्यवहार नयनं मते उदय भावनं जोगे करी

े गति में जीव वर्त छे, ते गति में एक छै, फोई नी बेटो, कोई नो वाप, कोई नी भरीजो, एम अनेक मकार जीव में वेटाएणो, काकाएणो, मामापणो, भाईपणो भरीजपणो, रहो ठे माटे एणी रीते अनेक पण कहिये ' पिण ए वेटा. वाप. काका, मामा. भाई, भ-

त्रोन पणामें पोता पणीते एक वत है एटल ए एक में अनेक अने अनेक में एक, पक्षनो विचार व्यवहार नयने मते जाणवो । ३ ।

ह्ये निश्चय नय करी जीवम एक अनेक पक्ष मते देखांडे ठे एटले निश्चय नय करी सर्वे जीवनो घर्म सचाये एक रूप सरीखो ठें माटे सर्वे जीव एक कहिंगे, अने शुण पर्ण्याय ने मदेश अनेक ठै. एटले शुण अतन्ता.

पर्याय अनता. अने मदेश असंख्याता, मारे

अध्यात्मगीताः अनके पिणकहिये;अने ए गुण पर्यायने मदेश

अनेक है, पिण तेहमां जीवपणो एक सरीखी ठे माट एडवी रीते अनेकमें एक पण वृहिये ।

હર

एटले पहवी रीते निश्चय नय करी एक में

अनेक, अने अनेकमें एक पक्षतो विचार जाणको । ४।

असत्य प्रक्ष मते देखाडे हे पटले न्यवहार

नयनें मते जीव पोते पोताना द्रव्य, क्षेत्र, फाल, भावपणे करीने सत्य छे अने परद्रव्य,

परक्षेत्र, परकार, अने परभात्र पणे करीने

असत्य छे एटले व्याहार नयने मते द्रव्य

े जीव द्रव्य जे गतिमे पोते विराजमान

यको वर्चे छे १ अने क्षेत्र थकी कहता जेटली

हिवे व्यवहार नयने अते जीवमें मत्य

ं क्षेत्र पोते अवगाहि कहतां मर्यादारूप पोतानो फरीने रोक्यो है: ? अने काल्यकी कहतां समय रच पोताना आऊखा भगाणे काळ जाय है ३ अने भाव कहता सर्व जीव पोते पोतांना शुभाश्रम रूप भावमें रहा। वर्ते है पटले पहनी रीते व्यवहार नयने मने सन जीव पोते पोताना द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावे करीने सत्य है. अने परद्रव्य, परक्षेत्र, पर-काल, परभाव पणे करीने असत्य छै। पिण

अध्यात्मगीताः.

はき

ए असस्य पणामे पोतानो सस्य पणो वर्षे छे पटके सस्य में असस्य, अने असस्य में सस्य पत्तनो विचार व्यवहार नयर्ने मते करी जाणतो। ६। हिये निश्चय नय करी जीवमे सस्य

अध्यात्मगीता असत्य पक्ष पर्ते दिलाने है एटके निश्चय नयने मते जीन पोते पोताना स्वद्रव्य. स्वक्षेत्र स्वकाल, स्वभाव पण करीने सत्य है. अने परहच्य, परक्षेत्र, परकारू, परभात पण करी ने असत्य ठे एटले निश्चय नयने मते जीव में स्पद्रव्य कहता हानादि गुण जाणवा ? अने स्वक्षेत्र फहता जीव पोताना अमरयात मदेश रूप स्वक्षेत्र अत्रगाहि रह्यो छै 🤊 अने स्वकाल कहता पोतानो अग्रुश्लय पर्ग्याय सदाकाल हानि दृद्धि रूप उपजानी विणसवी करे है ३ अने स्वभाव कहता पोताना गुण पर्याय ४ तेणे करीनें जाव सत्य छै अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल, परभात पणे करी जीव असत्य छे पिण ए असत्ययणामें पो

132

जबक्तव्यं रिप पक्षे करी जीवनो स्वरूप मते देखाने ठै, पटले खदय भार में जोगे करी ब्यवहार नयमें मते जीव पहिले ग्रुण स्थान मुभाडी याउत् तेरमा खबदमा ग्रुण-

स्थान पर्च्यत वर्ते 3, ते जीवना जेटला गुण कैवली भगरानना परुपवामें आपे ते वक्तन्य अने केरली भगरानना परुपवामें न आपे ते अरक्तन्य । ७ । अने निश्चय नयनें मते सिद्ध परमात्मा

गुणस्थान वर्जित लोकर्ने अते विराजगान

UE **अध्यात्मगीता** वर्ते है, तैहना जटना गुण केत्रखी भगवानना परपवामें आवे ते ब्रक्तव्य, जने केवली भग-वानना परववामें न आवे ते अवसच्य ,एहवी रीते निश्चय व्यवहार नय वक्तव्य, अवक्तव्य रप पर्ध करी जीवनी स्वरूप जाणवी ८ इति भाउ पक्षे करी जीवनी स्वरूप ओलखबी अने पदने सभाले एटले पहच पोतानो पद मत समाले कहतां जाणे. ओलखे है, अने पहनी रीते पोतानो पद मतें समाले महतां जाणे, ओ उखे त्यारे, पर घरे तेह मति पैम वाले एटले पर घर कहतां शुभाशुभ दशा रूप ने जड स्वभाव तिहायकी निवासी न पोवानो शानादि अनन्त । रूप जो घर तिहां जेहनी मात मतें वर्चे

छे अने प्रह्मी रीते मति प्रते वर्ची झ्यारे <sup>१</sup>॥२५॥ चाल:-पुण्य पाप वे पुरुगळ दळ भासे

परभाव । परभावे पर सगति पामे

.अध्यात्मचीता

दुष्ट विभाव ॥ ते माटे निजभोगी योगीश्वर सुप्रसन्न । देव नरक तृणमणि सम भासे जेहनें मन

म २६ म अर्थ:--प्रण्य पाप वे प्रहल दल

भासे परभाव एटले पुण्य पाप कहता पहिले गुणस्थाने जिथ्यात्य भाजनो पुण्य है तेतो जीवनं क्षम प्रकृति रूप कर्मनो उदय छै अने पाप है तेतो जीवनें अशुम मकृति स्प फर्मनो उदय है अने ए श्रमाशुभ प्रकृति रूप कर्मना पुर्गल जीवन अनादि काल ना लगग है, ते पर स्वभाव रूप मोक्ष नगरे जाता जीवनें दिन्न नाकरणहार जाणवा अने पहनी रीते विजना करणहार वर्षा त्यारे; परभाषे पर सगति पामे दृष्ट विभाव पटले परमाने पर सगति कहता ए परस्वभाव रप विभाग दशा ने संगे करीने, पामें दुष्ट विभाग एटले पामें दुष्ट विभाग कहता एइवा रीते जीव ससार में फिरता अनेक प्रकार

अध्यात्मगीताः

જ

कर्म विटनना रप दु ख विपाक मतें भोगपे

। माटे निज भोगी योगीश्वर ग्रुमसच एटले

निजमोंनी कहता ए पर स्तमान रूप विभाव

अध्यात्मगीताः दशाना भोग थकी जीव रहित छै अने निश्चय नयनें मते निज कहतां पोताना ज्ञानांडि अनन्त गुण रूप ने पर्याय मतें मगेट तेहनो जीव भोगी है अने योगीश्वर पटले यागीश्वर सुवसन करता एहती निर्मल पुद्धिना वणी योगीश्वर मुनिरान, मुनमन **करता भछी तरह चित्त जेहनो सदा काल** प्रसन्न पूर्ण वर्त्ते छे अने वर्ली योगीश्वर सुनसन्न एटले योगीश्वर सुनसन्न कहर्ता शृद निश्चय नये करी में जोतातो मन, वचन. काया रूप पुदुगलना योगयकी जीप रहित ठै अने पोताना ज्ञान, दर्शन, चारित्र रप ने योग तेइन जोगे करी न जीव योगीश्वर छै; अने सुपसन्न ऋतां तेह जोग ने विषे

## ८० अध्योत्मगीता

सदाजाल जीव सुकहता मली तरह मसब पणे वर्ते हैं अने पहना रीते सुर्मेहता मली तरह मसझ पणे वच्यों त्यारे, देव नरफ तुंण मणि सम भासे जेहनें मन एटले देव नेरक हण मणि सम कहता भवनपति, । व्यंतर, ज्योतिषी, वैमानीक, नवग्रैवैयक, अनुक्तरवै-मानना जें छुल, अने नरक कहता सात नरक नाजे दुख, अने तृष्ण मणि कईतां वृण ( घास , अने मणिरत्न सम फहता प

निश्चलानन्द अनुभव आराघे ॥ तीत्र घन घाती निज कर्म तोडे। सन्विपड़ी लेहिनें ते विछोडे ॥२७॥ अर्थ:--तेंद्र समतारसी तल साथे एटले पहेंत्री रीते शुद्ध भासन राय जाणपण करीनें र्वेह फेहता वै स्रनिराज, अने समवारसी फहता समताना रसिया मतें होने अने एहवी रीते समता ना रसिया भर्ते होये, त्यारे तस साने

अर्रेगात्मकीता.

ŽΫ

त्तमता ना रासया प्रत हाय, त्यार तस्त सान पटके तस्य कहता पोताना आंत्मेतरचन अने साये कहतां संपूर्ण भावे करी नीपजावे अने पहवी रीते संपूर्ण भावे करी केम नीपजावे १ तोके, निधळानंद अनुभव आरापे एटळे निधळ कहेता अचळ आच्योधकी जाय नहीं,

अध्यारमगीता, अने नद कहता आनदमयी, अनुभव आरावे, एटले अनुभव कहनां एहरी रीते अनुभारणी अमृतना आराध कहता ते जीत सदा काल

٤٤

आस्वारन पर्ते करे अने पहनी रीते आसा दन मनें फरे, त्यारे तीत प्रनयाती निज कर्म तोड एट रे तीन कहता आकरा अने धनपाती कहता पोताना आत्मग्रणने यातना करणहार पहना हानावर्णादि चार प्रम अने निम वर्ष तीहे पटने निज फहतां पोताना कर्म अने तोडे कहता तेरने भ्यान स्प अग्निये बालीन

क्षय करें अने एहती रीते भ्यान रूप अग्निपे षालांन क्षय करे, त्यारे, सिंघ पडि लेहिने तै विछोडे एटले मन्धि कहना सीम मर्यादानी । अन तेहने ठेड़ा कहिये एटले बारमा ग्रुण-

स्थाननो ठेडो फरसीवाती कर्मने विठोडे कहता विखेर त्यारे शिष्य कहे धाती कर्मने केम विखेरे ? ॥ २७ ॥ बाडः— सम्यग् रत्नन्नयी रस राच्यो चेतन राय। ज्ञानक्रिया चक्रेचकच्री सर्व

अध्यातमगीता

अपाय ॥ कारक चक्र स्वभावथी , साथे पूरण साध्य । कर्ता कारण , कार्थ एक थया निरावाच्य ॥२८॥

जर्थ:—सम्यग् रब्रजयी रस राज्यो चेतनसाय एटले सम्यग् ऋहता मन्टी मकारे, अने रब्रजयी कहता झान, दर्शन, चारिज रूप

## अध्यातमगीता जे रजनयी, रस राज्यो चेतनराय, प्रत्ते, चेतनराय कहता चेतन महाराज रूप जे रामीन्

48

अने रस फहता तेदना रमने विषे, अने राच्यो फहता एकत्वपण बच्चों अने एहवी रीते एकत्रपणे बच्चों त्यारे. ज्ञान किया चने घरपूरी सर्व अपाय एटले ज्ञान किया चके फहता हान किया रूप शके करोंने घाती कमें रूप अपाय कहतां जे बेरी जीवने अनादि फालना शतुभूत धईने लागा नता, तेहने चक्च्री कहता चूरी बाळीने क्षय करे, अने पहनी रीते चूरी बालीन क्षय केम करे ? तीके,

फारक चक्र स्वमावयी साधे पूरण साध्य एटले कारक चक्र कहना कर्चा ? कारण ?

कार्य ३ समहान ४ अपादान ६ अने अधि

करण ६ ए पटकारक रूप ले चक्र तेणे करीते, साथे पूर्ण माध्य एटले सावे पूर्ण साध्य फरता ने जीव पोतानु कार्य मते साथ कहता सम्प्रण नीपनावे. त्यारे शिष्य कहे-ए पट् फारक रूप चक्रे करीने पोतानो कार्य प्रते केम सामे हैं त्यारे ग्रुट कहे—कर्चा जीव है अने कारण रूप समकित गुण २ अने कार्य . इ.स्वो ठे केवल ज्ञान रूप ३ अने अपादान कहतां क्षमे रप अधुद्धताना आवर्ण दलता जाप ४ अने सप्रदान कहता ग्रुणश्रेणी रूप निर्मेन्नता सपजती ( भगटती ) जाय ५ अने आवार पहता ए केवल ज्ञान रूप कार्यमें, छोपे (छकारक) आधारभूत जाणवा ६ एणी

रीते परकारक रूप चक्रे करी ते जीव पोतानो

अध्यात्सगीताः

Č4

૮ફ अध्यात्मगीता. कार्य पति नीपजाने अने एहवी रीत परे फारक रूप चक्रे करी पोतानो कार्य पर्ते नी पत्रावे, त्यारे कत्ती कारण खाय एक या निरामध्य एटले फर्चा चेतन, अने कारण शानादि गुण, अने कार्य कहता' अनेक' श्रेप पदार्थ जाणवा, टेखवा रूप अने एक थपा कहता ए जण एकतावणे विराधाध्य कहती

भवाग रहित नीपने, पटले पहनी रीते अवाषा रहित केम नीपने हैं॥ २८॥ ।' टालः— स्वगुण आयुधधकी कर्म चूरे । असस्यात गुणी निर्जरा तेह पूरे ।

टले आवरणधी ग्रण विकाशे।

साधना शक्ति तिम २ प्रकाशे ॥ २९॥ प्रथः—स्वतृण आयु स्वकी कर्ष पूरे

अध्वात्मगीता

20

पटले फ्रमेंने केस चुरे ? तोके, स्वगुण आयु पथकी, पटल स्यगुण कहनां पोताना ज्ञानादि गुण रप, आयुव कहता ने हथियार, तणे करीने कर्म चृं अने पहची रीते कर्म ने चुरे स्यारे असा यात गुणी निर्मरा तेह पूरे

एउछे असत्यात गुणी कहता ते जीव समय समय अमल्यात गुणा निर्जेश गते वरे, अने एहती रीते निर्जेश करे, त्यारे, तेह पूरे एटले तेह कहता ते जीय, अने पूरे कहता

पोताने स्वगुणे करी आत्माने पूरे, अने

4 अध्यात्मांतिमा पहनी रीते आत्माने केम धूरे ? सो के, टर्डे

आपरणे ग्रुणिकासे एटले टले आवरणे कहनां जिम जिम कर्म रूप पुरस्तना आपरण टलता जाय, अने गुण विकाशे

फहता तिम तिमं आत्मग्रुण विकरूर कहतां

मगढ पणे थता जाय स्यारे शिष्य वहें आत्मगुण केम विकस्वर थाय ? स्यारे गुरु फहे-सूर्य आहा बादला आये, त्यारे, सूर्यनी

कांति मते द्याय, अने वादला जिम जिम

विनने जोरे विखरता जाय. तिम तिम सूर्यनी

· मकाश मते पायती जाय, विष इही र े आत्म गुणने कर्ष रूप वादला आहा

त्यारे आत्मानी गण रूप काति मर्वे

" पिण अवरने विषे आत्माने गुणरूप

ष्पा सिं साधनं रीत कहता, आत्मनी क.तेत्वता भोक्तृन्वादि पचनकि ते अनादि कादनी पर अनुजाट पणे अवर्ला प्रणमी

इती; तिष्टायकी निवारीने पोताना स्वरूप अनुजाड रूप सायन पणे प्रणमावी स्वारे

~ अध्यात्मगीता

विष्य कहे, ए पाच शक्ति स्वरूप अनुजाह रुप साधन पणे केम मणमी ? स्यारे गुरू पहे,—जात्मानी कचूतता रूप के शक्ति ते अनादि काळनी परकर्तांपणे अवळी मणमी

हती, तिहां यकी निपारीने पोताना स्वरूप कर्जाम्य सापनपण गणमार्थाः १ अने आस्मानी भोरतुराता रूप ने शक्ति ते अनादि काळनी ज्ञादि विभाव दशाना भोगने विषे ती, विद्या यकी निवासीने पोनाना प्रगट्यो आत्म धर्म थया सबी सा-धन रोत । वाधक भाव ग्रहणता भागी जोगी नीत ॥ उदय उदी-

रणा ते पिण पूर्व निर्जरा काज । अनिम सन्धि वधकता निरस आस्मराज ॥ ३० ॥ अर्थः—पटले पहवी रीते आस्मानी, घक्ति मते नागी त्यारे, नगव्या आस्म। पर्म

विधान स्वापात स्थार, प्रयच्या आस्म। प्रम ययाँ सिव सापन रीत एटले प्रयच्या आस्म वर्षे, फहता पर्मरूप आनरणने अभारे, अनत प्राप्टप आस्मिक घर्म प्रते प्रहर्गी रीत अनत गुणरूप आस्मिक घर्म प्रते चम प्रयटे ? तोके, यया सिव साधन रीत, एटले प्रया-सिव साधनं रीत कहता, आत्मनी कर्तन्यता भोकृत्वादि पचराक्ति ते अनादि काल्नी पर अनुजाड पणे अवली प्रणमी हती; तिहोबकी निवारीने पोताना स्वरप अनुजाड रूप साधन पणे प्रणमाची त्यारे

शिष्य महे, ए पाच शक्ति स्वरुप अनुजाइ

अध्यात्मगीता

स्प साधन पणे केम प्रणमी ? त्यारे गुरु कहे,—आत्मानी फचुखता रूप के अक्ति ते क्नादि काळनी परकर्त्तापणे अवळी अपमी हती, तिहां धकी निवारीने पोताना स्वरूप कर्ताहप सामानी पोमनुत्तता रूप के अल्कि ते अनादि काळनी पर पुहळादि विभाव दशाना भोगने निषे भणी हती, तिहा यकी निवारीने पोताना

9.9 अध्यातमगीता स्वमार्व मोगीपण मणमार्वी र अने ओत्मार्नी रक्षकत्वा रूप जे गाँकि ते अनाई कॉर्लनी

स्वभाव रसकपणे मणयाची 🤰 अनें आत्मीनी ध्यापकरमा रूप जे शक्ति वे अनादि कीलनी पर स्वभाव रूप निभाव दशाने विपे व्यापी रही इती, तिहां थकीं निवारिने पोतीनी स्वभाव व्यापक पण वर्णमानी । अनु आत्मानी ब्राह्मता रूप जे शक्ति ते अनार्वि कालनी पर बाहक्षपणे अवली मणमी हती ेवा थरी निवासीन पोताना स्वभाव ग्राहर े भणमारी ५ एइरी रीते ए पाच शैंसि अनादि फॉलनी पर अनुयाईपणे अवली

पर पुहलादि विभाग दशाना रक्षक पण मणमी इती, तिहा यती निवारीने पोतान

अध्योद्धंगीतां ९३ प्रणमी हती, तिहा थकी निवारीने पोताना स्वरूप अनुवाई रूप साधन पणे मणमात्री. अने एहवी रीते स्टब्स अनुसाई रूप साधन पणे प्रणमी, स्यारे, बायक भाव ग्रहणता भागी जागी नीत घटले प्राधक भाव कहतां अनादि कालनो ए पर स्वभाव रूप विभाग दशानि हारे, जीवने नाधक भाग रूप ग्रहण-पणो हतो. ते भाग्यो कहता टल्यो. अने पहेंची रीते नाजक भाव टल्यो त्यारे, जागी नीत, एटले जाती जीत कहता पर ग्रहण रूप अनित्यपणो टल्यो. अने स्वरूप ग्रहण रूप नित्यतापणो प्रगट्यो, त्यारे, उदय उदी-रणा ते विण पूर्व निर्जरा काज एटले उदय कहता स्थिति पाके छदय भावने जोगे करी

अध्यातमगीता **९**६ कहता तिवारे. अने कुनय बहुता ए फुटा नयरप अनित्य मार्गनी चालणहार क्रण होय ? एम इहा ए देशपति यहना असर्यान मदेश रूप जे देश, अने ते देशने तिपै ज्ञानादि अनत गुण रूप रूक्ष्मी रही है. तैहनी पति कहता धणी, पहनो जे चतन महाराजा, जन थयो नित्यरगी एटले जन पहता निवारे, अने धयो निन्यर्गी फहता ए पर स्वभाव रूप अनित्व मार्ग मुर्काने. पोताना स्वरूप मे रमण करवा रूप निन्य मार्ग प्रते पकडची अने एडवी रीते नित्य मार्ग मर्ते पकडचो, त्यारे, तदा कुण थापे श्चनय चाल समी प्रले तदा क्रयता तिवारे अने क़नय कहता ए कृडा (स्रोटा) नय

## रप अनित्य मार्ग प्रतें केम चलो <sup>१</sup> एटले जंगों पोर्तेचाले ते गार्गनो पर ने पिण उपदेश मतें करे एटले एहर्रा राते शुद्ध

अध्यात्मगीता

९७

मार्गनो परने उपदेश मते कोण करे ? तोके, यदा आत्मा आत्म भाने रमाव्यो एटले यदा कहतां जिनारे, अने आत्म भारे रमान्यों कहता जेणे पाताना आत्माने आत्मभाउने विषे रमान्यो कहता रमाङ्यो ते करे अने

एहरी रीते आत्मभावने विषे रमाड्यो त्यारे तडा वाधक भाव दुरे गमाव्यो एटले तडा प्रहतां तित्रारे, अने पायक माप बहता अ-

नादि कालनो ए पर स्वभावरूप विभाव दशा निहारे जीवने बाधक भावरूप ग्रहणपणी हता ते दूरे गमान्यो, एउछे दूर गमान्यो यहता ९८ अध्यासम्मीताः वैस्त्रो त्राण पर्वे करणो अने वस्त्री सीवे

तेहनो नाग मनं करयो अने पन्धी रीते प्राथक भारता नाग मनं क्य करयो <sup>१</sup> ॥१२॥

सहिज क्षमा ग्रण शक्तिथी छेयो। कोष सुभट्ट। मार्टव भावप्रभा-

वथी भेद्यो मान मरह ॥ माया आर्जव योगे लोभते निस्पृह भार । मोह महा भट ध्वसे ध्वस्यो सर्व

मोह महा भट ध्वसे ध्वस्यो सर्वे विभाव ॥ ३२ ॥

विभाव ॥ इर ॥

अर्थ'—सिंहन समा गुण शक्तिमी छैयो

कोब मु भट पटले सहित समा गुण कहती
अकृतिम मात्र रूप ने समा गुण, अने शक्तिमी

<u>अध्यासागीता</u> ९९ कहता ए अक्रतिम भाव रूप शक्तिये करीने. हेचो कोच समह एटले ठेचो जोच समह कहता प मोह राजानो क्रोप रूपी जे सुभट्ट तेहने देयो कहता निकदन पर्ते करयो ? मार्ट्य भाग मभागवा भेद्यो मान मरहः पटले माईव भाव कहता ग्रदता भाव रूप जे नरमास गुण, अने प्रभाववी कहता तेहने प्रभावे करीने भेद्यो मान मरह एटले मान मरह कहना ए यान स्पी सभट पर्ते भेटो कहता देयो तेहने उनमेली (उसंदी) नाख्यो अने मरह महता पदमी नीते मान रपी न भटनो मरोड प्रते मेट की में व माया आ-र्जव योगे लोनते निस्पृह भायः एटले माया कदता माया रूप जे कपट. अने आर्जव अध्यातमगीता

फदता ए निलींग रूप निस्पृही भाव धकी

8 मोह महा भट्ट ध्वसे ध्वरपो सर्वे तिभाव पटके मोह महा फहता मोह रूप महा भट्ट कहता जे सुभट, पहनो जे श्रासीर ते सर्वे अवगुणने विषे राजा समान तेहने वसे फहता भासे पटले हडसेली नारें पड़री रीते मोदने दर करव करीने ध्वस्यो सर्व निभाव एटले ध्वस्यो सर्व विभाव कहता एह विभाव दशा रूप के परस्वभाव, एहवी रीवे सर्वे अपाय कहतां जे याव जीवने अनादि

200 कहता सरळ स्त्रभाव पणो, अने जोगै कहता तेहने जोगे करीने दूर पते करचो ३ लोभने निस्पद्र भाव एटले लोभते निस्पद्र भाव

खोभनी नाश मन करची

फालना शतुभृत थईने लागा हता, तेहने भ्वम्ये कहता ध्वस्यो, एटले नाश प्रंते कस्यो, अने पहवी रीते क्रोधादिकनो नाश प्रते केम करयो १॥ ३२॥ दालः—

अध्यात्मतीलाः.

इम स्वभाविक थयो आरम वीर । भोगवे आरम सपद सुधीर ॥ जेह

उदया गता प्रकृति वलगी । अञ्चापक थको खेरवे तेह अलगी ॥ ३३ ॥

॥ ३३ ॥ अर्थ--एम स्वमाविक थपो आत्म बीर एटले आत्म कहता जे आत्मा, अने

वीर कहता जे सूरवीर महा पराक्रमी अनत

**१०२** अध्यारमगीना यलनो घणीं कर्म क्षत्रनो जीतणहारी अने

पोताना स्वभावने विष मणस्वो अने पहरी रीते पोताना स्वभावन विषे मणस्यो त्यारे भोगरे आत्म सपद सुधीर एरले आत्म मपद कहता ज्ञानादि अनत चत्रप्रय रूप पोतानी आम सपदा वर्ने भोगने कहता विलवे अने सु प्रहता भर्ला तरह अने बीर फहता अधीर पणी मुद्धींन निर्भय धकी भोगवे अने जेह उद्यागता महति रलगी एटले ने उद्यागता कहता उदय भारते जोंगे. मछवि चलगी फहतां जे आत्म

एम स्वभाविक यथो घटना ए पर स्वभाव

रप विभाव दक्षाने विषे मणस्यो हती, तिहां यकी मति निवारीने स्वभाविक कहता

मदेशे फर्म रूप पकृति वलगी कहता लागी है, ते अन्यापक थको खरने तेह अलगी ' एरले अञ्चापक धको कहता अलिप्त पणे न्यारो रही जे कर्म रूप मकृति उदय आने

अध्यारमगीता

ते भोगतीने खेरवे एणी रीते अलगी कहता हरे करीने आत्म गुण निरायर्थ मतें करे त्यारे शिष्य कहे-आत्म गुण केम निरावर्ण

पर्ते करे<sup>ि</sup>॥ ३३॥ चाल:---धर्म ध्यान इकतानमे ध्यावे अरिहा

सिङ।ते परिणतथी प्रगटी तात्विक

सहज समृद्धि ॥ स्य स्वरूपएकरवे 🛚

त्रमय ग्रुण पर्याय । ध्यानैध्याती

अध्यारमगीताः

निरमोहीने विकल्प जाय ॥ ३४ ॥ अर्थ:--धर्म ध्यान इकतानमें ध्यारे अरिहा सिद्ध एटले धर्म ध्यान कर पोतानो आधिक धर्म सत्तागतने विषे अन्त रयों छे, ते धमेने ओलखी मतीत करी तेर ध्यानने निषे प्रवर्ते स्वारे लिच्य कहे-पर्ध रात ध्यानने प्रिये देव मर्जते है तीके एक्जानी फहता शृद्ध शुक्र ध्यान रूपानीत मणाम र पुरुष पूर्ण, ध्यान अरिहा सिद्ध एउ

पुरुत पुण, ध्यान अरिहा सिद्ध पूर्ण अरिहा सिद्ध बहुतां अहिंदुत तथा मिद्ध गुणे पोताना आसामित सम्मुट्य पूर्ण सित्ते गिणी, अने ध्याने कहता पूर्वी रीते निर्ण गता पणे मोल्ट्रांने तेहना ध्यानति विषे मी अने पहती रीते ध्यानी विषे वसनी अध्यात्मगीता. १०५ त्यारे ते परिणितयी प्रगटी तत्विक सहज

समृद्ध एटले ते परिणितथी कहता एहची निमेल शृद्ध आत्मानी प्रणति थकी अने प्रगटी कहता नीपजी त्यारे शिष्य कहे—हयू नीपजी ? तोके, तत्त्वक सहज समृद्ध एटले तत्त्वक कहता तद्दस्पपणे जहवी सत्ताये हती तेहवी, अने सहज कहता ए अकृत्रिम भाष रूप सपदा प्रत, अने सम कहतां सम्पूर्ण अने रिद्ध कहता पोतानी जानावि अनत

हती तेहबी. अने सहज कहतां ए अकृत्रिम भाव रूप सपदा प्रते, अने सम बहतां सम्पूर्ण अने रिद्ध कहता पोतानी ज्ञानादि अनत चत्रप्रय रूप लक्ष्मी मते मगटे अने एडवी रीते पोतानी लक्ष्मी मर्ते केम मगटे ? लोके. स्य स्यख्य एकत्वे तन्मय गुण पर्ग्याय, एटले स्य स्वरूप कहता योताना आत्मिक स्वरूपने विष, अने एकत्व कहतां

१०६ अध्यातमगीताः

पणे वर्ते अने पहनी रीते पक्तवपणे के बस्या ? तो क, तत्मय मुख परर्याय घटले तन्यय कहता तलाजीन रुप, अने गुण पर्या प्रदेश प्रदेश रीने पोताना गुग पर्यापन चिननने विषे, ध्याने ध्याता निर्मीही विकल्प जाय एट के ध्याने कहता तेहर ध्यानने विषे अने ध्याना कहना एहती री पक्त्व पणे वेर्त अने पहनी रीते पक पने वर्ष्यों स्वारे, निर्मोहाने विकल्प जा परले निर्मोही कहता ते जीन मोह रहि थाय, अने एहरी रीते मोह रहित थाय त्याँ

परल निमाहा कहता ते जार माह राष्ट्र थाम, अने पहनी रीते मोह रहित थाप त्याँ सर्वे रिक्टल दूरे जाय एटचे द्रे जार कह नैहनों नाज क्षते पासे अने णहती रीते ना

. नेम प्रामे ? ॥ ३४॥

यदा निर्विकल्पी थयो ग्रुख ब्रह्म ।

तदा अनुभवे गुड आनद शम्मी॥ भेद रत त्रयी तीक्ष्णताये । अभेद

रहा त्रयी में समाये ॥ ३५ ॥ अर्थ - एटले यदा , निर्दिक्स्पी थयो श्रद्ध ब्रह्म परने यदा फंहता जिनारे अने

निर्वित्रत्वी थयो कहता एहवी रोते चलाचल परणाम रूप विकटप सु रहित और थाने अने पहनी रीते विकल्प छ रहिन जीव यापै त्यारे, श्रद्ध ब्रह्म पटले श्रद्ध ब्रह्म कहता ते जीत शुद्ध पूर्ण ब्रह्म रूप निर्मेलानन्द , पहनो

पोनानो पद मनें मगड करे. अने पहुंची

रेंग्ट अध्यासमीता

रीते पोतानो पद मते भगट करे त्यारे, तटा
अनुभरे शुद्ध आनन्द धर्म एटके तदा पहता
तिरारे अने अनुभवे बहता भोगवे त्यारे
विष्य फर्टे-इयु भोगवे र तोके, शुक्ष आनव्
गर्म एटके शुद्ध षहता निर्मल, विभान
दशा क्य जगिरि यही रहित, अने आनट

महता पहनी रीते आनन्दमयी, अने शर्म सहता पहनो पोताना मूल पर मते भागी अने पहनी रीते पोताना मूल पर मते केम भोगपे ? भेंद्र रजन्मी तीहणताय,

अभेद स्वायों समाये एटले भेट कहती खुरी ? अने रत्नवयी कहता ज्ञान, टर्शन, पारित्र रूप थे रत्न वर्षा, अने सीस्पता सेस्ने तिप वीवना रूप एकाव्रतापणे रप उपयोग मतं बस्यों स्यारे, अभेद रस्त प्रयोगे समाय एटले भेड रस्तप्रयी हती ते एक समय एकता रप अभेडता पणे प्रणमी. अने पड़डी रीते अभेड रप एकता पणे

अन पहुंचा रात अभद २५ एकता पण प्रणमी त्यारे जाणचा, देखवा, रमण करता रप एक समय उपयोग वर्त्यों ? अने पहुती नीते जाणता देखवा, रमण करवा रूप एक

रीते जाणपा देखना, रमण करवा रूप एक समय उपयोग नेम प्रत्यों ?॥ ३५॥ चालः--

दर्शन ज्ञान चरण ग्रण सम्यग् एक एकना हेत । स्व स्व हेतु थया सम कांछे ते अभेदता खेत ॥

अध्वातमगीता ११० पूर्ण स्वजाती समाधि घनघाती

दल छिन्न। क्षायक भावे प्रगटे आरम धर्म जिमिल्ल ॥ ३६ ॥ अर्थ -- उर्गन ज्ञान चरण गुण

सम्यग एक एकना हेन एटले सम्यग्न नान, क्टता भल महार-सम्बग् ज्ञान सम्बग् दर्शन अन सम्यग चारित "प जे गण, अने एर एकना हैत कहता दर्घन है से जीवन सामान्य उपयोग रूप ग्रुण छै अने ज्ञान छै ते जीवने विशेष उपयोग रूप गुण छ एटले दर्शन तथा ज्ञान ए वे ने दिये स्थिरता रूप एका प्रता पणे उपयोग वर्चे व चारित जांणती

माटे ए प्रणे परस्पर एक एकना हेतु, कहतां

मादीयादि एक बीजाना देत रूप कारण

अध्यानमगीता

जाणा एटले पाहोमाहि ६ क वीजाना हेत् रूप पारण केम बया ? तोके स्व स्व हेत थया सम काले ते अभेडता खेत पटले स्व स्व इतु थया कहना आप आपणा

हेतु हप, अने थया सम पाले कहतां एक समयमे ज्ञान, टर्शन, चारित रुप ने रत्नत्रयी ते एकता पणे प्रणमे: अने एडवी रीत एकता पणे केम मणमे ? तोके तेह अमेनना खेत

एटले तेह पहता विमन, अने अभेड कहता पहवी रीते अमेदात्म पणे, अने रीत कहतां स्व क्षेत्रने त्रिपे जाणवा अने णहरी रीते स्व क्षेत्रने विषे केम भणस्या ? ताके पूरण

स्वजाति समानि यनपाती दल छिन्न, एटले

११२

यनघानी दल जिन्न बहतां घाती धर्म रूप

यन यहता जे समह तेहना दर्लायां आत्म भदेशने विषे लाग्यों इता तैहने छिन्न बहुनां

हेदी नाखे अने पहवी रीते देश नाम्या स्यारे पूर्ण स्वज्ञाति समाधि पटडे पूर्ण कहतां संपूर्ण अने स्व कहता पोतानी, अने जानि कहता ज्ञानादि अनत गुण एक राणि रप जाति मतें मगटे. अने समाधि कहतां तेहने विप सदा काल समाधि पर्ते वर्ते अने पद्यी रीते समाधि मर्ते कम बर्ते ? तोक क्षायिक भावे प्रगट्या आत्म वर्ष विभिन्न पटले आत्म धर्म फहता पातानी सत्तागतने विषे अनतो आत्मिक धर्म शक्ति पण रहो। े व्यक्ति पणे क्षायिक भावे प्रगट्यो

अध्यान्त्रगीता. ११३ विभिन्न कहता पहुंची रीते अभेदान्म पणे प्रगट कर्रा छोकाछोकना भासकरयका

तिचरे. अने एडर्ना रीते लोकालोकना भामकरथका विचरे त्यारे ॥ ३६ ॥

गङ्ग---पर्छे योग रोधिथयो ते अयोगी।

भाव सेलेसता अचल अभगी॥ पच लघु अक्षरे कार्य कारी।

भवोपप्रही कर्म सतति विडारी

॥ ३७ ॥ अर्थ —पत्रे कोम जेवि सको ने

अर्थ — पठे योग रोधि ययो ते अयोगी. एटले योग रोधि कहता पठे तेरमा

अध्यान्यगीता 250 गुणस्थानने छेटले समे योगना राध पग्व माटचो एटले सहम कियाँ अमृतिपाति शृह

ट्याननी त्रीको पाची भ्यापतो तै जीव चल्दमे गुणस्थान चढे तिहा शयम बाहर्स मनो याग राजः पछी बादरनी वचन योग रोके, पछी बादरना काव योग रान, पर्छ मुक्त मना याग रोक, पछी गुस्म पच

योग रोप, पछी सुक्ष्म काय योग राव पहनी रीत सुरुप पाडरे रूप योगनी रो करी थयो ते जयोगी एटले थयो ते अयोगी यहता तै जीव चडन्ये गुणस्थाने अयोगं पर प्रते पामे अने एहवी रीते अयोगी प

पर्ते रेम पास्चो ? बाक भाव से ठेमता अच अमगी पटले मात्र सलेसता कहता भारत अध्यास्त्रमीता ११६ अक्रप अडगपणा यक्की, जने अचल कहता चले नहीं पडगो स्थिरता रूप भाव, अने अभगी कहता एडवी रीते आच्यो यको ते भागनो भग मत न थाय अने एडवी रीते

अक्षरे कार्य कार्रा एटले पच लघु अक्षर कहता चडटमा गुणस्त्राने जीत्र पोइन्यो त्यारे; अटड करू, ए पच लघु अक्षर स्प उचार करे, एटला कात्रमा कार्य कार्री कहता, ते जीत्र पोतानो सर्व कार्य मर्ते

नीपजारे अने एहती रांते मर्दे कार्य प्रतं कैम नीपजारे ? तोके, सर्वोषग्रानी कर्म सतित विडारी, एडके भरोषग्राही कहता भवने आश्रीने. अने कर्मनी सतित कहता कर्म रप

ते भाउनो भग मतें न थाय त्यारे. पच लघ

११६ अध्यारमभीता प्रदेगलनी सर्वति बाकी रही हती तेहने विटारी बहुता चुरी बालीने शय मते करी

अने एहती रीते चुरी घालीने तय घरी रयारे ॥ ३७ ॥

सम श्रेण एक समये प्रहता जे

छोकाति । अफ़ुसमाण गति निर्मल

चेतन भाव महत ॥ चरम त्रिभाग विहीन प्रमाण जसु अवगाह। आतम प्रदेश अरूपा एउा नद

अवाह ॥ ३८ ॥

अर्थ:--मम क्षेण एक समये प्रहता

अध्यातमगीता ११७ जे लोकाति पटले समग्रेणे कहेता पाउदी श्रेणें; अने एक समय कहेता एक समयने विषे पोहता जे लोकाति पटले पोहता जे लोकाति कहता चडदराज लोकने अंते अजरामर स्थानके सिद्ध सेत्र कहता जे क्षेत्रने विषे अनता मिद्ध परमास्मा विराजमान

किष्य कहे केम पोहता ? तोके, अफुसमाण गति निर्मल चेतन भाव महन, एटले अफु-समाण फहता बीजा पटेश अणफर्म एटले जे इहा आकाशस्य क्षेत्रना पटेश फरस्या

थका बतें है, ते क्षेत्रने विषे पोहना पटले

हता तेहीज समन्नेणीना विहा फरस्या ठे पिण यीजा पटेश अणफरसै अने गति वहेता एहती गतियें बर्वेटा पांहच्या अने निर्मल अध्यात्मगीताः

निरावाध अस्यत सुखा स्वादवता

11 33 11

अधा-निहा एक सिद्धात्मा तिहा छै

अनता पटळ जिहा एक सिद्धारमा कहता जेंगे क्षेत्रे एक सिद्ध परमात्मा छे, तेंगे क्षेत्र

अनता सिद्ध परमात्मा भेला मिलीने रहा। छै पिण ते सिद्ध केहवा छे ? तोके, अवधा थग या नहीं कासमता एटले अवला करता पाच वरण धकी सिद्ध रहित छै अने अग ग में गधधकी पिण रहित छै अने वली सिद्ध कहा है ! तोक, नहीं फायमता एटले नहीं ें बहता आढ करस रूप ,शरीरथकी

मता॥ आतम गुण पूर्णतावंत सता।

120



\$55

जने बळी सिद्ध परमातमा केहवा है ? ॥३९॥

कर्त्ती कारण कार्य निज परिणामिक भाव । ज्ञाता ज्ञायक भोग्य भोक्ता गुड समाव ॥ ग्राहक, रक्षक,-च्यापक, तन्मयताये लीन, प्ररण आतम धर्म प्रकाश रसे छयछीन

स्यानके आरियक सत्य अञ्चयवे है. ते सख ने ताल एक समय मात्र पिण न आप अने

स्यादयता बहुता ए विभाविक सम्बने अमारे स्त्रभानिक सुलानो आस्पादन वर्ते करे है

118011

णामिक भाव एटले कर्चा ते सिद्धनो जीव अने फारण कहतां पोताना ज्ञानादि अनन्त गुण मत कारण रूप नीपना है, अने कार्य फहतां ते गुणम रमण करवा रूप कार्य जाणवो अने निज परिणामिक भाव पटले निज करता पोतानो, अने परिणामिक भाव

अध्यात्मगीता.

फहना नैगम, सग्रह नयन गते जीवनी सत्ताये परिणामिक भाग रहां हतो तहेंत्रों जे एवभूत नयमें मते सिद्धि रूप कार्य मते नीपनी तहने

विषे वर्ने है अने वली सिद्ध परमातमा केहवा है <sup>7</sup> तो के, आता ज्ञायक भोग्य भोक्ता शुद्ध

स्त्रभाव एटले ज्ञाता कहता ज्ञाने करीने, अने प्रायक कहता अनेक होय पदार्थ पते

१०६ अध्यानमंगीता पुरण कहता सम्पूर्ण, अने आत्मधर्म कहता पोतानो अनन्त गुण रूप आत्मिक वर्मी भते

अने प्रकाश कहता तहनी सचागतने निषे प्रमाण प्रते प्रमुख्यो है अने रस लयलीन पटले रर्स कहता तेहना रमने विषे सदाकाल

लपलीनपणे वर्ते है पटले हिवे द्रव्य, क्षेत्र, काल, भारतप चार यार्ग करी सिखनी स्त्रस्य ओल्खाने है ॥ ४० ॥

द्रव्यथी एक चेतन अलेशी। क्षेत्रथी जे असस्य प्रवेशी॥उत्पान

वली नाश ध्रुवकाल धर्मा । शुङ उपयोग ग्रणभाव शर्म ॥४१॥

अर्थ:—उग्पथी एक चेतन अलेसी. एटले द्रव्यथकी मिळने एक चेतन किहेंगे एटले चेतन कहता शुद्ध मानादि चेतना रूप गुणे करीने सहित माटे चेतन कहिये अने

अलेसी ऋरता ऋष्णनील कापोतादि छ

अध्यारमगीताः

१२७

लेक्याधर्का सिद्ध रहित है माटे अलेबी फड़िये क्षेत्रयों ने अमरूप पटेंगी पटले क्षेत्र यक्ती सिद्धने स्वक्षेत्र रूप असंत्यात पटेंगी कहिये उत्पात नाग धुत काल तमें पटेंग काल यक्ती मिडने उपात कहता अभिनव पर्णाय

ना जाणवा-टेखनापणाना समय २ उपजारे धातो जाय अने नाश कहना पूर्व पर्यापना जाणवा-देखनापणानो समय २ व्यय कहना नाश धातो जाय अने अन कहना सिद्धने

१२८ अध्यात्मतीता ब्रानात्रि अनन्त गुण प्रगट्या ठै; ते सदाकाल धुवना धुव पणे शास्ता वर्ते छै अने धर्म कहतां एहची शीते सिखने झान, ल्र्शन, चारित्र आदि अनन गुण रूप धर्म मगट्यो छे, तेहने विषे सदाकाल परयांयनी उत्पात ब्यय थड रह्यों छे अने बल्ले सिद्ध कडवा छे? तो क, श्रद्ध उपयोग गुण मान शर्म पटले भाव यभी सिद्ध परमात्मान गुण भाव कहता पी-ताना हानादि अनन्त गुण भार रप मगट्या छै, तेह रप धर्म कहता जे घर, अने शुद्ध जपयोग कहता तेह धरने विषे सदाकाल निरंतरपणे सिद्ध परमातमा, शुद्ध कहता निर्मल जपयोगनत सका बतें है एणी शते द्रव्य, भोत काल, मापे करी सिद्ध परमास्मानो

अध्यातमंगीता १२९ स्त्रस्य जाणवीः अने बली सिद्ध परमात्मी फेह्वा छे १ ॥ ४१ ॥ चालः— सावि अनंत अविनाशी अप्रयासी

परिणाम । उपादान गुण तेहिज कारण कारय थाम ॥ शुद्ध निक्षेप

चतुष्टय जुत्तो रत्तो पूर्णानव।केवल नाणी जाणे तेहना ग्रुणनो छंद ॥४२॥

118२॥ अर्थः—सार्वि अनन्त अविनाशी अप्र

अर्थ:—सार्वि अनन्त अविनाशी अर्थ यासी परिणाग ऐंटले वर्ली सिद्ध केहबा छे? के, सादि अनन्त. एटके सादि अनन्त फहर्ता

130 अध्यारमगीता एक सिद्ध आश्रय जे सिद्धि वर्षा तेहनी जादि है ते आदि में मिद्धि वर्षा पिण तेहनो पाओ फरि अत नयो ने फलाणे दिन

सिद्ध पाछ। ससार में आउसे (अर्थात नहीं आने ) तेहनें सादि अनन्त भांगी कहिये अने वर्ला सिद्ध केहवा है ? के, अविनाशी पटले अविनाशी कहता ए मिद्धि पद, निपनी

छ, पिण फिरि पाछी विनाश पणी नयी अने वली सिद्ध केहवा है ? के अप्रयासी परिणाम 'एटले अमयासी कहता सिद्ध मयास

विना अनतो आत्मिक सुख मते भोगवे छै

अने परिणाम कहता सिद्ध परमात्मा सद फाल निरतर पणे पोताना परिणामिक भावर -द्विपे रहा। वर्चे छे जपादान गुण तेहि अध्यारमगीता १६१

कारण कार्य धाम पटले बली सिद्ध केहवा

छे ! के उपादान कहता पीतानो आस्मा; अने
गुण तेहिन कारण कहता पीताना हानादि
अननत गुण कारण रूप मगट्या छे, अने
कार्य कहता अनेक होय पटार्थ जाणवा—
देखान, रूप पट्यांयनो उत्पाह न्यय समय २
होय पटा छे अने पहनी रीते थाम कहतां

यर, एटले पोताना आत्मस्वरपर्ने विषे निवास प्रते करचो छै, एटले ए अणे एफ समय एकता पणे अणमे छै शुद्ध निसेष चतुष्ट्य खुनो रचो प्रणांनन्ट एटले वली सिद्ध नेद्दा छे १ तोके शुद्ध निसेष चतुष्ट्य खुनो रचो. एटले शुद्ध कदता निर्मल, अने

निक्षेप चतुष्ठय कहेता चार निक्षेपे करी

१३२ अध्यात्मगीता.

चार निसेपा कहे है चटले नाम सिद्ध फरवी सिद्ध ऐसी नाम भणे काल एक रूप शाहबती

अने थापना सिद्ध कहतां देहमान मध्येथी श्रीजो भाग घटाडीने वे भागना श्रारीर ममाणे आप बदेशनो घन फरी षापना रूप क्षेत्र अत्रगाही रहा। छै ॥ २ ॥ अने दृष्य सिद्ध कहना श्रद्ध निर्मेल असल्यात मदेशने विषे ज्ञानादि अनन्त ह्य छती परर्याय बस्त रूप मगटची छै

ने, जुनो कहतां जुक्त पते वर्चे हैं।

रपारे जिल्य कहे चार निशंपे करीने

सिद्ध नो स्वरूप क्षेत्र जाणिये ? त्यारे सह

तविव ( तब व्यतिरिक्त ) शरीर आश्रमे

वर्ते छै। १॥

सामर्थ पर्च्याय मन्तर्चना रूप अनन्तो धर्म मगट्यो छै; तेणे करीने सदा कारु नव नवाह्मयनी बत्तेना रूप पर्यापनो उत्पात व्यय समय समय अनन्त अनन्तो होय रहा छै,

अने भावधकी सिद्धनी स्वरूप कहता

तैमें करीने सिद्ध परमात्मा अनंतो सुख भो-गपे है ॥ ४ ॥ पणी रीते ए चार निक्षेपे करीने सिद्ध परमारमा रची कहता सदा बाल तेहते जिये

परमात्मा रत्तो कहता सदा काल तेहने विषे रक्त पर्ते वर्ते छे अने पूर्णानद कहता पहची रीते सम्पूर्ण आस्पिक सुखनो आनद प्रते भोगपे छे केरल नाणी लाणे तेहना गुणनो

छन्द. एटले केवल नाणी कहतां केवली

भगवान, अने नाणे कहता एहवी रीते सि

द्धनो स्वरूप प्रत्यक्ष पण जाणे देखे, अने गुणनी छन्द प्रहता ए सिद्ध परमारमाने अनत गुण रूप समृह पन मगट्यो है, तहने

\$\$8

विषे अनन्तो प्रस मोगन है ते क्वली भग बाननेज गम्य है, पग छदमस्त मुनीना जाण्यामां न आने ॥ ४२ ॥

पहवी ग्रुड सिद्धता करण ईहा।

इडिय मुख थकी जे निरीहा। पुर्गली भावना जे असारी। ते

मुनिं शुद्ध परमार्थ रगी ॥ ४३ ॥ अर्थ:-- एहवी शुद्ध सिद्धता करण ईहा,

अध्यात्वयीताः 234 एटले एहबी कहता आगल प्रखाणी तेहबी. अने शुद्ध कहता निर्भल, अने सिद्धना कहता षहवी रीते सिद्ध परमात्माना सम्पदा मतः ते करण ईहा एटले करण ईहा कहता पहती सिद्धि रूप सम्पदा प्रगट करवाना जे मुनिने ईद्दा (इन्छा) प्रत येते ते सुनि वेदबा छै ? तो के इद्रिय सुख कहेता पचन्द्रीयना त्रेवीस विषय रूप प्रदानिक ले सुख, अने निरीहा

फहता तेहनी इहा रूप पण्डा यकी रहित थका प्रते के अने वहीं ए द्विन केहवा डे तो के पुद्कीक भावना ने असगी एडले पुद्कीक मात्र कहता पोताना स्वरूप थकी

भिन्न महतां जुटो एहमो ग्रुभाग्रम विभान दशा रूप के प्रवृत्लीक भाव, अने के फहता \$\$\$ अध्यातमगीता ते मनि, अने असगी फहतां तेहनी वछा रप

सगयकी रहित न्याग मते वर्ते है से सनि श्रद्ध परवार्थ रगी चटने ते श्रुनिशन श्रद फहेतां निर्मल बुद्धिना घणी, अने परमार्ध

कहता साध्य एक साधन अनेक, एगी रीते सत्तागतना धर्मने साथे, एहती रीते परम **प**हतां उत्कृष्टो अर्थ साध्याने रुगी पहतां जेहनो चित्त मतें रगाणो छे अने एहबी रीते

चित्त मतें रगाणी त्यारे ? ॥ ४३ ॥

स्याद्वाद आस्मसत्ता रुचि समकित तेह । आत्मधर्मनो भामन निर्मल

**ं** जेह ।: आरमरमणी चरणी

ध्यानी आत्मळीन । आत्मधर्म रम्यो तेणे भव्य सदा सुख पीन

अध्यारमगीता

१३७

अर्थ:—स्पाद्वाड आत्मसत्ता रुचि सप-कित तेह एउछे बली ए ग्रुमि केहवा छै ? तोके स्पाद्वाड कहता अनेकता नयनी अपे-साये स्पाद्वाड रूप नित्य अनित्यादि आड

11 88 11

पक्षे करीने; आत्मसचा रुचि कहतां एहवी रीते पोतानी आत्मसचाने ओखरीने तेहने मगट करवानी रुचि मत वर्ते अने एहवी नीते आत्मसचा ममट करवानी रुचि मतें वर्ति त्यारे समक्रित तेह एटळे तेह फहता

ते मुनिरान शुद्ध भासन रूप सम्यक्तन भावे"

अध्याहमगीता फरीने सहित जाणता, अने पहनी रीते सम्पद्ध भागे करीने सहित होय त्यारे आत्मधर्मनो बासन निर्मल ज्ञानी , जेह एउले

हानादि अनन्त गुण रूप वर्म रह्यो छे, तेहनी भासन बहुता मतीत मते प्रगटे अने पहनी रीते मतीत मते मनदी त्यारे निर्मल हानी जिह एटले जह कहता ते मुनि, अने निर्मले ज्ञानी फहता नानावर्णादि कर्ष रूप आर्वणने अभाने, निर्मल जाणपणा रूप ज्ञान तेहने भगरे अने पहची नीते निर्धन जाणपणा रूप ज्ञान मगटचो स्यारे, आत्मरमणा चरण े आत्मलीन एटले आत्मरमणी फ्रांत

आत्म नर्मना भासन कहतां शुद्ध निश्चय नर्पे करी जीतानी पोनानी आ मसत्ताने रिप

१३८

भण्यातमगीताः -१३९
ते म्रुनि सदा फाल निरतर्थमे पोताना आत्म
स्वरूपने विषे रमण मन करे अने एहमी गीते
रमण मत करची त्यारे, चरणी एटले चग्गी
फहता ए शुद्ध चारियने विषे ने जपयोग
तेहनो जाणां अने एहबी रीते शुद्ध चारियने

पटले ध्यानी कहता पोताना आत्म स्वरूपना ध्यानने त्रिषे, अने जीन कहता तहने विषे सदा काळ वलालीन पणे वर्जे अने पहनी रिते तलालीन पणे वर्षो त्यारे, आस्पत्रभ्रं रूपो तेणे अन्य सदा सुखपीन पटले अंति-प्रम कहता श्रद्ध निश्चय नये पोतानी आहम-

सत्ताने त्रिपे जानादि अनन्त गुण रूप भर्म रह्यो है, वे घर्मने ओलखी मनीन फर्रा,

विषे उपयोग प्रत्यों त्यारे ध्यानी आत्मलीन

अहो भव्य अहो उत्तम ! तेहना ध्यान विषे सदाकाल रम्यो कहता रमण पर्त कर अने एहवी रीते रमण करवा थका सद **ग्रु**खपीन एटले सदा ग्रुखपीन फहता ते जीवने सटाकाल पीन कहता पुष्ट सुख मर्वे जाणाो त्यारे जिप्य कहे एहवी रीते पुष्ट सुरानी माप्ति केम नीवजे ? ॥ ४४ ॥ अहो भव्य तुम्हें ओलसो जैन धर्म । जिणे पामिये शुद्ध अध्यातम मर्न ॥ अल्प काले दले दुए कर्म । पामिये सोय आनन्द शर्मे ॥ ४५॥

अर्थ:-अहो भव्य हुम्हे ओलसी

अध्यात्सगीता

₹₽o

र्क्सचारमंगीता जैन धर्म एटले अहो भव्य ! अहो उत्तम ! अहो सलभवोधी जीवो ! तुम्हे ओछखो जैन धर्म जिन कहतां बीतराग, राग देप थकी रहित एडवा जे सामान्य केवली तेहने विषे राजा समान, एहवा जिनेश्वर देव, तिगडाने निषे बेसीने बस्तधर्म जेहवी अतरग सत्तागते रही है तेहबी जे प्रकाश्यो, ते धर्मने ओल्सी

मतीत कर्यों थकी, जेये पामिये शुद्ध अध्यास मर्म एटले शुद्ध कहती निर्माट विभाव हुआ हुए उपाय करा किया किया हुआ हुए उपाय करा आपणा हुए हाने करिया करी हुए कहती और पासी करा आपणा हुए हाने करी हुए करी हुए करी हुए करी मतीत मती मार्च अगे एहती रीने स्वरूप भासनता हुए मती मती हुए करी हुए करी.

अध्यात्मगीताः पटले अल्प कहता थोडा कालमे, अने दुष्ट फहता आकरा जा मग्रुणने घातना करणहार पहना ज्ञानावर्णादि जे कर्म टले फहता नाश

मते पामे अने एइवी रीत कर्मनी नाश मते थाय त्यारे पामिये सीय जानन्द शर्म पटले स्व फहता पोतानो आत्मिक छखनो आनट कहतां एहवा आनद नित्यानद परम ग्रुख

मते, अने शर्म फहता जेहनो स्व स्थान मते जिहा अनता सिद्ध प्रमात्मा वसे ठे, पहनी स्वस्थान कहता घर मते पामे. त्यारे किप्य फरे-जिहा अनता सिद्ध परमात्मा वसे छे ते घर मतें केम पामिये ? ॥ ४५ ॥

नय निक्षेप प्रमाणे जाणे जीवा-

अध्यातमगीता १४३ जीव । स्व पर विवेचन करतां थाये र्छाभ सदीव ॥ निश्चे ने व्यवहारे

विचरे जे मुनिराज । भवसागरना तारण निर्भय तेह जहाज ॥ ४६ ॥ अर्थ:--नय निक्षेप प्रवाणे जाण जीवा-

जीव परछे नय कहता नैगमादि स्रोत नये फरीं, अने निक्षेप कहता नामादि चार निक्षेपे करी. जाणे जीवाजीव पटले जाणे

जीवाजीय कहतां जीव अजीव रूप नव तस्त' पर द्रव्यनो स्वरूप भर्ते जाणे तेहने साधु श्रावकपणी जाणवी त्यारे शिष्य

फहे-नैगमादि सात नये करी, अने नामादि घार निक्षेपे करी जीव अनीव रूप नवः तत्व १४४ अध्यातमधीता पदद्रव्यनी स्वस्प किम जाणिये ! त्यारे दिवे पथम गुरु कृपा करि, सात नये नव तत्वनी

स्वस्य प्रतं ओललावे छे

एटल नगम नयने मते सर्वे तत्व छै, जै

फारण सर्वे तत्व ने चाहे छे १ त्यारे संगद्द नयना मनवालो सर्वेनो सग्रद करी बोट्ये ( कहे )—एक तत्व एटले जेडने मन मान्यो ते तत्व, बीजा सर्वे अतरव जाणवा

मन् मान्या त तत्व, यांना सब अतत्व जाणां २ एटके व्यवहार नयना मतवाले शांध स्त्र मप् देखीने भेद बेंहचवा बांच्या पटके प नयना मतदालो दीसता गुण देखे ते मत्ते, भाट व तत्व-पटले एक जीव तत्व १ अने मोतो अजीव तत्व २ एटले प्रथम जीवना

षे भेद-एक सकल कर्म लय करी लोकने

घध्यात्मगीता 184 अते विराजभान वे सिद्ध, अने बार्काना वीना संसारी ते ससारीना ने भेद-एक अयोगी अने बार्फा बीजा सयोगी एटले चौदमा ग्रणस्थानना जीव ते अयोगी, बाकी बीजा सयोगी है सयोगीना ने भेट-एक केवली. बाकी बीजा छन्नस्थ पटले तेरमा गुणस्थानना जीय ते केवलो अने चार्रा बीजा छग्रस्थ पटले छद्मस्थना ने भेद-एक शीणमोही अने षाकी बीजा उपसनमोही एटले बारमा गण-स्थानना जात्र ते श्रीणमोही अने बाकी त्रीजा उरसतमोही ते उपसतमोहीना व भेट-एक अक्तपाई बीजा सक्तपाई एटले अम्यारमा गुणस्थानना जीए ते अकपाई, अने चाकी वीना सकपाई ते सकपाईना वे भेद, एक

अध्यात्मगीताः मुक्ष्मकपाई अने बाकी बीजा बादरकपाई

पाईना वे भेद एक अणीपतिपन्न, अने बीजा श्रेणीरहित एटले आठमा नवमा ग्रुणस्थानना जीत्र ते श्रेणीयतिपञ्च अने बाकी बोजा श्रेणी र हित ते नेजीरहितना ने भेद एक अममादी अन बारी बीजा सर्वे ममादी पटले सातमा गुण स्थानना जीव ते अववादी, अने पाकी बीन सर्वे भगादी ते भगादीना व भेद-एक सर विरति अने वीजा देशविरति ते देशविरतिना भेद-एक त्रिति परिणाम अने बोला अविधि परिणाम, ते अविचिता वे मद-एक अवि समिक्ति अने बीजा मिध्यास्त्री ते मिश्य

885

एरले दशमा गुणस्यानमा जीव ते सूक्ष्मकपाई

अने वाकी बीजा वाटरकपाई ते वाटरक-

त्वीना वे भेद—एक भव्य, नीजा अभव्य ते भव्यना वे भेद—एक गर्डाभेदो अने वीजा जीन गर्डा अभेदो एटलें एणी रीते व्यवहार नयना मतनालो जेहनो देखे तेहना भेद वेंहचे बली जीवना ये भेट—एकनस १ अने थीजा थावर २ एटले थानर कहता पृथ्वी १ अप २ तेड ३ वायु ४ अने वनस्पति ५ ते सुस्म

अध्यात्मगीता

अने वादर करता १० (टश) भेट अने पर्याप्ती अने अपर्याप्ती करता २० भेद जा-णवा अने मत्येक वनस्पति पर्याप्ती अने अपर्याप्ती, पणी रीते एकेन्द्री थावरना २२ भेद जाणवा हिरो नसनो स्नरूप कहे है एटले ज

सना ४ भेद-देवता १ नारकी २ तिर्पेच ३

जाणवा नारकीना सात परयासा, अपर्यांसा पंति रेड भेट अने तिर्धेच जीव, गर्भज, समुन्त्रिम एणी रीते पर्याक्षा अनुर्यांसा यही २६ भट भ यहाय्यना १०१ भेद पर्याक्षा अने अपर्याक्षा अने २०२ अने रे०? समुन्त्रिम, एणी रीते ३०३ भेट इम

अध्यास्वतीता

186

सर्वे ग्रस थाप्रस्ता थईने ब्ययहार नयने मत # नेत्री १ तेत्री २ वीस्त्रिना १ पर्वामा अपर्वासा सर्ग ६ मट अन पद्मश्ची तिर्वेवना १० मेर, अञ्चर १ पञ्चा २ सेना ३ उस्परि ४

भेद, अञ्चर १ यञ्चर २ स्वेनर २ उरवरि ४ मुनवरि ९ ना पर्यासा अपर्यास, गर्भन अन एड्डिएम करन सर्व २६ मेद नाणवर, जीवना ५६३ मेंद्र जाणवा ॥ १ ॥
हिषे अजीवना भेद चेदचे छे (देखांडे छे) एटले अजीवना २ भेद-एक रूपी अने षीजा अरुपी एटले जरूपी कहता घर्मास्ति-काय स्कन्य (खग) १ देश २ अने मदेश ३. अथर्मास्तिकाय स्कन्य (खग) १ देश

श्रद्धिगरमंगीता.

196

२ अमे मदेश ३ आफास्तकाय स्कन्य ( सम्य ) १ देश २ अने प्रदेश ३ अने अद्वा कहतां काल. सर्वे धर्रने १० भेट जाणवा, १पे धर्मास्तिकाय जन्यभक्ती १ क्षेत्रधक्ती २ कालयकी ३ भावयकी ४ नेगुणधर्का ५ एणी रीते अधर्मास्तिकाय, आकास्तिकाय,

तथा फाल सर्वे यहेंने २० भेद जाणवा. अने आगला १० भेद माही मेलता अरुपीना सर्वे

१५० श्रध्यातमगीता यईने ३० भेद जाणवा ॥ २ ॥ हिये रूपी अनीवनो स्वरूप कह है

पटले रूपी पहेता (स्पर्श) फरसना ८ गन्धना > रसना ५ वर्णना ५ सस्थानना ५ एणी रीते २५ भेट ते माथे पाच रसना १०० पाच वर्णना १०० पाच मस्थानना १०० अने आठ स्पर्ध अने वे गरत ए दशना २३० पटले सर्वे धईने एपीना भेद ५३० कहिये एणी रीते ध्ववहार नयने मते अजीवना रूपी अरुपीना थईने ५६० भेद जाणवा ॥ १॥ पणी रीने व्यवहार नयने मतवाले जीन अजीव रूप वे तत्त्वनी वहचण करी -देखांही वली शिष्य कहें-रिजु सूत्र नयते अते फ़री तत्त्वनी स्वरूप केम जाणिये? त्यारे

अध्यारमगीता 949 गुरु कहे-कोई जीव शुभाशुभ परिणामे करी पुण्य पाप रूप आश्रपना दलीया वाधे तेहने

अजीत कटिये एट जे ए चार नय मे ए छ

तस्व जाणवा ॥ ४ ॥ प्रती शिष्य कहे-शब्द नयने मने करी तत्वनो स्टब्प कम जाणिये ! स्यारे गुरु

महे-- शब्द नयने मते चोथे गुणस्थाने सम-किती जीव, पाचने ग्रणस्थाने देशविरती जीव, छउँ सानवें ग्रणस्थाने सर्वविरती जीव, अन्त-रण सत्तागत ना भासन रूप सवर भाव में

वर्तना समय ? यहा निर्जरा यते करे छै॥५॥ वली विध्य कहै-समिथिस्ड नयने पते

ग्रुरु फहे-ने ए नयना मतत्रालो श्रेणी भावने

फर्रा तत्वनो स्वरूप किम नाणिये <sup>१</sup> त्यारे

अध्यात्मगीताः प्रहे छे, माटे नवमा दशमा गुणस्थानयी मादी यान्त् तेरमा चौद्मा गुणस्थान पर्यंत देवली

१५२

मतें करे छै ८ तेहने भव शरीर आश्रये द्रव्य मोस पद कहिये॥ ६॥॥ ९॥ अने एवसून नयने मते सफल कर्म सयकरी लोकने अते। विराजमान सादिअन-तमे भागे वर्त्तना पहना सिद्ध परमात्मा तेहने भाव मोक्ष पट कहिये ॥ ७ ॥ ९ ॥ एणी रीते

भगरान विण स्वरभारमे वर्चता महानिन्हर्रा

साते नये करी तत्वनी स्वकृष जाणवी हिये नामादि ४ निशेषे करी पद द्रव्यनी स्तरूप ओल्खाने है एटडे नामनीय बहुता नैगम नयने यते गये काले जीनतो हतो आगामी काले जीवसे अने वर्चपान काले

अध्यात्मगीता पिण जीने है एहरी रीते नणे काल एक रूप शास्त्रतो वर्ते तेहने नामजीव कहिये ॥?॥ अने स्थापनाजीव कहता जीव पहवा अक्षर लिखीने यापना, ते सबह नयने मते असरभाव स्थापना रूप जीव जाणगो. अने माचा नीवाणमा जीव ते सग्रह नयने मते सदुमाव स्थापना रूप जीव जाणवो ॥ २ ॥ अने द्रव्यजीव कहता रिज व्यवहार नयने मते एकेडी थकी पचेडी पर्यंत पहिले गुणस्थाने अनाउपयोगे मिय्यात्व भावे वर्ते तैष्टने द्रव्यजीव कहिये (अशुवओगो एव ) ए अनुयोग द्वार सूत्रनो वचन छै॥ ३॥ अने भावजींव कहतां शब्द नयने मते

चीपा गुणस्थान स्र माडी, यात्रत् छठा सातमा

रद्ध गुणस्थान पर्यंत जीत्र अमीवनी ओल लाण, स्व परनी वैहचण करी जीव स्वरूपना जपयोगमा समकित भारे वर्चे तेहने भार-जीव कहिये ( चनओगोमाव ) ए अनुयोग द्वारनी साख छै॥ डा। पणी रीते चार निक्षे पामे पाचे नये करी जीवनो स्वरूप जाणवी हिपे नामथकी धर्मास्तिकाय ऐसी नाम ? अने स्थापना थका धमास्तिकाय ऐसा अक्षर लिखवा, ते स्थापना रूप धर्मास्तिकाय जाणतो २ अने इब्यथकी धर्मास्तिकाय इब्य असल्यात मदेसी ३ अने भावपकी पर्या-त्निकाय इच्य चलल सहाय रूप जाणवी ४

हिने नामयकी अधर्मास्तिकाय पेसी नाम १ अने स्थापना यक्षी अधर्मास्तिकाय रितकाय द्रव्य असन्व्यात प्रदर्शी ३ अने भावपकी अवर्षास्तिकाय द्रव्य स्थिर सहाय रप जाणवी ४ हिने नाम थकी आक्रांस्तिकाय एसो

नाम १ अने स्थापना यकी आकास्तिकाय मेसा अक्षर छिलाः), ते स्थापना रूप आका-स्तिकाय जाणत्रो २ अने डब्य यकी आका-स्तिकाय डब्यू अनन्न मंदेसी ३. अने भाव-

धकी आकाष्तिकाय उच्च अवगाहना रूप जाणवो ४ हिवे नामयकी काल्डन्य एसो नाम १ अने स्थापना धकी कालद्रव्य एसो अक्षर बिखा, ते स्थापना रूप काल जाणवीर अने इन्य थरी कालनो एक समय लोकमे सदा फाल शासतो वर्चे छै३ अने भाव धकी फाल इब्य नवी प्रराणी वर्तना रूप जाणरी ४ हिषे भावधनी प्रदुगलास्तिकाप ऐसी नाम १ अने स्थापना यकी प्रवृगकारितमाय ऐसा असर खिखवा, ते स्थापना रूप प्रदूग-छास्तिराय जाणवी २ अने द्रव्यथकी पुद् गल इन्यना अनन्ता परमाणुवा लोकमे सदा काल शास्त्रता वर्त छे ३ अने भाव थकी

संख्यारमगीता

148

प्रकृगल द्रव्य गलण पूरण मिल्ण विकर्ण रूप जाणवी ४ ॥ ६ ॥

मे चार चार निश्चेषा जाणवा

एणी रीते जीव अजीव रूप यह इब्य

अध्यासमगीता. १५७ हिने नम तस्म नो स्त्रस्य नय रूप पार निक्षेप करी ओलखान छै तिहा भयम जीप अनीम रूप पट द्रव्य नो स्त्रस्य कहां हिने उटय भाव रूप पुण्य में निक्षेपा उतारे छै पटले नाम पुण्य कहता नैगम

नयने मते गये काले युण्य पहनो नाम बर्ततो हतो अने आपते काले विण युण्य पहनो नाम बर्तस्य अने वर्तमान काले पिण ते नाम वर्ते छै पहनी रीते नैगम नयनें मते नणे काल एक रूप साहततो न्तें, तेहनें नाम युण्य कहिये १ अने स्थापना युण्य कहता युण्य ऐसा अक्षर जिल्लीने आपना ते संग्रह नयनें

मते जसदभाव स्थापना रूप पुण्य जाणवो; अने कर्म सचाना प्रकृति रूप दुर्छाया जीवनी

## १५८ अध्यारमगीताः सत्तापे लागा छे, ते सब्रह नयने मने सद्भाव

स्यापना रूप पुण्य जाणारो र अने द्रव्यपुण्य फहता उदय भाव ने जोगे व्यवहार नपने मते ते दन्त्रीयानो उदय थयो ते भव शरीर आक्षय उदय भाव रूप द्रव्य पुण्य जाणारी ॥ ॥ अने भाव पुण्य कहता रिज् स्ट्रा नपने

मते मन, वचन, कावाचे करी डववहार नवने मते ऊपर यक्षी पुण्य रूप दखीयांनी भीग वणों ते भाग रूप पुण्य जाणरो हिये पुण्य रूप परणींनी करवी, वै

हिये पुण्य रूप परणीनो करवो, है ज्यर निक्षेपा लगाव छे प्टले नाम पुण् कहतां पुण्य पहचो नाम ते नैगम नयने म भणेकाछ पुक स्प पुणे कर्ते छे १ आं

सध्यात्मगीता स्यापना पुण्य कहता पुण्य ऐसा असर लिखीनें थापवा, ते संग्रह नयनें मते असद-भाव स्थापना रूप प्रण्य जाणवी अने फोई जीव पुण्य रूप करणी करे ठे पहती मृतिं स्थापवी, ते सङ्भाव स्थापना रूप पुण्य जाणवी २ अने द्रव्यपुण्य कहता ऊपर धकी

अरुचि भाने अणा उपयोगे व्यवहार नयने मते पुण्य रूप करणीनो करवो, ते सर्वे तदू-वित शरीर आश्रय द्रव्य पुण्य जाणवो ३

अने भाव प्रणय कहता रिज सूत्र नयने मते मन, प्रचन, कायाये करी एक चित्ते व्यवहार

नयने मते ऊपर थकी पुण्य रूप कर्णीनो फरनो ते सर्वे भाव प्रण्य जाणवो ४

हिये खटय भाव रूप पापमा निक्षेपा

लगा है एटले नाम यही पाप महर्ती पाप एमी नाम वे नेगम नयने मते जगे फाल एक रूप पणे वर्ष छै १ अने स्थापना पाप पहता पाप अक्षर लिग्बीने स्थापता ते सग्रह नपने मने असद भाव स्थापना पाप जाणवी अने कर्म सत्ताना महति स्व दर्लाया, जीवनी सत्ताये लागा है ते सगह नवने वर्ते सहमाद म्थापना रूप पाप जालवो २ अने द्रव्य पाप कहतां उदय भारते जोगे व्यवहार नयने मते ते दलीयांनो उदय थयो ते सर्वे भत्र शरीर आश्रम उदय भाव रूप द्रव्य पाप जाणवी रै अने मात्र पाप कहता रिजु सूत्र नयने मते मन वचन काषाय करी ज्यवहार नयने वते छत्र थकी पाप रूप दलीयानी भीगवणी ते सर्वे भाव

अध्यारमगीता

180

**\$8**\$ अध्यात्मगीता रुप पाप जायत्रो ४ दिवे पाप रूप करणीनो करवो ते ऊपर निक्षेपा लगावे छै पटले नाम पाप कहता पाप ऐसो नाम, ते नैगम नयने मते त्रणे काल एक रूप पणे वर्ते है १ अने स्थापना पाप कहता पाप पहवा अक्षर लिखीने थापवा, ते सग्रह नयने मते असद्भाव स्थापना रूप पाप जाणतो अने कोई जीव पाप रुप फरणी

करे 3 एहबी मूर्ति स्थापनी ते सद्भाव स्थापना रूप पाप जाणवो २ अने द्रव्य पाप कहता ऊपर धकी अरुचिभावे

अणाउपयोगे व्यवहार नयने गते पाप रूप करणीनो करवो, ते सर्वे तद्वित (तद्व्य-

115 अध्यात्मगीता ३ अने भावपाप कहतां रिज्ञ सूत्र नयने मते मन, वचन रुप, कामाये क्री एकचिते व्यव-हार नयने मन उपस्थकी पाप रूप करणीनी करवो, ते सर्वे भावपाप जाणवी ४ हिने आश्रन ये निक्षेपा स्मावे छै

एटके नामभाभव कहता आधव ऐसी नाम, ते नैगम नयनें मते त्रणे काल एक रूप पणे वर्त छे ? अने स्थापनाआ-श्रव कहता आश्रव एहवा अक्षर क्रिसीने स्यापना, ते सग्रह नयने यते असङ्भाव स्यापना रूप आश्रव जाणत्रो, अने आग्रव रूप मृत्ति स्थापवाने सग्रह नयने मते सद् भार स्थापना रूप आश्रव जाणवी २ अने द्रव्यवाश्रव कहता बेतासीस मकार रूप

अध्यातमगीता १६६
आश्रव में घडनाले करी ज्यवहार नयने मते
धुपाश्रम आश्रव रूप दलीयानी ग्रहण करवी
ते सर्वे तद्वित् वरीर आश्रय, द्रव्यआश्रय
कहिये ३ अने भावआश्रय कहतां रिज् व्यवहार नयने मते यन, चचन, कायाये करी उदयभागने जीगे तै दलियानी भोगवणो.

तेरनें उदयमाव रूपभाव आश्रव किर्ये ४ हिंगे संबर में निक्षेपा उतारे छै पटले नामसंबर कहता जे संबर ऐसो नाम, ते नैगम नपने मते त्रणे काल एक रूप जागरो १ अने स्थापनासबर कहता जे सबर ऐसा अक्षर लिखींने स्थापना, ते सब्बह नयने मते

असद्भाव स्थानना रूप सवर जाणवो अने सवर रूप भृति स्थापवी, ते सग्रह नपने मते १६७ अध्यारमगीता, सब्भाव स्थापना रूप सवर जाणवी २. अने द्रव्यस्वर बहुता जे व्यवहार नयने मते

उपरयको अरुचि मावे लोफ देखाडवा रूप पोपापविक्रमणा सामायक आदे अनेक प्रकारे

सदरनी करणी करनी, ते सर्वे तहरित् शरी-रआश्रय द्रव्यसार तथा रूप जाणवी ३ अने भावसवर कहता जे रिज सूत्र नयने मते मन,

भावसवर कहता जारज सून नयन मत मनः बचन, कायाये करी यथामद्वत्ति रूप करणः ना परिणामे पोसा पिटकमणां ग्रन पचनसाण आदे व्यवहार नयने श्रते उत्पर्थकी सवर

रूप फरणानी करतो ४ पुटले ए च्यार नवना च्यार निर्मेपा

पटले ए च्यार नयना च्यार निक्षेपा यथापटींच करण रूप सत्तर जागवो विंड नाम यकी सवर कहता जे सवर अध्यातमगीता. १६५ ऐसी माम, ते नैगम नययं मते जाणवी १. अने स्थापना यक्ती सगर कहता जे सबर ऐसा अक्षर लिखोनें म्थापना, ते सग्रह नयने मते जसद्भान स्थापना रूप सबर जाणकी. अने सबर रूप मृत्तिं स्थापनी, ते मग्रह नयने मते सद्भान स्थापना रूप सबर जाणवी २.

अने ड्रब्पसार कहता जे रिजु सूत्र नपने मते मन, बचन, कायाये करी व्रत पचक्याण रूप उपरथकी व्यवहार नयने मते सबर रूप करणीनो करवो, ते सर्वे तह्वित शरीर आश्रम ड्रब्प सबर जाणवो है अने भाव सबर कहता ने श्रष्ट नयने मने जीव अनीव रूप, स्वस्ता पर सत्तानी बेहचण करी

रियरता रूप परिणामे आगल द्रव्य निर्मेण

अध्यात्मगीमा म'ये रिज व्यवहार तथे सवर रूप करणी फही, ते परतां थका महा निर्जरा मते वरे ते सर्वे भाव सनर जाणनी एणी रीने सबर में पाच नव में चार निक्षेपा नागवा ४ हिरे निर्जराथे निक्षेपा उतारे छै एटले नाम थकी निर्जरा कहता जे निर्जरा पसी नाम, ते नैगम नयने मने त्रणे कात एक रप

पणे जाणवो १ अने स्थापना धर्मी निर्नरा फहता जे निर्नेश एमा अंतर लिखना, ते सम्रह नपने मने स्यापना रूप निर्नरा जाणगी २ अमे द्रव्यनिर्वरा फहता जे व्यवहार नयने मते रिशु सूनना उपयोग सहित मिध्यात्व भाने अकाम निर्जरा करती, ते सर्वे तद्वित शरीर आश्रय द्रव्यक्तित्रम -----

वध्यारमगीता े १६९ दलीया संग्रह नयने मते जीवनी सत्ताये रहा। तेहनो स्थिति पाके व्यवहार नयने मते चदय थयो. ते सर्वे तद्वित शरीर आश्रय

इब्ययप जाणवो ३ अने भाव थकी वध कहता जे रिज़ सन नयने मते मिथ्यात्व अर्ज कपाय योग रूप सत्तावन ५७ वध हेत प्रमुख जीवना परिणाम, पटले तेहनी चिकामे, बली पाछो फर्म रूप दलीयानो

षप पांडे माटे रिज सत्र नयने मते तेहने भाववय कहिये ४ एणी रीते वधमें चार नयमा चार निक्षेपा जाणवा

ष्टिवे मोक्षनीःकर्म अवस्थामे निपेक्षा उतारे छे पटके नाम थकी मोक्ष कहतां ने मोक्ष ऐसो नाम ? स्थापना थकी

नध्यात्सगीता भोक्ष पहतां जे मोक्ष रच पूर्ति स्वापनी अधना माप्त ऐसा अक्षर लिखा २ अने द्रायमीत

₹७.

फहता जे समिभित्र नयने यते शृद्ध शृत्रध्यान रूपातीत परिणाम रूप शपक श्रेणीये अज्ञान रप राग देपने मोहनी कर्पनो फरची शप षारमे ग्रुणस्थाने, अने गपन ज्ञान पार्ग्या, एहता केत्रली भगवानने यत शरीर आश्रय

द्रव्यमोक्ष पट फहिये ३ अने भावमोक्ष कंहर्ता जे एक्स्रत नयने यने अष्ट उमीने सये, अष्ट ग्रण सम्पन्न छोकने अते विराममान पहना सिद्ध परात्माने भारबोध पद जाणको ४

एणी बीने जीव अजीव रूप पट दृब्प. भन तत्वमे नय सप्रतः निक्षमा जाणकः

अने मपाणे कहतां मत्यक्ष अने परीक्ष

રંહર્શ श्रास्त्रकातित. च इमाणे करीने जेणे नत्र तत्व. पट इन्पनी स्वरूप मने जाण्यो ठे अने एहवी रीते जीव अजीव रूप नप तस्त्र पट द्रव्यनी स्वरूप नय निक्षेप ममाणे करीने जाण्यो स्यारे स्त्र पर विशेचन करता थांगे लाभ सदी एटले स्व पर विवेचन करता कहता जीव अजीवनी स्टब्स भिन्न २ मकारे प्राणीन घेहचे श्यारे शिष्य कहे-जीव अजीवनी स्व-

जाणीन वेहचे
स्वारे शिष्य कहे-जीव अजीवनो स्व-रुप भिन्न २ मकारे करी किम जाणे १ त्यारे गुर कहे-जीव छे ते ज्ञानादि चेतनास्य गुण करीने सहित निश्चय नये करीने सचाये

करीने सहित निश्चय नये करीने सत्ताये सिद्धसमान सटा काल जाव्यती वर्ते ठे अने व्यवहार नये करी जीवने पुण्य पीप रेप थभाधभ फलनो भोक्ता जाणगा, अने अनीव फहता पाचडव्य + चेतनारहित अजीवरूप जरम्यभाव (ते ) न जाले सुराने, न जाले

अध्यातमगीताः

रे७२

द लने स्थारे जिल्ल कहे-ए तो सामान्य मुकारे अर्थ क्यो पित्र विदेश रीते स्वप्रती पहचणस्य कीवनो स्वस्य क्रिय जाणिये ? स्यारे ग्रस कहे-एगोइ पटले एगोइ कहता हु एक छु, व्हारो कोई नथी ?

कहता हु एक छु, व्हारो कोई नयी ? सांसियों अप्पा एउसे सांसियों अप्पा परता व्हारों जीन जावतों छै ? नाण देनण संगुको एउसे नाण दश्चण

नाण देशण संयुक्ती पटले नाण दशण संयुक्ती कहती हूं धान दश्चेण करीने सहित खू ३ + पंगान्तिस्य १ अधर्मीस्तराय २ स्राजाशस्त्रस्य २ ९,४णस्तिनस्य ४ औरसाल ९,

अध्यात्मगीता रं७३ सो सविवाहिरा भागा, ते सर्वे सयोग लक्षणा एटले सो सविताहिरा भावा कहता ने म्हारा स्वरूप यकी वाद्य वस्तु कहता जै अलगी ते सर्वे संयोगे मिली है; अने नियोग जाशे, तेहमा म्हारे ज्यो विगाह थाशे ? ४ अने सयोग मूला जीपाण एटले सयोग मृला जीवाणं कहता ए सयोगी वस्तुने विषे जीव मुझाणो एटले पत्ता दुःख परम्परा एट हे पत्ता दु:ख कहता ते जीव दु:खनी पर-म्परा प्रते पामे ५ माटे, तमह सयोग सपन पटले तमहै सयोग सम्बन्ध कहना ए सयोगी वस्तु म्हारा म्बरूप थकी भिन्न कहता जुदी छे-ए शरीरादि प्रन कलन परितार ममुख ६.

₹uz इ सर्वे निकल्प स रहित छ म्हारी स्वरण न्यारो छे १९ देहावीतोऽह, एटले देहातीतोऽह कहवाँ आ देह रूप ने शरीर तेह थकी हु रहिन छ २० अने अज्ञान राग द्वेष रूप जे आश्रव ते न्हारो स्वरूप नहीं, हु एण सो न्यारो अनत ज्ञानमयी, अनत दर्शनमयी, अनत चारित्रमयी, अनत वीर्यमयी ए म्हारो श्रद एटले श्रद कहतां हु कर्म रूप मलसु रहित छ २३ उद पटले युद्ध कहतां हु ज्ञानस्वरूपी **3 7**8

श्रद्धारमगीता وي \$ अविनाजी एट हे अविनाजी कहता महारो कोई काले नाशपणो नर्था २५ अनग एटले अनग कहता हू जरा म रहित छ २६ अनाडि प्टडे अनादि फहतां म्हारी आदि सर्थ २७ अनत एटले अनत फहता म्हारी कोई

अनत एटछे अनत फहता म्हारों कोई काले अन पहता छेडो पिण नथी २८ अक्षय पटछे अक्षय कहता म्हारो कोई काले क्षय नथी २९

काले तय नधी २९
अत्तर पटले अक्षर कहता ह कोई
काले तक नधीं ३०
अवल पटले अवल कहता ह काई

काळे स्वरूप सं चळू नही ३१

196 अरुल पटले अरूल कहता म्हारी म्प्रस्य केम सू कल्यो जाय नहीं ३२ अमल पटले जमल कहता हू कर्म रूप मलस रहित न्यारी छ ३३

अध्वारमगीता

अगम एटले अगम कहतां म्हारी भीयने गम नधी अध अनामी पटले अनामी फहतो हू नाप स् रहित न्यारी छ ३५

अस्पी पटले अस्पी कहता हु प निभाव दशाना रूप सु रित छ ३६

अकर्मी पटले अस्पी बहता हु की

रप उपाति सु गहिए हु ३७

अवधम एटले अवधक कदतां हु क

इप बान हु रहित, म्हारो रोल न्यारी 13 36 अणुदीय एउने अणुदीय कहतां हु रंधदय भाव स रहित छ ३९ अयोगी एटले अयोगी कहतां हुं मन, हरवन, कायाना योग स न्यारी हा ४० अभोगी परले अमोगी कहता हु शुभा-🗗 रुपनिभाव दक्षाना थोग सु रहितछ ४१ अरोगी पटले अरोगी कहता ह कर्म हम रोग छ न्यारो उर ४२ अमेदी एटके अमेदी कहता हु कोईनी भेषो भेदाऊ नही ४३ अनेदी एटले अवेदी कहना हु झण घेद

इ न्यारो छ ४४.

अध्यात्मगीता

१७९

100 अध्यातमगीता अंदेरी एटले अंदेरी कहतां हु कोईने छेटचो छेदाक नहा ४५ अरादी एनल अरोनी रहना हु स्वस् रमण में रोट पास नहा ४० असत्ताई एटले असताई कहता न्हारे कोइ सलाई भृत (साधीभृत) नयी हु म्हारे पराक्रमे करी सहित छु पिण महारा अवला (उच्टा) परिणमन यकी वधाणी 08 5 अने हु सबलो ( सुल्टो ) मणमीस स्यारे दुदीश विण मने कोई वाधरा छोडवा

अलेशी एटने अलेशी कहता हु छ ६ लेडवाधी रहित न्यारो छ अने छेडवारुप त्

सामर्थेतान् नधी ४८

मुहल है, अने म्हारी रूप ते ज्ञानानद छै ४९ अशरीरी ऍटले अशरीरी कहता हु शरीर रूप जड सु रहित शुद्ध, चिदानंद, पूर्ण ब्रह्म छ ५० अभाषी एटले अभाषी कहता है भाषा

१८१

अध्यातमगीता

रप पुद्रमल सु रहित पूरण देव छ ए भापा रप ते प्रदूगल है ५१ अनाहारी पटले अनाहारी कहता हु

रपार# आहार रूप पुद्रमलना भोग से

रहित, अने पर्याय रूप भागनी निस्नासी छ ५२

अन्यात्राघ एटके अन्यातान कहतां हुं

\*भसण १ पाण २ लादिम् ३ स्वादिम् ४.

अध्यारमगीता. 142 याधापिटा रूप दूशरा स रहित-अनैन मुसँ विलासी छ ५३ अनअवगाही एटले अनअपगाही कहा म्हारी स्वरूप कोई द्रव्य अवगाहि सर्वे नहीं ५४

अगुरलपु एटले अगुर कहता मीरं नहीं अने अलख कहता छोटो पण नयी पली मारे नहीं, इलवी नहीं ५५ अपरिणामी एटले अपरिणामी फर्ड हैं मन रूप परिणाम छ रहित छ ५६. अनेन्द्री एटले अने द्वी कहती हु इं

रूप निकार श्रु रहित-न्यारी, इच्छायी। **37 40** 

अमाणी परले अमाणी करता हू द

ायोनी एटले अयोनी कहतां हु चो-ासी लाख जीवायोनी रूप परिश्रमणपणा पु रहित, निश्चय देव छ ५९

असंसारी एटले अससारी कहता हु बार गति रूप ससार सु रहित; पूरण आत्माराम छ ६०

अपर. एटले अपर कहता हु जन्म, नरा, मरण रप दुःख सु रहित छ ६१ अपर पटले अपर कहता हू सर्व

परम्परा सु रहित, म्हारी खेळ न्यारी छै ६२ अन्यापी एटले अन्यापी कहता ए

विभाग रूप जटपणा सु रहित, हु म्हारा

स्तरूप में मदाषाल व्यापी रही छु ६१ अनास्ति एट रे अनास्ति कहतां म्हाएं फोई काले नास्तिपणी नयी हु म्हारा स्ट इव्यादिके करीने सदाकाल अस्तिपणी वर्त छ ६४

अध्यास्मगीता

\$ < 8

अक्तप पटले अक्तप कहता हु कोईने कपायो कपू नहीं एम अनतवीर्य कप "किने पणी छु ६० अविरोध पटले अविरोध कहता हु कर

रूप शक्षनो रोध्यो दथाऊ नहीं, सदा कार निर्लेष फर्फ रूप मल सु रहित न्यारो, !

महारे परिणामिक भावे रही चर्तुं छु ६६ अनाश्रव एटले अनाश्रव कहता ! समाध्रम विभाव दशा रूप आश्रव स रहि

अध्यात्मगीता ादा काल न्यारी वर्त हु जेय डकने संयोगे फटिकने कलक लागे पिण मूल स्त्रभाने रोतातो स्फटिक ग्रह निर्मलो है, तैम ह हारे स्त्रभारे निर्लेष रहा वर्ते छ ६७ अलख पटले अलख कहता म्हारी खर्ष छद्मस्तने छरया मे न आने ६८. अशोक एटले अशोक कहता हू जन्म, गरा, मरण भय रूप शोक सताप स रहित सदा काल निरोगी, अमर रूप वर्त छ ६९ अलोक पटले अलोक कहता हु लोकिक

अलोक पटले अलोक कहता हु लोकिक मार्ग मु रहित, ब्हारो खेठ न्यारो वर्ते ठे ७० लोकालोकझायक एटठे लोकालोकनायक कहता हु हाने करीने लोकालोकना स्वरूप

एक समयमे जाणवा सामर्थवान छ ७१.

## 328

अध्यात्मगीताः शुद्ध एटले निर्मल, कर्मरप मन्त्रा रहित छु ७० चिदानड एटले चित्र पहने

शान अने नद कहता जानद पारित्र रूप तेणे करीने हु सहित वर्त छ एहतो नहारी स्रहरूप सदा काल शायतो है. ७३.

पहनी रीते, एम यहचण करती थाये लाग सदैव एटले-धाये लाम सदैव कहता पहती रीते अतरग भासन रूप बेहचण करता यर्का ते जीउने सदैन कहता सदा काल निरतरपणे

लाभ मते नीपने एटले एहबी रीते सदी फाल लाभ मते येम नीपजे ? सोके नियेने ध्यवहारे विचरे जे मुनिराय पटले निथे व्यवहारे कहता जीव अजीव रूप पर प्रव

तत्वनो स्वरूप निश्चय व्यवहार मं

जाणपणा रूप अतर्ग भतीत करवी, ते धकी लाभ मते नीपजे

त्यारे शिष्य कहे-निश्चयव्यवहार नये

अध्यात्मगीता

मीव अजीव रूप पट द्रव्य नत्र तत्वनी स्तरूम

क्मि जाणिये ? त्यारे गुरु कहे--निश्चय

नय करी सर्व जीव सत्ताये एक रूप सरीखा

सिद्धसमान शाखता है, अने व्यवहार नये

हरी जीवनी अनेक भाति देवता, नारकी,

निर्यंच, मनुष्य रूप जाणवी अने कोई

नीव शुभ परिणामे करी पुण्य रूप आश्र-बना दलीया बाधे तेहने अजीव कहिये

५ ते निश्चय नये करी छोडवा योग्य अने व्यवहार नये करी आदरवा योग्य

पत्नी कोई जीव अधुम परिणामे, करी

अप्रयासमीता 225 पाप आश्रवना दलीया बांधे तहने अजीव

हिंपे सबरनो स्वरूप कहे छै एटले व्यवहार नये करी सवरनी स्थरूप कहता. निवृत्ति मवत्ति रूप चारित्र जाणवीं, अने निश्चय नये करी सबर कहतां जे पोताना'

हिन निर्जरानी स्वरूप कहे छै परले व्यवहार नये करी निर्जराना बार भेद जाणवा अने निश्चय नये निर्जरानी स्वरूप कहता सर्व मकारे इच्छानो रोध करि पोताना स्वरूपमे समता भाव वर्त्तेवो.

कहिये ते निव्यय नये करी छाडवा योग्य अने व्यवहार नये करी छाडवा योग्य

स्बरूपमें रमण करवी

दिने मोक्षनी:कर्मावस्थानां स्वरूप कहें छ पटले ब्याइस नये करी योग तेरमे चवदवे गुणस्थानं केप्रशीनं कहिये अने निथय नये मोक्षपद कहता ने सकल कर्म स्वयक्ती लोकने अते दिराजमान एहता सिद्ध परमास्माने जाणनो एणी रीते न्यतस्यनो

स्वरप निश्रय व्यवहार करी वाग्बी

हिन पद द्रञ्चनो स्वरूप निश्चय व्यव-हार नय रूप ओल्याने छे तिहा मयम जीवनो स्वरूप आगल क्यो ते ममाणे जाणनो १ हिने घर्मान्ति-काय २ अन्मास्ति-कायनो स्वरूप कहे छे पटले निश्चय नयभक्ती धर्म अर्थम लाकन्यापो स्वन असस्यान मदेश रूप शास्त्रों छै; अने व्यवहार नयकरी देश

190 मदेश अने अगुर लघु जाणवी रे हिंवे भारास्तिमायनो स्वक्ष कहे है, पटले निश्व पथकी आकास्त्रिकायनो खच स्रोकालोकः च्यापी अनन्त बदेशी ज्ञास्त्रता छै, अने व्यव हार नय करी देश मदेश अने अगुरुलपू जाणवा ४ हिवे कालको स्वरूप कहे छै' ण्दले निवय थकी कालनो एक समय लोक्मे सदाराल शाश्वतो वर्ते छ अने व्यव-हार नय करी काल उत्पात, व्यय वय पल-दण स्त्रभावे जाणवा ५ हिवे पूद्गलनी स्तरूप कहे छे पटले निश्चय नये करा पुहल्ला अनता परमाणु छोक में मदाकाठ शाखता वर्षे ठे अने व्यवहार नये करी युद्धकना स्वथ सर्वे

अध्यात्मगीता १९१ अञ्चाश्वता जाणमा ६ एगी रीते निश्चय न्यवनारस्यकी पटद्रन्य

नत्र तत्व नो स्त्रव्य जाणतो ए परमार्थ

अने पहनी रीते निश्चय ज्याहार रूप जाण पॅणे करी साम्यज्य निश्चय दृष्टि अन्तर ने निये राखी; अने निटिंच पटिंच आदि याद्व ज्यवहार रूप किया करता यका भने निचर जे मुनिराज, पटले विचरे कहता रीते स्थाव

जे श्रुनिराज, एटले विचरे कहता रीते स्थाइ बाद रूप जाणपणे करी भव्य माणाने हेत उपदेश करता थका निचरे, जे कहना ते श्रुनिराज अने बली ते श्रुनि केहना है? भवसागरना तारण निर्भेग तेहि जहाज एटले भवसागर कहता ससार रूप सामर कहता जे समूद्र तेइने विषे भगवा भगवा अनुना १९२ अध्यारमगीताः कालचक वही गया पिण हजी जीउ फाठा

मते न पाम्या, एहमें अधारामार ने सप्तर सहने निषयो तारवानं ए मुनि केट्सा छे ? निर्भय जहाज एटलें निर्भय जहाज पहता! एहबा धुनीनी सेमा अक्ति रूप आसना वासना ने जीन करे छै, तेजीव ससार सप्तर

मे भ्रमता, निर्भय कहता भव भ्रमण रूप भय टालवाने निर्भय जहान गतै पास्पो एटडे जहान होय तो पोते तरे अने नहानने आश्रय तहने पिण तारे माटे पहचा नहानरूप श्रानि-रान ससार रूप समुद्र पोते तरे, अने भृष्य

राज ससार रूप समुद्र पोते तरे, अने भव्य माणीने पिण तारे अने वली प्रमुनि केहवा छे ?॥ ४६॥ अध्यात्यकीता

यस्त तत्त्रे रम्या ते नियंथ । तत्व

अभ्यास तिहां साधु पथ ॥ तिणे गीतार्थ चरणे रहीजे। श्रद्ध सि-

द्धांत रस तो छहोजे ॥ १७ ॥ अर्थ:-वस्त तत्व रम्या ते निग्रय

एटले वस्त तस्व कहता पोताना आत्मानो बस्त धर्म सत्तागतने विषे अनन्तो रहा है.

ते धर्मने ओल्ली, प्रतीत करी, अने रम्या

कहता तेहना प्यानने विषे प्रवर्त्या अने प्रली ए सनि केहबा छे ? सो के निग्रंथ एटले

निग्रथ कहता, चौदह अभ्यतर, नप विध

पाचनी गठो तने मुनिरान एटले चीटर

अभ्यतर फहता त्रण वेद, अने हासादिक पट, एक मिध्याच ए दश, अने को शदिक

चार कपाय, ए चाँदह महारे अभ्यन्तर, अने धन, अन्य, क्षेत्र, वयू, ऋषु, सीवन,

द्वय, चत्रपय, क्रम्य ए नव प्रकार बाह्य

परिग्रता अने आगले चौटह मकारे क्या ने भभ्यतर परिग्रह जाणना एणी रीते

यात्र अभ्यतर यहने अवीश शकारे परिप्रह रूप गर्दाने भट उहता उने तेहने माधु सुनि-

राज महिय अने वली साधु कोने कहिये?

ना के, नत्त्र अभ्याम तिहा साधु पथ पटले

तन्य बहता पोताना आत्मतन्त्रने निवजायमा

अने अभ्यासे कहता तेहना अभ्यासने जिपे

सन्त्रकाल निरतर पणे जेहनी उपयोग प्रते

वर्चे तिहा साधुपय जाणना तेणे गीतार्थ चरणे रहीने पटले तेणे कहता ते कारण माटे गीतार्थ धुनि के चरणे रहिने अन पहवा गीतार्थ धुनिना चरण कमण सेवा थकी ड्यू नीपने ? तो क युद्ध सिद्धात रस ता लहिने

अ व्यातसंगीता

ण्टले शुद्ध कहता निमेल यथार्थ नि सदेह पणे सिद्धान्त कहना ण्हवा आगम सप्तया या इन रस प्रते चास्त्रीले अने वली ए ग्रीन

केरवा उे<sup>र</sup> ॥ ४७ ॥ श्रुत अभ्यासी चोमासी वासी

श्रुत अभ्यासा चामासा बासा रुपिंवडी ठाम । शासनरागी सौ-

ळावडा ठाम । शासनरागा सा-भागी श्रावकना वहु धाम ॥ खर-तर गच्छ पाठक श्री दीपचद सप-

अध्यारमगीता साय। देवबद्ध निज हर्षे गायो

आतमराय ॥ १८ ॥

१९६

अर्थ --- एटले श्रुतअम्यासी कहना श्रुत ज्ञानने अभ्यासे करीने पयार्थ स्वसत्ता, परसत्ताना भासन रूप उपदेश करता, अने

ग्रामने निपे चौमासो वते वसीने वर प्रथनी रचना मते करी चटले लीवडी ग्राम फेहवो छै <sup>१</sup> सोक, शासनरागी सोधागी श्रावकना

षष्ट्र घाम एटछे शासनरागी कहती जिन-शासन ना रागी, जिनशासनना उद्योत मा करणहार, जिनशासननी उन्नति कहता महि

माना वधारणहार, एहवा सीमागी सिरदार,

चौमासी वासी सींप्रही डाग एटले सीवहीं

यथार्थ भारत रूप आत्मउपयोगी व्यवहार क्रिया रूप आचारना मतिपालक, जिनशासन

दीपानक, देव गुरु भक्तिकारक, एहना

अध्यात्मगीता

199

श्रावक पुण्य प्रभावक, ज्ञानचर्चारक एइवा श्रावकना वह कहता घणा, अने थाम कहतां वसवाना घर मते जाणना श्री रतस्तर-गच्छ पाठक श्रीटीपचद सुपसाय पटले म्बरतर गच्छ भन्ये चपाव्याय श्रीटीपचट

गुरुने पसाय कहता मसादे करीने, देवचढ़

निज हुपे गायो आत्मराय गटले तेहनो झिप्य वैज्ञचन्द्र हुनीये, निज कहता पोताने हुपें करीने, गायो कहता सस्तव्या, अने आत्मराय कहता आत्मराजानो यथार्थ पणे आत्मिक स्वरूप मर्ते बखाण्यो ॥ ४४ ॥

## अध्या मगोता

आरम गुण रमण करवा अभ्यासे। शुद्ध सत्तारसीने उछासे । देवचद्रे रचो अध्यातम-गीता। आतम-रमणी

मुणी सु प्रतीता ॥ १९ ॥ अर्थ -- आमगुण रमण करना अभ्यास एटले भारमगुण यहता आ माना झानादि

अनन गुणने विषे भव्य जावने रमण करवा अभ्यासे, एटले तेहने जिपे रमण करवा न्य

अभ्यासने अर्थे, अने श्रुव्ह मत्तारसीने उछासे एटले शुद्ध कहता निर्मेख अने मचारसी वहता आत्मसत्ताना रसिया, पहवा साध ग्रनिराम तेहने बढ़ासे देवबदै रची आत्मगीता एटले

108

अध्या मगीना १९९ देवचंद्र गर्णा गीतार्थ मुनीये आत्मगीता कहता आत्मगीत रूप शिक्षाय भते, रचि कहता रचना

मते करी ते रचना केडने अर्थे करी? तोके

आत्मरमणी मुनि मु मतीता एटले आत्मरमणी
फहता जेंगे पोतामा आत्मरम्ल्यने पिपे रमण
मते करचो ठे, एहता मुणी कहता जे मुनि
अने मुक्तता भर्ला तरह, मतीता कहता तेहने
स्वरूपनी प्रसीत करणाने तास्ते

श्री मारवाह मान्य श्री पार्छा नगरे श्राविता बाई लाइने सीखराने अर्थे हेतु उप-देशने माटे सबत् १८८२ ना अपाह वही २ गुरुतारे ए ग्रथमी जालाखीत रूप रचना पते कर्ता॥ ८९॥ सनेतामा जे सरदार। तेहना गुण कहना







